TO THE READER.

KINDLY use this book very carefully. If the book is disfigured or marked or written on while in your possession the book will have to be replaced by a new copy or paid for. In case the book be a volume of set which single volume is not available the price of the whole set will be realized.

SRI PRATAP COLLEGE,
SRINAGAR.
LIBRARY

Class No. 891.432
Book No. A 82 P
Accession No. 15228

पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ

[सात प्रहसन]

Parda

Collection of seven dramas

उपेन्द्रनाथ अश्क

Price 3/12/- pp 228

Neelam Prakashan Grih (Prayag)

नीलाभ प्रकाशन गृह
प्रयाग

प्रकाशक
नीलाभ प्रकाशन गृह
५ खुसरो बाग रोड
इलाहाबाद

15228

मूल्य ३॥)

1151

मुद्रक
हरप्रसाद वाजपेयी
कृष्ण प्रेस, प्रयाग।

विस्ना और मुग्धा के लिए
(जो लड़के नहीं लड़कियां हैं)
सस्नेह

इन नाटकों को खेलने से पहले लेखक की आज्ञा लेना आवश्यक है। कोई एमेचर क्लब, संस्था, कालेज या स्कूल बिना लेखक की आज्ञा लिये और उसे रायल्टी दिये इनमें से कोई नाटक न खेले।

आल इंडिया रेडियो के पास इनमें से किसी नाटक का अधिकार नहीं। प्रत्येक नाटक के लिए लेखक को रायल्टी देना अनिवार्य्य है।

बिना लेखक को रायल्टी दिये और प्रकाशक की लिखित आज्ञा लिये इनमें से कोई नाटक किसी सङ्कलन में न दिया जाय। रायल्टी पेशगी देना और आज्ञा पेशगी लेना ज़रूरी है।

सूची

अश्क के प्रहसन	६
पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ	१७
कइसा साब कइसी आया	४५
बतसिया	६५
सयाना मालिक	१२७
तौलिये	१४३
कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन	१७५
मस्केबाज़ों का स्वर्ग	१८६

आभार

मेरे नाटकों का यह पहला संग्रह है, जिसमें केवल हास्य रस के नाटक संकलित हैं। इसे प्रेस में देते समय अनायास ही मुझे उर्दू के विस्मृत-प्राय नाटककार स्व० मुहम्मद उम्र (नूर इलाही) की याद हो आई है। उनके एकांकी संग्रह ने सर्व-प्रथम मेरे मन में प्रहसन लिखने की इच्छा जगाई थी। मुसम्मद उम्र (नूर इलाही) उतने मौलिक नहीं थे। अंग्रेज़ी के कुछ अच्छे नाटकों को उन्होंने उर्दू का लिबास पहनाया था। उनके रूपांतर, जैसा कि मैं अब समझता हूँ, खासे अपरिपक्व थे, पर १९३०, ३१ में, जब उर्दू में कोई एकांकी का नाम भी न जानता था, उनका कुछ मनोरंजक प्रहसन प्रस्तुत करना बड़ा स्तुत्य प्रयास था। उर्दू पाठकों ने उनकी क़द्र नहीं की। उनका फिर कोई संग्रह नहीं निकला। पर मैं आज भी उनका आभारी हूँ। प्रस्तुत संग्रह के नाटक 'बतसिया' की थीम (theme) के लिए मैं उन्हीं का कृतज्ञ हूं (उन्होंने यह कहाँ से ली, यह कह सकना मेरे लिए असम्भव है।) वर्षों से मैं इसे लिखना चाहता था, पर कदाचित् मैं यह नाटक कभी न लिख पाता यदि मैं इलाहाबाद न आया होता और मुझे उन लोगों में रहने का अवसर न मिलता जिनमें से इस नाटक के पात्र उठाये गये हैं।

संग्रह के प्रथम नाटक के लिए मैं रानीखेत से उन वैद्य महोदय का आभारी हूँ, जिनकी एक नक़ल को देखकर मुझे इस नाटक को लिखने का विचार आया और मैंने उनके अनुभव को अपने व्यक्तिगत अनुभवों से मिलाकर उक्त एकांकी का सृजन किया।

श्री जगदीश चन्द्र माथुर ने अपनी अत्यधिक व्यस्त घड़ियों में, मेरे अनुरोध पर, इन प्रहसनों का मूल्यांकन किया है। उनकी इस सहृदयता के लिए निरा आभार-प्रदर्शन बड़ा छोटा पड़ जाता है। जो कुछ उन्होंने

लिखा है, वह साधारण आलोचक के बस की बात नहीं। उसे कोई उन जैसा समर्थ नाटककार ही लिख सकता है जो उन तथ्यों से भलीभाँति परिचित हो जो नाटक को 'नाटक' बनाते हैं और जिसे साथ ही सफल आलोचना की भी सिद्धि प्राप्त हो। इसीलिए मैंने उनसे अनुरोध भी किया था। मैं आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे अनुरोध की रक्षा की।

मुख पृष्ठ का चित्र श्री रामावतार वर्मा ने बनाया है। मेरी पुस्तकों के अधिकांश चित्र श्री जगदीश गुप्त ने बनाये हैं। चित्रकार के साथ साथ एक भावुक समवेदन शील कवि होने के नाते गुप्त जी जिस सरलता और अधिकार से कविताओं अथवा कहानियों के आधार भूत विचारों को पकड़ लेते हैं, वह दूसरे चित्रकारों के बस की बात नहीं। रामावतार जी अभी युवक हैं, उन्होंने जिस सरलता से एक कठिन विषय को रेखाओं में बांधा है, वह उनके उज्ज्वल भविष्य का परिचायक है।

और सब से अन्त में मैं उस बीमारी का आभारी हूँ जिसने गत पांच वर्षों में मुझे बार बार बिस्तर का बंदी बनाया, और जिसकी पीड़ा और उकताहट से भाग कर मैंने हास्य रस के के इन नाटकों का सृजन किया। इनसे मेरा मनोरञ्जन तो हुआ ही, पर आशा है दूसरों का भी कम मनोरञ्जन न होगा।

उपेन्द्रनाथ अश्क

८-१२-५१



अश्क जी के प्रहसन

[श्री जगदीशचंद्र माथुर]

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क को नाटककार का लिबास पहनने की आवश्यकता नहीं होती। उनकी स्वाभाविक सूझ और अभिव्यक्ति नाटकीय गति से पगी है। मैंने पिछले दिनों हिंदी में अनेक ऐसे नाटक देखे हैं, जिनमें लेखकों का स्वाभाविक व्यक्तित्व या जिनके संस्कार कवि या कहानीकार के हैं। किसी उमंग या रोचक कथानक या क्रांतिकारी विचार द्वारा वे प्रभावित हुए। इस इकाई की एक निजी गति (rhythm) है जो अपने अनुरूप अभिव्यक्ति की माँग करती है। उसी रूप में उसकी अन्तर्ज्योति पूर्णतः भासमान् हो सकती है। किन्तु ऐसे लेखक उस पर नाटकीय रूप का आरोपण करते हैं, नतीजा यह होता है कि उमंग या कथानक या विचार की निजी सत्ता विशृंखलित हो जाती है, रस भंग हो जाता है और रहा नाटकीय रूप तो वह किसी फूहड़ दर्ज़ी द्वारा सिये गये सूट की भाँति कथा-वस्तु की देह पर वेडौल झूलता रहता है।

अश्क की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह उसी इकाई को चुनते हैं, जिसकी स्वाभाविक और सम्पूर्ण अभिव्यंजना नाटकीय रूप में हो सकती है, अन्यथा नहीं—वह इकाई चाहे एक असाधारण परिस्थिति हो, चाहे कोई अनोखा चरित्र, चाहे कोई भूली भटकी याद ! क्यों अश्क ऐसी ही इकाई को चुन पाते हैं ? इसका कोई एक उत्तर नहीं ! शायद उनकी जन्मजात सूझ ही ऐसी अद्भुत है कि आधुनिक 'राडर' की भाँति आप ही आप नाटकीय संभावनाओं से सम्पन्न परिस्थितियाँ उससे टकरा जाती हैं, शायद छात्र-जीवन में उन्होंने जो नाटक खेले, उनके तजुर्बे उनके व्यक्तित्व में सन्निहित हो गये; शायद वे खोज मेहनत और मनन के बाद अनेक अनुभवों में से परख कर, जो उनको बिल्कुल नपा-तुला जंचता है, उसे ही चुनते हैं, यह नहीं कि जो चमकती चीज़ सामने आई, उसी पर दिल फेंक बैठें और बेदर्दी के साथ उसे नाटक के सांचे में ढाल दें।

असल बात यह है कि नाट्यकला जौहरी की बारीकी और शिल्पी के संयम का संयोग चाहती है। ऊपर मैंने सूझ की बात कही। इस संग्रह में आपको उनकी पैनी और अचूक सूझ के अनेक उदाहरण मिलेंगे। मुख्यतः इस संग्रह में परिस्थितियों का अनूठा चुनाव है, हालांकि 'कइसा साब कइसी आया' में परिस्थिति का उभार नहीं, बल्कि चरित्र का पर्यवेक्षण है। इन सभी एकांकियों में परिस्थिति (situation) चरित्र के अनुकूल हो नहीं जान पड़ती, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व का अनिवार्य प्रस्फुटन प्रतीत होती है। जीवन की सतत प्रवाहशील धारा का क्षणिक ठहराव ही मानो एकांकी में मूर्तिमान होकर उतरता है। 'बतसिया' में इस ठहराव ने भंवर का रूप लिया है। शेष नाटकों में घटनाचक्र की गुत्थियाँ नहीं है; जीवन की शोभायात्रा (जलूस) के कुछ दृश्य (चौकियाँ) सामने आते और तनिक ठहर कर फिर गतिशील हो जाते हैं। लेकिन इस अनायास प्रदर्शन के पीछे कितनी तैयारियाँ, कितनी तराश, कितनी नाप-जोख है, इसका अंदाज मननशील पाठक ही लगा सकते हैं। आश्चर्य तो यह है कि एक ओर तो अश्क किसी भावना या परिस्थिति विशेष के बहाव में सुधबुध नहीं खो देते और दूसरी ओर आकार और रूप की सम्पूर्णता के सम्मोहन के वशीभूत होकर वे ताजमहल की तरह सांगोपांग, संतुलित इमारत भी खड़ी नहीं करते; कुछ न कुछ अधूरापन, एक हूक सी, जिज्ञासा सी छोड़ देते हैं। नाटककार को ऐसा करने में अप्रत्याशित संयम की आवश्यकता होती है। प्राय: संवाद में स्वाभाविकता के नाम पर जो मितव्ययिता नाटककार को बर्तनी पड़ती है, उसके बदले में परिस्थितियों और घटनाओं के वैचित्र्यपूर्ण और संतुलित गुम्फन में उसे सम्पन्न अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। लेकिन अश्क एक कृत्रिमता तज कर दूसरी नहीं अपनाते। भले ही उन्हें अपनी शिल्पी आत्मा के आग्रह को ठुकराना पड़े, भले की वाह्य दृष्टि से उनके कथानक का 'डिजाइन' खंडित सा दीखे और मनोवेग की गति अवरुद्ध सी जान पड़े। एक छोटा मोटा नाटककार मैं अपने को भी गिनता हूँ, हालाकि अश्क के सिलसिले में

अपना जिक्र करना चरमकोटि की धृष्टता है। मेरा अनुभव है कि रूप-साम्य 'सिमेट्री' के आकर्षण से मैं कभी नहीं बच सका। मुझे तो वह कुछ अच्छा भी लगता है, यद्यपि जानता हूँ कि वह कृत्रिम है। अश्क की स्थापत्य शैली उस रूमानी परिपाटी के असर में नहीं है। वह कहीं अधिक आधुनिक, कहीं अधिक प्रत्यक्षानुकूल है। सच्चे मानी में अश्क एक प्रौढ़ यथार्थवादी कलाकार हैं और इसीलिए उनके ये प्रहसन इतने सूक्ष्म, संयत और मार्मिक हैं।

यथार्थ पर अश्क का इतना अनुपम अधिकार है कि उन्हें अतिरंजना शैली (Caricature) का सहारा लेने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। उनके पात्र कार्टून नहीं, उनके मज़ाक स्थूल नहीं, उनकी परिस्थितियाँ सरकस की कलाबाज़ियाँ नहीं। उनकी पैनी दृष्टि दैनिक जीवन में ही अट्टहास की सामग्री-खोज निकालती है और उनकी लेखनी उन झाँकियों को एक ऐसे पट पर हूबहू उतार देती है, जिस पर मुस्कान की महीन सिलवटें खेलती रहती हैं—मानों शरद पूनो का हँसता चाँद ललित और नन्हीं लहरियों के पर्दे पर प्रतिबिम्बित होता हो। थोड़ी सी शिकन, थोड़ा सा बेडोलपन, उतना ही जितने से चाँद की हँसी और निखर आये! दूसरे शब्दों में अश्क की विनोद-भावना वार्तालाप के विद्रूप या पात्रों के भोंडे व्यवहार के रूप में प्रकट नहीं होती, बल्कि चरित्र और कार्य सम्पादन की पृष्ठभूमि के रूप में! अश्क के नाटकों में व्यंग्य की प्रतीति एक महीन वातावरण के रूप में होती है, जिसके साधन हैं हल्की सी फबतियाँ, सांकेतिक कार्य-सम्पादन (action) और पात्रों की अनजान कमजोरियों का थोड़ा बहुत उभार! 'बतसिया' में 'जान' जब 'लूकस' की बताई हुई तरकीब पर खुश होते होते भविष्य का स्वप्न देखने लगता है तो लूकस का 'मैं नहीं हम' कह कर उसे बार बार टोकना एक अत्यन्त चुटीला संकेत है और अश्क के प्रहसनों में ऐसे संकेतों की कमी नहीं!

वस्तुतः इन नाटकों के पात्र सजीव इसलिए हैं कि उनमें से कोई भी न बिल्कुल सनकी है न समझदार, न एकदम बेवकूफ न एक दम

अक्लमंद, न परले सिरे का जिद्दी और न हद दर्जे का क्षमाशील। मानव चरित्र इसी धूपछाँह का खेल है—यह सभी देखते हैं। लेकिन जब लेखनी उठती है तो जी चाहता है एक तरफ बिल्कुल स्याह कर दें, दूसरी तरफ बिल्कुल सफेद। शुभ्र को चरम-शुभ्र और कालिमा को घोर-असित देखने की चाह सृजनशील मानस की एक प्रधान कमजोरी है। लेकिन उत्कृष्ट कलाकार जीवन पर एकांगी-दृष्टि नहीं डालता। प्रहसनकार का तो उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि हमारे और आप के व्यक्तित्व में जो सनक दुबकी पड़ी है उसे खोज निकाले और खुली हवा और धूप में खोल कर रख दे। 'जान' और 'विवियन,' 'वसन्त' और 'मधु' 'आया' और 'साहब', 'दयाराम' और 'चुन्नीलाल' इन सभी पात्रों की सनक या कमजोरियाँ मेरे और आप के व्यक्तित्व में लिपटी पड़ी हैं। यों कोई हमें सनकी कहे तो हम आपत्ति करेंगे क्योंकि हर एक व्यक्ति अपने को 'नार्मल' समझता है—विशेषतः दूसरों का जिक्र करते समय। अश्क जैसा नाटककार हमारे इस भ्रम को काट फेंकता है। वह दिखाता है कि कैसे प्रत्येक मानव-चरित्र आजीवन सनक से समझदारी की ओर प्रगति का प्रयास है—human personality is a constant endeavour to progress towards normalcy—लेकिन दूसरों के आगे दर्पण वही रख सकता है जो अपने चेहरे की खामियों का सामना कर सके। अश्क का उपहास अपने से प्रारम्भ होता है। कौन जाने 'तौलिये' का वसंत या 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' का दयाराम या 'कइसा साब कइसी आया' का साहब अश्क जी की किसी न किसी निजी सनक का ही सहारा लेकर मूर्तिमान हो उठे हों।

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी नाटककार गाल्सवर्दी ने एक बार अपने आप ही प्रश्न किया—उन्नति शील नाट्यकला की बुनियाद क्या है? उत्तर भी गाल्सवर्दी ने स्वयं इन शब्दों में दिया कि उन्नतिशील नाटक के चिह्न हैं सचाई और खरापन; लेखक की वफ़ादारी—अपनी अनुभूति के प्रति,

अपने पर्यवेक्षण के प्रति और अपने व्यक्तित्व के प्रति ! जिसकी कल्पना अनुभवगत और दृष्टिगत जीवन को ही ग्रहण करती है और जो इस भाँति ग्रहीत वस्तु-विशेष को रंगमंच पर इस तरह प्रस्तुत कर पाता है कि दर्शक-गण भी उसी मौलिक अनुभूति से अभिभूत हो जायँ, वही उच्च कोटि का नाटककार है।—हिन्दी में बहुत कम नाटककार इस परिभाषा के दायरे में आ पाते हैं। अश्क उन्हीं विरलों में से एक हैं, और कुछ मानी में तो अनूठे हैं।

अश्क की कला पर बहुत कुछ लिखने की गुंजायश है। खास तौर पर उनके सम्वादों की पात्रानुकूल और विविध-गुण-सम्पन्न भाषा पर। जान पड़ता है उन्हें किसी भी बोली (dialect) के विशिष्ट मुहावरों और 'तर्ज़' पर हावी होने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती। इस संग्रह में बोलियों का अजायबघर है, लेकिन मुर्दा नहीं। भाषा पर इस विलक्षण अधिकार ने अश्क जी की प्रहसन-शैली को चार चाँद लगा दिये हैं।

इन सब खूबियों पर प्रकाश डालने का मौका फिर कभी आयेगा। मेरे जैसे अकिंचन के लिए अश्क जैसे सिद्धहस्त कलाकार की कृतियों के बारे में इतना भी लिखना छोटा मुंह बड़ी बात है। इसके अतिरिक्त अश्क की प्रतिभा के स्रोत अभी प्रवहमान और ताज़े हैं। इसलिए अभी इससे लम्बी समालोचना का मुहूर्त नहीं आया है। अभी तो इतनी अभ्यर्थना ही काफी है।

जगदीशचंद्र माथुर

पटना

ग़म के लिए पड़ी है अभी एक उम्र 'अश्क'
लेकिन ये चन्द लम्हे तो आ, हँस कर गुज़ार लें !

पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ

[नाटक का नाटक]

पात्र

भगवन्त : क्लब का व्यवस्थापक। तानाशाही तबीयत का तेज़, रोबीला व्यक्ति

दयाराम : निर्देशक—धीर, गम्भीर, कठिनाई के समय भी न घबराने वाला लेकिन बेपरवाह

श्याम : क्लब का ऐसा सदस्य जिसे कोई पार्ट नहीं मिला, पर जो अभी तक डाइरेक्टर से चिपका है कि शायद कोई चांस निकल आये—स्वर में मिसकीनी और प्रत्येक सेवा के लिए तत्परता है।

हरि
धनपति
मृत-पुत्र
मान सिंह } अभिनेता—क्लब के साधारण सदस्य

चुन्नीलाल : अभिनय के शौकीन एक बहुत मोटे युवा सेठ

पीड़ितजी : कवि

रामगुलाम : चपड़ासी

रामकिशन : चपड़ासी का रिश्तेदार

महारानी
दासी } दोनों भूमिकाओं में काम करने वाले सदस्य—अथवा सदस्याएँ

प्राम्पटर, दर्शक आदि

पहला दृश्य

[पर्दा उठने पर जो रंगमंच दिखायी देता है वह बड़ी अव्यवस्थित दशा में है। सामने कुछ पर्दे, विंग, तथा नाटक सम्बन्धी दूसरा सामान पड़ा है। एक ओर कौच का सेट और कुर्सियां रखी हैं। दूसरी ओर पुराने ज़माने का सिंहासन और आसनादि गड़बड़ पड़े हैं। एक कोने में बड़े-बड़े कमान, तूनीर और दो गदाएं पड़ी हैं। खाली जगह में एक मेज़ पड़ी है, जिसकी कुर्सी उसके उलटी ओर को है। भगवन्त मेज़ की ओर को पीठ किये दर्शकों के सामने बैठा है। उसके हाथ में एक चिट्ठी है, जिसे वह पढ़ रहा है। उसके दायीं ओर एक व्यक्ति अदब से ज़रा सा झुका खड़ा है। पर्दा धीरे-धीरे उठता है।]

भगवन्त : (क्षण भर पढ़कर क्रोध से चिट्ठी वापस देते हुए) नहीं, नहीं, नहीं, मैं यह नहीं कर सकता। फ़्री पासों के सम्बन्ध में अपना मत मैं एग्ज़िकिटिव की मीटिंग में दे चुका हूँ। पहले दिन फ़्री पास देने के मैं एकदम विरुद्ध हूँ। तुम यह चिट्ठी दयाराम जी को दे दो। वे चाहें तो फ़्री शो रख दें। मेरे लिए यह सम्भव नहीं।

[व्यक्ति मुंह लटकाये हुए वापस जाने को तैयार होता है, श्याम हाथ में एक रुक्का लिये घबराया हुआ प्रवेश करता है।]

भगवन्त : क्यों, क्यों बात क्या है श्याम? ऐसे घबराये हुए क्यों हो।

श्याम : यह देखिए भगवन्त जी शाम को कंसर्ट होने वाली है, और बलबीर ने यह चिट्ठी भेज दी है।

(रुक्का भगवन्त को देता है)

भगवन्त : क्या लिखा है (लेकर चिट्ठी पढ़ता है) मुझे अचानक इन्फ्लूएंज़ा ने आ घेरा है, १०३ टेम्प्रेचर है और सख्त सिर-दर्द। एस्प्रो ली है पर कुछ बना नहीं। कल भीगते पानी में जो रिहर्सल को आया और गीले कपड़ों में रिहर्सल करता रहा तो लगता है कि सरदी खा गया। कोशिश तो बड़ी करूँगा पर शायद ही रात के नाटक में भाग ले पाऊँ। (चिट्ठी खत्म करके मुंह चिढ़ा कर) शायद ही नाटक में भाग ले पाऊँ। अरे तुम्हारे इस शायद से यहाँ तो बंटाढार हो जायगा। (चिट्ठी को हथेली में तोड़-मरोड़ कर क्रोध से धरती पर फेंक देता है।) रात को नाटक है और मुख्य कलाकार को इन्फ्लूएँज़ा ने आ घेरा है। शिकार सामने पड़ा तो कुतिया को हाजत हो आयी। कम्बख्त इन एमेचर क्लबों की यही तो मुसीबत है। पहले तो अच्छे अभिनेता ही न मिलेंगे। फिर किसी तरह अभिनेता जुटे तो सभी 'हीरो' बनना चाहेंगे। इस बाधा से पार हुए, पार्ट बंटे तो रिहर्सल टाइम से न होंगे। रिहर्सल हो जायंगे और कहीं रोते झींकते नाटक खेलने की नौबत आयगी तो सभी पास चाहेंगे—अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए ही नहीं, उनके साले बहनोइयों के लिए भी ! न देंगे तो किसी को एन्फ्लूएंज़ा आ दबायेगा, किसी को ऐन मौके पर टाइफ़ायड; किसी के पैर को मोच आ जायगी, किसी की टांग टूट जायगी किसी की मां बीमार हो जायगी किसी का बाप......

श्याम : वह तो है जी, पर एमेचर क्लबों को कोसने से तो रात कंसर्ट न हो जायगी। यह कहिए कि अब किया

क्या जाय? यदि पासों ही की बात है तो मैं हो आऊँ उसके वहाँ।

भगवन्त : बीस पास माँगते हैं। बीस उनको दोगे तो शेष को क्या दोगे। जो लड़के स्त्रियों का पार्ट कर रहे हैं वे तो चालीस-चालीस माँगेंगे। और फिर क्लब के सदस्य और सरपस्त!...होगा यह कि पासों पर इतने लोग आ जायंगे कि टिकट लेकर आने वालों के लिए हाल में जगह न रहेगी।

श्याम : तो भाई साहब यह बात मैं जाकर उसको समझा दूँगा। बलबीर के बिना कंसर्ट चौपट हो जायगी।

भगवन्त : चौपट कैसे हो जायगी, बलबीर का पाट हरि कर लेगा। पहले उसे ही युधिष्ठिर बना रहे थे। उसने पार्ट याद भी कर रखा है।

श्याम : और हरि का...

भगवन्त : हरि का दीवान कर लेगा।

श्याम : लेकिन इस परिवर्तन की ज़रूरत क्या है भाई साहब। मैं एक बार बलबीर को जाकर...

(घबराया हुआ हरि प्रवेश करता है।)

हरि : (आते हुए घबराये स्वर में) बलबीर को तो इन्फ्लूएंज़ा हो गया है। मैं अभी उसी के यहाँ से आ रहा हूँ। उसे तो १०३ टेम्प्रेचर है।

भगवन्त : पासों का इन्फ्लूएंज़ा तो नहीं।

हरि : नहीं, नहीं भाई, वह बुरी तरह बीमार पड़ा है। मैं गया तो डाक्टर बैठा था। पासों के सम्बन्ध में जो बात आपने कही थी, मैंने उसे समझा दी थी और वह पाँच

पास लेने को सहमत हो गया था, पर रात जब वह रिहर्सल के बाद यहाँ से गया तब कुछ सरदी की शिकायत कर रहा था। सुबह उठा तो उसका अंग-अंग टूट रहा था। टेम्प्रेचर देखा तो १०३।

श्याम : (हताश भाव से दोनों हाथ फैलाते हुए) अब !

भगवन्त : (सोचते हुए) बलबीर का पार्ट हरि करेगा...और हरि का दीवान और शेष के लिए...शेष के लिए...दयाराम जी के पूछो। यह आग उन्हीं की तो लगायी है।

श्याम : लीजिए वे लोग तो इधर आ रहे हैं।

[दयाराम चंद अभिनेताओं के साथ प्रवेश करते हैं।]

भगवन्त : दयाराम जी अब आप ही इस समस्या का कोई हल निकालिए।

दयाराम : क्या हुआ भाई ?

[आकर भगवन्त के समाने कौच की बांह पर बैठ जाते हैं। उनके साथी कुछ कुर्सियों पर बैठते हैं, कुछ कौच और आसनों पर। सेठ चुन्नी लाल जाकर सिंहासन पर बैठ जाते हैं। और हाथ बढ़ा कर कोने से गदा उठा, उसे कन्धे पर रख लेते हैं।]

भगवन्त :	तीनों एक	हुआ क्या, कंसर्ट का बंटाढार होगया।
श्याम :	दूसरे के बाद	बलबीर को इन्फ्लूएंजा हो गया है।
हरि :	जल्दी-जल्दी	१०३ ज्वर है।

भगवन्त : जहं-जहं पैर पड़ें सन्तन के तहं-तहं बंटाढार। मैंने पहले ही कहा था कि इन बलवीर महाशय को कष्ट न दो।

ये जिस क्लब में गये हैं उसे ले डूबे हैं। तुम कहते थे बड़ा अच्छा अभिनेता है। लो अब कराओ अभिनय !

दयाराम : अरे भाई बीमारी-उमारी किसी के बस की है, तुम-हम ही बीमार हो सकते हैं।

भगवन्त : तो अब कंसर्ट का क्या किया जाय ?

दयाराम : (जिन्हों ने पहले कई कंसर्ट देखे हैं और इन बाधाओं के अभ्यस्त हैं) देखो अभी सब किये देते हैं। बलबीर कर रहा था धर्मपुत्र का पार्ट, सो वह हरि कर लेगा। क्यों हरि तुम्हें तो याद है ?

हरि : आप कहेंगे तो कर लूंगा। यों मैंने अपना पार्ट अच्छी तरह याद कर रखा है और अब तो वह मुझे पसन्द भी है।

दयाराम : तो भाई तुम अपने को अर्जुन के बदले धर्मपुत्र युधिष्ठिर समझो।

हरि : अर्जुन का पार्ट कौन करेगा ?

दयाराम : अर्जुन का पार्ट कर लेगा दीवान। वह चाहता भी था अर्जुन का पार्ट करना।

धनपति : (जो कौच पर बड़े इतमीनान से बैठा है, सहसा उठ कर) मैं कहना भूल गया, दीवान के गाँव से तार आया है उसकी दादी सख्त बीमार है।

भगवन्त : शुक्र है मर नहीं गयी।

धनपति : (अपनी बात पूरी करते हुए) वह आज रात की गाड़ी गाँव जा रहा है।

श्याम : लीजिए अब धर्मपुत्र का ही नहीं, भीम का भी प्रबन्ध कीजिए।

भगवन्त : (हँसकर) इब्तदाए इश्क है रोता है क्या ?
आगे-आगे देखिए होता है क्या ?
अभी तो सुबह है, शाम होते-होते देखिए और किस-किस का प्रबन्ध करना होता है। इसीलिए मैंने कहा था कि या ड्रेस रिहर्सल में क्लब के सदस्यों, सरपरस्तों, अभिनेताओं और उनके सगे-सम्बन्धियों को बुला लो या एक दिन उनके लिए नियत कर दो।

दयाराम : तुम योंही झींखने लगते हो भगवन्त ! ड्रेस रिहर्सल आखिर है तो रिहर्सल ही। असली नाटक जैसी दक्षता तो उसमें आ नहीं सकती। कहीं यदि कोई पार्ट अच्छा न हुआ तो सारे शहर में ढिंढोरा पिट जायगा। और देखे बिना ही लोग उसके विपक्ष में हो जायंगे। एक दिन इन लोगों के लिए रखने के विरुद्ध मैं न था। मैं सिर्फ यह कहता था कि वह दिन पहला दिन नहीं हो सकता।

श्याम : तो अब दीवान की जगह किसको देंगे और हरि की किसको ? आप अर्जुन ही की सोच रहे थे यहाँ भीम भी ग़ायब है।

दयाराम : अर्जुन के लिए सोच करना है। भीम के लिए तो...भीम के लिए तो...(सहसा उनकी दृष्टि सिंहासन पर बैठे हुए गदाधारी सेठ चुन्नीलाल पर पड़ती है और वे प्रसन्न हो उठते हैं।) हमारे सेठ चुन्नीलाल हैं। चुन्नीलाल तो बने बनाये भीम हैं। दीवान तो भीम के लायक था भी नहीं। मैं तो पहले ही सेठ जी से कहता था कि आप ही भीम बनिए। कहां दीवान और कहां हमारे सेठ जी। एक तिनका और एक पहाड़। (हँसते हैं।) क्यों सेठ जी !

चुन्नीलाल : (प्रसन्न पर घिघियाते हुए से) नहीं भाई, अपने राम ने पहले कभी स्टेज पर पार्ट नहीं किया। हम भीम के रूप में घबरा जायंगे। हमें वह अपना छोटा सा चोबदार का पार्ट पसन्द है। हमसे वह दंगल-वंगल न होगा।

हरि : (जाकर उनकी पीठ थपथपाते हुए) अरे नहीं यार, घबराता क्यों है ? तू तो बना बनाया भीम है। बस जरा सम्वाद रट ले और फिर भूल भी गया तो 'प्राम्पटर' तो रहेगा ही।

चुन्नीलाल : अरे नहीं भाई, तू ठहरा मंझा हुआ ऐक्टर। मैं कभी स्टेज पर आया ही नहीं। मुझे तो वही अपना चोबदार का पार्ट पसन्द है, जिसमें सिर्फ एक ही दो शब्द कहने हैं। 'जी महाराज' और 'जो आदेश' और एक ही वाक्य है, 'महाराज, मालती को महारानी ने भूगृह में बन्द करने का आदेश दे रखा है।' यह मुझे अच्छी तरह याद है। भीम का पार्ट मेरे बस का नहीं।

दयाराम : अरे नहीं सेठ जी आप घबराते क्यों हैं ? पूरा दिन पड़ा हुआ है। रट डालिए पार्ट और दुर्योधन को लेकर चार-छः रिहर्सल कर डालिए। घबराइए नहीं। ऐसा ट्रेन कर दूँगा आपको कि सब वाह-वाह कह उठें।

हरि : अरे भाई नाचने लगी तो घूंघट कैसा ? जहां सौ वहां सवा सौ, ओखली में सिर दिया तो मूसलों का कौन डर ? जब स्टेज पर आ गये तो एक वाक्य हुआ तो क्या और सौ हुए तो क्या।

दयाराम : और फिर सेठ जी 'प्राम्पटर' तो वहां होगा ही। भूल गये तो उसी वाक्य को ज़रा सा दोहराते हुए, नेपथ्य के पास आये। तनिक खांसने का अभिनय किया,

'प्राम्पटर' से सम्वाद सुना और बढ़ कर कह दिया। इसमें घबराने की कौन बात है ?

चुन्नीलाल : अच्छा, यदि आप लोग कहते हैं तो ले लेता हूं। मैं कभी स्टेज पर आया नहीं, इसलिए डरता हूँ। आप 'प्राम्पट' कर देंगे तो कर लूंगा।

हरि : वाह ! यह बात है मेरे शेर की !

भगवन्त : खैर भीम का तो हो गया, धर्मपुत्र का पार्ट हरि कर लेगा। हरि की जगह अर्जुन का पार्ट कौन करेगा ?

श्याम : अ ..अ...यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं ......

भगवन्त : (खुशी से) मतु करोगे ?

श्याम : (विनम्र अभिमान से हँसते हुए) मैं तो अर्जुन का पार्ट करना ही चाहता था। पार साल 'अभिमन्यु-वध' में मैंने ही अर्जुन का पार्ट किया था। आप लोगों ने मुझे इस योग्य नहीं समझा तो मैंने अपने आप को दूसरी सेवा में लगा दिया।

भगवन्त : तुमने हमसे तो कहा नहीं, किसने की थी आपत्ति तुम्हारे अर्जुन बनने पर...(फिर यह याद आने पर कि उन्होंने स्वयं की थी) खैर हटाओ। तुम अर्जुन का पार्ट याद कर लो।

श्याम : मुझे अच्छी तरह याद है। अर्जुन का ही नहीं मुझे नाटक के सारे के सारे पार्ट याद हैं।

दयाराम : चलिए यह सब तय हो गया। अब आप चलकर रिहर्सल कर लीजिए।

भगवन्त : लेकिन चोबदार का पार्ट कौन करेगा। सेठ जी तो भीम

बन गये। वह तो एकांकी ही चोबदार से आरम्भ होता है।

दयाराम : अरे चोबदार के पार्ट में क्या रखा है। कोई भी कर लेगा।

भगवन्त : नहीं भाई, इस असमञ्जस से काम न चलेगा। किसी आदमी को उस पार्ट के लिए निश्चित रूप से नियत करना होगा। पर्दा उठते ही तो एकांकी में पार्ट है उसका।

दयाराम : अरे हटाओ यार दे देंगे किसी को। और कोई न मिला तो क्लब के चपरासी को दे देंगे। चोबदारी करते-करते उसकी उमर घिस गयी है। वह न हुआ तो माली को दे देंगे। उस पार्ट में रखा ही क्या है।

भगवन्त : नहीं भाई इस 'किसी को भी देने' का मैं कायल नहीं।

दयाराम : अच्छा बुलाओ चपरासी को। (आवाज़ देते हैं) रामगुलाम ! रामगुलाम !

(कोई आवाज़ नहीं आती।)

दयाराम : अरे श्याम, जरा देना आवाज़ भाई।

(बायीं ओर नेपथ्य के पास जाकर आवाज देता है)

रामगुलाम : (नेपथ्य में आता हुआ) जी...जी...!

श्याम : चलो तुम्हें दयाराम जी बुलाते हैं।

रामगुलाम : (प्रवेश करते हुए) जी बाबू जी।

दयाराम : देखो भाई रामगुलाम, हमारा एक ऐक्टर कम हो गया है। तुम जरा उसकी जगह दो चार शब्द कह दो तो हमारी चिन्ता मिट जाय।

रामगुलाम : हम अबहीं कहि देत हैं बाबू जी, आप तनिक हमका समुझा के कहि तो देव कि के से काव कहवइ ।

दयाराम : अरे किसी से क्या कहना है । रात को यहां कंसर्ट होने वाली है न ?

रामगुलाम : जी बाबू जी समुझि गये । सभा होए ना ।

दयाराम : हाँ, हाँ उसी में थियेटर होगा । तू उसमें काम करेगा ?

रामगुलाम : हाँ, हाँ बाबू जी, आप जो हुकुम देहैं ओकर राजी खुशी से करि सकित हैं । आप के नौकर ठहरे सरकार ।

दयाराम : हमारे नाटक में काम करने वाला एक आदमी बीमार हो गया है । उसकी जगह तुम ले लो ।

रामगुलाम : का करे होइहैं सरकार ?

दयाराम : यह जीवन राम जी नाटक में राजा मानसिंह बने होंगे । तुम्हें आवाज देंगे...'चोबदार......चोबदार !' तुम तत्काल आकर बोलना—'जी महाराज !' महाराज कहेंगे--'बताओ मालती कहाँ है ?' तुम कहना—'महाराज मालती को महारानी ने भूगृह में बन्द करने का आदेश दे दिया है ।' महाराज बोलेंगे—'जाओ, कोतवाल से कहो, उसे हमारे सामने पेश करे । तुम कहना—'जो आदेश" । बस !

रामगुलाम : का ? ई हमसे न हो सके सरकार ।

दयाराम : अरे इसमें क्या है । क्यों हो न सकेगा । चार आने पान तमाखू के लिए दे देंगे

रामगुलाम : वइसे तो हम आप के नौकर हैं सरकार, लेकिन कबहीं नाटक-फाटक नाहिन कीन है सरकार । ए से माफी दीन जाय बाबू जी । ई भड़इती हम से न हो सके बाबू जी ।

दयाराम : अरे यह भड़ैती है। हम सभी पार्ट कर रहे हैं।

भगवन्त : अरे इससे न होगा। तुम भी दयाराम, स्यार से सिंह मरवा रहे हो यार। यह काम किसी पढ़े-लिखे से ही होगा।

दयाराम : क्यों भाई श्याम किसी और को तजवीज़ते हो।

श्याम : किसी राजे वज़ीर का पार्ट होता तो चार आदमी तैयार हो जाते। चोबदार का पार्ट कौन करे? पहिले ही कोई तैयार न होता था। वह तो हमारे सेठ जी की उदारता है कि इतने बड़े धनाधीश होते हुए भी उन्होंने एक चोबदार का पार्ट ले लिया।

चुन्नीलाल : (ही ..ही कर हँसते हुए) इसमें उदारता की क्या बात है? यह तो 'स्पोर्ट्समैनशिप' है।

भगवन्त : (कटुता से) पर यह 'स्पोर्ट्समैनशिप' हमारे यहाँ किसी में नहीं। (जोर से सब को सम्बोधित करते हुए) क्यों भाई है तुममें से कोई जो चोबदार का पार्ट करे!

धनपति : गनपति चोबदार का पार्ट लेने को तैयार थे...... ।

दयाराम : कहां है गनपति?

धनपति : जब आपने चोबदार का पार्ट सेठ जी को दे दिया तो वे अपने ससुराल चले गये।

(सब हँस पड़ते हैं।)

धनपति : (खिन्न होकर) नहीं नहीं ससुराल तो उनको जाना ही था। वह तो इसी नाटक के कारण...... ।

दयाराम : (जिन्हें अचानक तरकीब सूझ गयी है। चुटकी बजा कर) वाह! अभी प्रबन्ध कर देते हैं चोबदार का (रामगुलाम से) क्यों बे रामगुलाम, तू एक

छोकरे को लाया था कि कहीं उसे चपरासी भरती करा दिया जाय। (उसको चुप देखकर) अरे वही जो मैट्रिक फ़ेल था।

रामगुलाम : आप किसुनवां की चरचा करत हैं का ?

दयाराम : हाँ, हाँ, वही रामकिशुन। कहाँ है वह ?

रामगुलाम : हेई क्लब में हमरे घरा तो अहै।

दयाराम : जरा बुला ला उसे।

रामगुलाम : जो हुकुम सरकार !

(चला जाता है।)

दयाराम : आप तो सेठ जी अब रुकिए नहीं, हरि को साथ ले लीजिए और भीम का पार्ट देख डालिए। आपके सम्वाद तो आरम्भ ही में है। सो आप रट डालिए।

चुन्नीलाल : जी यों तो आपकी दुआ से रोज रिहर्सल देखते-देखते पार्ट मुझे स्मरण हो गया है (गदा कंधे पर लिये झूमते-झामते सिंहासन से उतरते हैं) दुर्योधन ! पंड......पाषंड (पदाघात) यदि मैंने तेरी इसी जंघा को अपनी गदा के प्रबल प्रहार से चूर्ण-विचूर्ण कर तेरा अहंकार न तोड़ा तो मेरे कुंती-पुत्र होने पर धिक्कार है।'

दयाराम : वाह सेठ जी, दीवान कम्बख्त आप का क्या मुकाबिला करता। अब आप जाकर सारे पार्ट को भाव-भंगियों सहित रिहर्सल कर डालिए। ले जाओ भाई हरि, सेठ जी को ! और तुम भी अपना नया पार्ट रिहर्सल कर

हरि : डालो आइए सेठ जी,

[सेठ जी, हरि और दूसरे कुछ अभिनेता चले जाते हैं। रामगुलाम किशुन को लेकर आता है रामकिशुन बीस

एक वर्ष का हृष्ट-पुष्ट अक्खड़ देहाती है। नौकरी उसकी अभी लगी नहीं और इसीलिए उसने अभी न अदब सीखा है न खुशामद और गाँव के छुट्टे साँड सा मरकहा और स्वच्छंद है।]

रामगुलाम : ई, आय गवा किसनवा सरकार।

दयाराम : देखो भाई किशुन। एक काम है तुम्हारे लिए।

किशुन : जो कहें कर सकित हैं।

दयाराम : तुम हिन्दी विन्दी जानते हो? पढ़े हो न मैट्रिक तक!

किशुन : जी जानित हैं।

दयाराम : देखो बात यह है कि रात को हम एक छोटा सा नाटक करने जा रहे हैं। हमारा एक अभिनेता बीमार हो गया है। छोटा सा चोबदार का पार्ट है, तुम कर लो तो तुम्हें कुछ पान-पत्ते को पैसे दे दें। कभी नाटक वाटक किया तुमने?

किशुन : जी! गाँव के नाटक में कई बार पार्ट करि चुका अही।

दयाराम : तो बोलो!

किशुन : दइहें का?

दयाराम : अरे चार आने दे देंगे पान पत्ते के लिए।

किशुन : चार आने! जोर की प्यास लगी हो बाबू जी और कोई कहे कि चार आने देंगे पानी पीकर दिखाओ! तो चार आने पर तो हम पनियों न पियें। चवन्नी में आजकल का होय सकथै?

दयाराम : अरे तो आठ आना ले लेना। जरा सा तो पार्ट है। एक लाइन तो तुम्हें बोलनी है।

किशुन : एक रुपया देव तो करि देब।

दयाराम : एक लाइन का एक रुपया !

भगवन्त : अरे हटाओ यार, दे देंगे एक रुपया। लेकिन देखो पार्ट अच्छी तरह याद रखना। पांच सात बार रिहर्सल कर लेना। भूलना नहीं।

किशुन : ई तो हमारे बायें हाथ का खेल अहै। गाँवन में अइसा वइसा कितना नाटक कर चुका अही कि।

दयाराम : तो चलो अब करो रिहर्सल

(सब जाते हैं। पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[कंसर्ट आरम्भ होने का समय बीत चुका है; पर पर्दे के अन्दर पूरा प्रबन्ध नहीं हो सका, इसलिए दो बार घन्टी बज चुकने पर भी पर्दा नहीं उठा। दर्शक शोर मचाने लगे हैं। सीटियाँ तालियाँ और 'हूटिंग' शुरू हो गयी है। तभी तीसरी घण्टी बजती है और पर्दा उठता है।

सामने एक और पर्दा दिखायी देता है जिस पर बड़े सुन्दर सुनहले मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है—"प्रयाग कलाकार समिति" *

---

* यहाँ दो पर्दों का होना आवश्यक है। बाहर के पर्दे पर उस क्लब का नाम होगा, जो यह नाटक करने जा रही है और अन्दर के पर्दे पर 'प्रयाग कलाकार समिति' लिखा होगा। इस सन्बन्ध में और जानकारी के लिए पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट देखिए।

इस पर्दे के बाहर नेपथ्य के निकट ही दायीं ओर को एक माइक्रोफोन रखा हुआ है।

पर्दा उठने के क्षण भर बाद श्री दयाराम बुश्शर्ट और पैंट पहने, हल्की सी घबराहट में बुश्शर्ट के दामन को दोनों हाथों से ठीक करते हुए प्रवेश करते हैं और माइक्रोफ़ोन के आगे खड़े हो जाते हैं।]

दयाराम : सज्जनो, आप जितनी संख्या में हमारी कंसर्ट देखने आये हैं, उसे देखकर हमारा बड़ा प्रोत्साहन हुआ है। इस कंसर्ट का आयोजन आसाम के भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के लिए किया जा रहा है। हमें आशा है, जैसे आप लोगों ने आज पधारने की कृपा की है वैसे ही आप कल भी आयेंगे और भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के पुण्य के साथ सुन्दर अभिनय, कविता, नृत्य, नकल आदि देखने का फल भी पायेंगे। अभी कुछ ही देर में हम आपके सामने महाभारत का एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत करेंगे जो एक ओर मानव की बर्बरता का द्योतक है तो दूसरी ओर मानव की उच्चता का परिचय देता है। उसके बाद रंगारंग प्रोग्राम होगा। अन्त में हमारी समिति के व्यवस्थापक श्री भगवन्त द्वारा लिखित एकांकी 'राजपूतानी' होगा जो उनके व्यक्तित्व ही की भाँति ओज भरा है। अभी कुछ क्षण में पर्दा उठता है। तब तक श्री पीड़ित जी अपनी सुन्दर कविता से आप का मनोरंजन करेंगे। आइए पीड़ित जी।

[एक पतला दुबला मोटे चश्मों वाला युवक माइक के पास आता है। हाथ में कई कविताएँ हैं कि यदि श्रोता और सुनने का अनुरोध करें तो दिक्कत न हो। दयाराम नेपथ्य में चले जाते हैं।]

पीड़ित जी : (बड़ी अदा से बालों की लटों को पीछे हटाते हुए) सज्जनों मेरी कविता में पीड़ा है, व्यथा है, दर्द है, विषाद है अवसाद है। आशा है आप उसे पहचानेंगे और सराहेंगे। सज्जनो ! मैं कविता में किसी 'वाद' का अनुयाई नहीं ! कला को प्रचार का माध्यम मैं नहीं समझता। मेरे निकट कला की साधना कला के लिए होनी चाहिए। कला......

दर्शकों में से एक : भाषण नहीं, कविता........

पीड़ित जी : (अचकचाकर) लीजिए, लीजिए, कविता लीजिए !
मेरी कविता का शीर्षक है—प्रीत का शीत—

(पढ़ते हैं।)

मर गये प्रीत में !
मर गये प्रीत में—प्रीत के शीत में !

पिछले दर्शकों में से एक : लिहाफ़ ओढ़ लेते।

(हाल में ठहाका गूंज उठता है।)

पीड़ित जी : मर गये, मर गये !

दर्शक : मर गये, मर गये !

पीड़ित जी : (ज़रा ऊँचे) सुनिए !

(दर्शकों में ठहाका)

पीड़ित जी : मर गये प्रीत में,
मर गये प्रीत के शीत में !
मर गये, मर गये

दर्शक : मर गये, मर गये

पीड़ित जी : (ऊँची आवाज़ में)

तेरे नयनों की गर्मी कहाँ है यहाँ ?
एक ठण्डक में लिपटा है अपना जहाँ।

मर गये शीत में,
मर गये प्रीत में,

दर्शक : मर गये, मर गये,
मर गये, मर गये,

पीड़ित जी : (ज़ोर से) सुनिए ! बड़े दुःख की बात है कि आप लोगों में इतना भी धीरज नहीं कि......

दर्शक : मर गये, मर गये,
मर गये, मर गये,
मर गये, मर गये,

[श्री दयाराम सहसा नेपथ्य में से आते हैं और पीड़ित जी का हाथ थाम 'विंग* में ले जाते हैं। दर्शक जोर से ठहाका मार उठते हैं।]

दयाराम : (फिर माइक के सामने आकर) सज्जनो ! मैं जानता हूँ आप नाटक देखने को उत्सुक हैं। लीजिए हम अभी आपके सामने नाटक प्रस्तुत करते हैं।

[माइक उठा कर बायीं ओर रख देते हैं और 'विंग' में चले जाते हैं।

उस समय जब उत्सुकता भरा सन्नाटा छा जाता है, दायीं ओर का विंग-आधार पीछे को हट जाता है और दयाराम नेपथ्य में पर्दा -उठाने का आदेश देने को तैयार खड़े दिखायी देते हैं।]

दयाराम : (पर्दे के पीछे रंगमंच पर बैठे अभिनेताओं को सम्बोधित करते हुए) सब तैयार हैं ?

---

* नेपथ्य

[सेठ चुन्नीलाल गदा उठाये भीम बने रंग-मंच से भागे आते हैं।]

चुन्नीलाल : (घबराये हुए) मैं कहता हूँ दयाराम जी, मेरा दिल तो बेतरह धड़क रहा है। आप मुझे चोबदार ही बना रहने देते।

दयाराम : (घबड़ा कर) अरे आप कहाँ भाग आये ? चलिए-चलिए अपनी जगह पर जाकर बैठिए, पर्दा उठने वाला है। देखिए प्राम्पटर यहाँ बैठा है। (आधे विंग की ओर देखकर) देखो भाई, सोना नहीं। ठीक-ठीक प्राम्प्ट करना (सेठ जी की पीठ को थपथपाते हुए) लीजिए अब जाकर अपनी जगह पर बैठ जइए। जब दुर्योधन द्रौपदी के सम्बन्ध में अप-शब्द कहे तो गदा को अपने दायें कन्धे पर सम्हाले, स्टेज को अपने गज-पदों से धँसाते, झूमते हुए उठिए और जब दुर्योधन को ललकारिए तो आप की आवाज़ पिछली सीटों पर बैठे हुए लोगों के दिलों को धड़का दे ! चलिए। घबराइए नहीं। जम कर अपनी जगह बैठ जाइए।)

(चुन्नीलाल वापस चले जाते हैं। घंटी बजती है।)

दयाराम : लीजिए तैयार ! साइलेंस ! पर्दा उठाओ !

[विंग अपनी जगह आ जाता है। पर्दा उठता है। दुर्योधन का दरबार लगा है। भीष्म पितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य और दूसरे महारथी बैठे हैं। एक ओर हारे हुए पाण्डव नत-मस्तक बैठे हैं। कुछ क्षण बाद सूत-पुत्र सिर झुकाये प्रवेश करता है।]

दुर्योधन : क्यों सूत-पुत्र, द्रौपदी को नहीं लाये। यों सिर झुकाये क्यों चले आ रहे हो ?

सूत-पुत्र : महा पराक्रमी, द्रौपदी एक-वस्त्रा हैं। दरबार में आने की उनकी स्थिति नहीं है।

दुर्योधन : (सक्रोध) इस बात का निर्णय करना तुम्हारा काम नहीं तुम्हारा काम आदेश का पालन करना है।

सूत-पुत्र : महाराज, उन्होंने एक ऐसी आपत्ति की कि मैं उसका उत्तर न दे सका।

दुर्योधन : तुम्हें उत्तर देने के लिए नहीं, उसे सभा में घसीट कर लाने के लिए कहा गया था। वह हमारी दासी है, एक-वस्त्रा है या निरावस्त्र, तुम्हारा कर्तव्य उसे सभा में घसीट लाना था।

सूत-पुत्र : महाराज, वह दासी होने से इन्कार करती हैं। जब महाराज युधिष्ठर ने अपने आप को पहले हार दिया तो द्रौपदी को हारने का उन्हें क्या अधिकार रहा।

दुर्योधन : वही अधिकार जो स्वामी को अपने भृत्य पर, पति को अपनी पत्नी पर होता है। जब उसके पाँचों पति हार गये तो उसका पृथक अस्तित्व ही क्या रहा ? दुःशासन, जाओ ! इस कायर सूत-पुत्रके वस की यह बात नहीं। तुम द्रौपदी की चोटी पकड़ कर उसे घसीटते हुए हमारे दरबार में उपस्थित करो। दासी होकर उसकी यह स्पर्धा ! उसकी धृष्टता का हम उचित दंड देंगे।वह हमारी दासी है और हम उसके साथ जैसा चाहेंगे व्यवहार करेंगे। उसने एक बार अपने महल की खिड़की – में वैठे हमारा अपमान किया था। आज हम उसे इस भरे दरबार में अपनी इस बायीं जंघा पर वैठाकर उससे पूछेंगे।.........

चुन्नीलाल : (क्रोध से उठ कर, गदा को अपने दायें हाथ में उठाकर हवा मेंलहराते हुए) दुर्योधन ! षंड!... (एक पग आगे बढ़ते हैं।)

पाषंड!...... अ.......... अ................(संवाद भूल जाते हैं। फिर घबराकर एक कदम पीछे रखते हैं।) दुर्योधन ! (एक पग और पीछे हटते हैं) षंड ! (एक पग और पीछे हटते हैं) पाषंड !........(खांसते हैं, एक पग और पीछे हट कर प्राम्पटर से पूछते हैं) अरे भई प्राम्पटर, क्या है ?..........

[विंग एक ओर हट जाता है। प्राम्पटर स्टूल पर बैठे जल्दी-जल्दी पुस्तक से पृष्ठ उलटता दिखाई देता है।]

प्राम्पटर : एक बार फिर यही बोल दो !

चुन्नीलाल : (फिर एक पग बढ़ते हुए और गदा को हवा में हिलाते हुए) दुर्योधन........षंड !......पाषंड ! (फिर खांसते हुए और पीछे हटते हुए) अरे भाई प्राम्पटर बताओ भी।

(प्राम्पटर घबराया हुआ पृष्ठ उलट रहा है।)

चुन्नीलाल : (फिर आगे बढ़ कर अजीब घबराये हुए स्वर में) दुर्योधन, षंड !......पाषंड !

प्राम्पटर : (जल्दी से) ब्रेकेट में पदाघात..........

चुन्नीलाल : (जोर से स्टेज पर पांव पटकते हुए) ब्रैकेट में पदाघात !

[विंग अपनी जगह आ जाता है। स्टेज पर सेठ जी के पैर पटकते ही दर्शक जोर से ठहाका मार उठते हैं। अचानक सेठ जी को पार्ट याद हो आता है।]

चुन्नीलाल : (गदा को हवा में लहराते हुए, जल्दी-जल्दी सम्वाद बोलते हैं) यदि मैंने तेरी इस जंघा को अपनी इस गदा के प्रबल प्रहार से (फिर भूल जाते हैं और एक पग पीछे हटते हुए कहते हैं) प्रबल प्रहार से (खांससे हैं) प्रबल प्रहार से (फिर खांसते हैं, प्राम्पटर से) अरे प्राम्पटर

क्या है ? (फिर आगे बढ़ते हैं।) अपनी इस गदा के प्रबल प्रहार से............

[दर्शक हँसी के मारे लोट पोट हो जाते हैं। सीटियाँ बजाते हैं। तालियाँ पीटते हैं और फर्श पर जूते घिसते हैं।

चुन्नीलाल : (रुंआसी आवाज़ में चीखते हुए) मैंने तो पहले ही कहा था कि मुझे चोबदार ही बना रहने दो। मुझसे यह भीम का पार्ट न होगा। कहने लगे नहीं, तू ही मोटा है, तू बना-बनाया भीम है।

[लोग और जोर से हँसते हैं, हाल ठहाकों से फटा पड़ता है।]

चुन्नीलाल : (गदा को हवा में लहराते हुए) जी चाहता है कि इस गदा से अपना और इस प्राम्पटर का सिर फोड़ दूँ। इन सब दरबारियों की गर्दनें तोड़ दूँ। और स्टेज को चूर्ण-विचूर्ण कर दूँ।

[जोर से गदा घुमा कर स्टेज पर मारते हैं। अन्दर से खाली गदा एक दम पिचक जाती है। दर्शकों का एक और ठहाका गूंजता है। विंग एक ओर को ज़रा सा हट जाता है।]

दयाराम : (घबराये हुए चिल्लाते हैं।) पर्दा गिराओ। पर्दा गिराओ !!

[पर्दा गिर जाता है। विंग का भाग उसी प्रकार हटा रहता है। भगवन्त सिर को दोनों हाथों से पकड़े बाल नोचते दिखायी देते हैं।]

भगवन्त : ओफ़, ओफ़ ! इस बलबीर कम्बख्त ने बीमार होकर सारी कंसर्ट चौपट कर दी।

दयाराम : घबराने से काम न चलेगा। मैं बाहर जाकर दर्शकों को व्यस्त रखता हूँ। तुम अफीमचियों की नकल करने

वालों को तैयार रक्खो। और देखो कविता फविता से काम न चलेगा। दर्शकों का मूड बिगड़ा हुआ है। नकल के बाद मृदुला घोष..........

भगवन्त : (चिढ़चिढ़े स्वर में) कहाँ है मृदुला घोष ? कहीं घर में बैठी कंघी पट्टी कर रही होगी। इन कम्बख्तों की यही तो मुसीबत है। पासों के लिए सारे मुहल्ले को पास दिला दिये और काम के वक्त........

(जनता का ठहाका, शोर और सीटियां)

दयाराम : घबराओ नहीं, अफीमचियों को तैयार रखो। वे पर्दे के बाहर नकल करेंगे। इतने में 'राजपूतानी' के पात्रों को भेज दो !

[विंग अपनी जगह आ जाता है। दयाराम पहले की अपेक्षा कुछ अधिक घबराहट में बुश्शर्ट का दामन ही नहीं, कालर भी ठीक करते हुए पर्दे के बाहर माईक के पास आते हैं।]

दयाराम : सज्जनो ! हमें बड़ा खेद है कि हमारी समिति के मुख्य कलाकार श्री बलबीर के अचानक बीमार हो जाने और नाटक की भूमिकाओं को इधर उधर बदलने से हमारा यह नाटक गड़बड़ हो गया। खेद ही नहीं, हमें इसका परम-शोक है। आपकी उदारता से हम आशा करते हैं कि आप हमारी इस त्रुटि को क्षमा करेंगे। कुछ देर बाद हम अपना ओज-पूर्ण एकांकी 'राजपूतानी' प्रस्तुत करेंगे जो इस नाटक की कमी पूरी कर देगा। उसके बाद नाचने गाने का बड़ा अच्छा प्रोग्राम होगा। इस बीच में आप एक अफ़ीमचियों की नकल सुनिए।

(चले जाते हैं—कुछ क्षण बाद फिर आते हैं।)

दयाराम : हमें खेद है कि अफीमचियों की नकल करने वाले कहीं सचमुच अफीम खा कर पिनक में सो गये हैं।

(दर्शकों में जोर का ठहाका)

— : लेकिन आशा की जाती है कि अन्त में वे पहुँच जायंगे और आप उनकी नकल सुनकर ठहाके मारते हुए हाल से बाहर जायंगे।

दर्शकों में से एक : हम अब भी ठहाके मार रहे हैं।

[दर्शकों का ठहाका। दयाराम जल्दी से अन्दर चले जाते हैं—आधा विंग एक ओर हट जाता है। रामकिशुन चोबदार का 'असा'* लिए खड़ा है।]

दयाराम : देख रे किशुन भूलना नहीं पार्ट।

किशुन : आप एका तनिक फिकिर न करें बाबू जी। हम सब ठीक कर देवेई।

(घन्टी बजती है।)

दयाराम : (स्टेज की ओर देखते हुए) क्यों भाई सब तैयार हैं। ठीक है। साइलेंस! पर्दा उठाओ!

[पर्दा उठता है और विंग अपनी जगह पर आ जाता है। राजा मानसिंह का अंतःपुर। महारानी सक्रोध प्रवेश करती है। पीछे पीछे एक दासी लगभग भागती सी आती है।

दासी : महारानी क्षमा......महा...... !

महारानी : (मुड़कर क्रोध से) एक नीच दासी का यह साहस कि वह महारानी के मुंह आये। जिस बरतन में खाये उसी में छेद करे। महाराज ने उसके गाने से प्रसन्न होकर उसे सोने की

*चांदी के पत्रों से मढ़ी लाठी।

माला क्या इनाम दी की उसका सिर फिर गया। उसे ध्यान न रहा कि वह एक दासी है। जिसे मेरी एक हल्की सी दृष्टि दीवारों में जिन्दा चुनवा सकती है, कुत्तों से नुचवा सकती है, पहाड़ की चोटी से गिरवा......

दासी : महारानी क्षमा......मालती को क्षमा कर दें। महारानी! उसे एक अवसर दें।

महारानी : (मुड़कर) कि वह अपने विषैले दाँतों को और भी तेज़ कर ले। शायद तूने इसीलिए उसकी सिफारिश की थी कि तू उसके द्वारा इस महल के शिखर पर जा बैठे। उसकी चंचलता को देखकर मेरा माथा ठनका था, पर तेरी गिड़गिड़ाहट ने मेरे विवेक को धुँधला दिया। इससे पहले कि महाराज को पता चले उसके सौंदर्य की बोटियाँ कुत्ते नोच चुके होंगे।

(तेज़ तेज़ निकल जाती है।)

दासी : महारानी क्षमा! महारानी क्षमा!

[महारानी के पीछे पीछे निकल जाती है और उसकी गिड़गिड़ाहट भरी क्षमा याचना धीरे धीरे दूर हो जाती है। कुछ क्षण बाद तलवार हाथ में लिये राजा मानसिंह प्रवेश करते हैं।]

मानसिंह : चोबदार......चोबदार......

किशुन : (राजा मानसिंह की तरह अकड़कर प्रवेश करता है और इसी अदा में भूल जाता है कि उसे 'जी महाराज' कहना है।) जो आदेश (निकट आकर) जो आदेश........ !

मानसिंह : (किशुन की इस हरकत पर भ्रू-भंग कर के) बता मालती कहाँ है?

किशुन : (इस घबराहट में कि उससे कुछ गलती हो गयी है, सम्वाद भूल जाता है) जो आदेश!

मानसिंह : (क्रोध से) हम कहते हैं कि बता मालती कहाँ है ?

किशुन : (जिसे अपनी गलती का पता चल जाता है कि उसने 'जी महाराज' के स्थान पर 'जो आदेश' कहा है , अपनी गलती सुधार लेता है) जी महाराज ! जी महाराज !

(विंग पीछे हटता है ।)

प्राम्पटर : (पुस्तक हाथ में लिए संकेत करता है ।) मालती को महा-रानी ने भूगृह में बन्द करने का आदेश दिया है ।

किशुन : (देखता है कि प्राम्पटर कुछ कह रहा है, पर घबराहट में समझता नहीं) जी महाराज !

[विंग में दयाराम भगवन्त और अन्य अभिनेता परेशानी में इकट्ठे हो रहे हैं।]

मानसिंह : (रंगमंच पर) गदहे, हम पूछते हैं, मालती कहाँ है। जी महाराज, जी महाराज रटे जा रहा है। उल्लू कहीं का। बता मालती कहाँ है ?

किशुन : (क्रोध से अकड़ जाता है) हे देखो ! जबान सम्हारि के बाति करो। बड़े महाराज बने फिरत हैं। देइ का एक रुपिया और सान इतनी गाँठत हैं। जाओ नहीं बताइत। हम कहित हैं, गारी देहो तो मालुम होय पै भी न बताउब और उठाकर नीचे फेंक देब।

(दर्शकों के ठहाके गूँजने लगते हैं ।)

दयाराम : (घबराहट में) पर्दा गिराओ ! पर्दा गिराओ !!

[विंग अपनी जगह आ जाता है। पर्दा गिर जाता है कुछ क्षण रोशनी पर्दे पर अंकित 'प्रयाग कलाकार समिति' के सुनहरी अक्षरों पर केन्द्रित रहती है, फिर बड़ा पर्दा गिरता है।]

कइसा साब ? कइसी आया ?

[बम्बइया हिन्दुस्तानी में एक नाटक]

पात्र

साहब

आया

नौकर

[पर्दा जिस कमरे में उठता है, वह एक मध्यवर्गीय मकान का बैठकखाना है। यह कमरा किसी ऐसे खुले, रौशन और हवादार मकान का बैठकखाना है जो बम्बई की निकटवर्ती बस्तियों में आम होते हैं। इन पर लिंटल की छतों के स्थान पर खपरैल की छतें होती हैं और बम्बई के छः सात मंज़िले मकानों के नन्हे नन्हे दड़बों ऐसे फ़्लैटों में रहनेवाले इन खुले मकानों में आकर अनायास ही एक विचित्र प्रकार के आनन्द से भर कर सुख की लम्बी साँस ले उठते हैं।

यह बैठने का कमरा भी मकान की पहली मंजिल पर है, जिसका प्रमाण इसकी छत के ढालुवें कोनों और सामने के बारजे से मिलता है। सामने की दीवार में दायें बायें दो दरवाज़े हैं जो बारजे को जाते हैं। इस दीवार पर मध्य में एक बड़ी घड़ी टंगी हुई है। जिसमें इस समय ग्यारह बज रहे हैं।

कमरे को, उसके फ़र्नीचर के विचार से, तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है—दायीं दीवार के साथ मेज़ और कुर्सी लगी हुई है और किताबों के रैक पड़े हैं, जिससे यह भाग छोटी मोटी लायब्रेरी या स्टडीरूम बन गया है। सामने कमरे के मध्य सोफ़ा सेट पड़ा है और एक तिपाई रखी है, इसे बैठने का स्थान समझ लीजिए। तीसरे हिस्से में अर्थात् बायीं ओर छत से झूला लटक रहा है।

झूला बम्बई के मध्यवर्गीय घरों का अनिवार्य शृङ्गार है। शायद ही कोई ऐसा मकान होगा जिसके बरामदे या ड्राइंग रूम में झूला न हो। इसका विचार पहले पहल चाहे भरपेट

खाना खाने के बाद ग़नोदगी के मारे किसी गुजराती सेठ के मस्तिष्क में आया हो, अथवा किसी मारवाड़ी बनिये के दिमाग में, परन्तु अब तो यह बम्बई के गुजराती और मारवाड़ी घरों के साथ-साथ वीर शिवाजी की सेवा में केवल चने खाकर मीलों की मंज़िल मारने वाले मराठे वीरों के घरों की भी शोभा बढ़ाता है।

बायीं दीवार में इधर को एक दरवाज़ा है जो बाहर बरामदे में खुलता है।

पर्दा उठने पर साहब मेज़ पर बैठे कुछ लिख रहे हैं— साहब से तात्पर्य किसी गोरे अंग्रेज़ से नहीं। बम्बई का प्रत्येक व्यक्ति, जो एक नौकर रखने की सामर्थ्य रखता है, तवे की भाँति काला होने पर भी अपने आपको 'साहब' और अपनी पत्नी को 'मेम साहब' कहलवा सकता है—'मुझे साहब कहा करो!' यह आदेश देने की भी आवश्यकता नहीं। नौकर उसे इतनी बार 'साहब' कहकर पुकारेगा, कि वह स्वयं अपने आपको 'साहब' पुकारने पर विवश हो जायगा।

ये साहब तवे से काले नहीं, पर उतने गोरे भी नहीं। ३५-३६ वर्ष के सुन्दर युवक हैं। फिल्म कम्पनी में सिनारिस्ट हैं और इस समय लगता है किसी फिल्मी कहानी का सिनारियो लिखने में व्यस्त हैं।

पर्दा उठने के क्षण भर पश्चात् पार्श्वभूमि में दस्तक की आवाज़ आती है। क्षण भर बाद बायें दरवाजे से नौकर झांकता है।]

नौकर : (जिसका नाम जगदीश है) साहब, आपकी पुरानी आया आयी है।

साहब : (काम करते हुए बेख्याली से) पुरानी कौन?

नौकर : मोटी सी जवान छोकरी है।

साहब : (पूर्ववत् काम करते हुए बेख्याली से) मोटी !

नौकर : साहब काली काली है, इतना बड़ा बालों का जूड़ा, बड़ी-बड़ी आँखें और बड़ी जवान है, साहब।

साहब : (निरन्तर काम करते हुए) नाम नहीं पूछा ?

[दरवाजे के निकट पार्श्वभूमि में आया की अत्यधिक मधुर आवाज़ आती है।]

आया : हम हूँ सिसिलिया फ़र्नेण्डिस, आ जाऊँ साहब ?

साहब : (विवशता से काम छोड़कर एक सूक्ष्म सी मुस्कान ओठों पर लाते हुए) आ जाओ आया !

[आया भीतर आ जाती है नौकर चला जाता है। यद्यपि नौकर ने आया को काली कहा है, परन्तु केवल 'काली' शब्द का प्रयोग उसके कालेपन का अपमान है। पर संभवतः नौकर की दृष्टि उसके वर्ण की अपेक्षा उसके यौवन पर अधिक रही है। क्योंकि उसके निरूपण में उसने भूल से काम नहीं लिया। आया की वयस बीस एक वर्ष की है। उसके बड़े जूड़े मोटी-मोटी आँखों और परिपूर्ण यौवन ने उसके वर्ण की कालिमा और ललाट की संकीर्णता को पूर्णतया छिपा दिया है। अत्यन्त सुन्दर ब्लाउज़ और किनारेदार ठिकी हुई बढ़िया साड़ी वह पहने है। आवाज़ में मिठास और स्वर में संगीत है। बोलते समय वह शब्दों में 'ह' का प्रयोग नहीं करती। जैसे—'साहब' को 'साब', 'नहीं' को 'नईं', 'रहने' को 'रेने', 'इधर' को 'इदर'... आदि आदि।

आकर साहब के सामने कुर्सी की पीठ थामकर खड़ी हो

जाती है। निम्नलिखित सम्भाषणों में आया और साहब की 'भाव-भंगियों' और एक्शन के संकेत मात्र दिये गये हैं। शेष सब निर्देशक की सूझ बूझ पर छोड़ दिया गया है।]

आया : (मुस्कराकर सिर को ज़रा सा हिलाते हुए) मेम साब चला गया, साब ?

साहब : हां, आया।

आया : छोकरा है ?

साहब : हाँ

आया : (हँसकर) ओ तो जानेवाला था। मेम साब बोलता था ओ चला जायेगा तो आकर काम देखना।

साहब : (ओठों पर मुस्कान की क्षीण सी रेखा झलक जाती है) मेम साहब ने हँसी की होगी। मैं तो आप ही जानेवाला हूँ...

आया : किदर ?

साहब : पहाड़ पर। इसीलिए तो इस नौकर को जवाब नहीं दिया।

आया : क्यों साब, तुम तो इदर ई रेने वाला था—मेम साब बोलता था—साब इदर ई रयेगा।

[जैसे अनजाने में कुर्सी की पीठ छोड़कर मेज़ का किनारा थाम लेती है। निमिष भर के लिए साहब की दृष्टि आया के भरपूर वक्ष पर छिछलती हुई सी चली जाती है।]

साहब : (कलम छोड़कर एक थकी हुई सी अंगड़ाई लेते हैं।) जी कुछ ठीक नहीं रहता, आया। मैं भी महीना भर की छुट्टी लेकर उधर ही जा रहा हूँ।

आया : (आँखों में कुछ विचित्र सी सहानुभूति और मस्ती भर जाती

है । वक्ष का उभार मेज़ के कोने पर अधिक बढ़ जाता है और बाहें तनिक फैल जाती हैं) हां साब, तुम कइसा दुबला हो गया है । (निमिष भर के लिए साहब की आंखों में देखती है, परन्तु साहब की आंखें बारजे से शून्य में टिकी हुई हैं । बात को बढ़ाते हुए मेज़ पर हाथ बढ़ा लेती है—) मेम साब भी कइसा दुबला हो गया था । अइसा कइसा साब ?

साहब : (उसके हाथों को अपने हाथों के समीप आते देख कर हाथ उठा लेते हैं, कुर्सी पर पीछे को भूल जाते हैं।) पिछले दिनों आया, घर में नौकर नहीं था । मेम साहब को आदत तो है नहीं । सब काम उन्हें आप ही करना पड़ता—बर्तन मलना, पानी भरना, सफाई करना ! रात को मच्छर और खटमल के मारे बाबा सोता न था और मेम साहब दिन रात जागता था ।

आया : खटलम क्या साब ?

साहब : अरे यही जिसे माँगनूं कहते हैं। अरे वह लाल-लाल जो बिस्तर में होते हैं । वह बग, बग* ।

आया : (हँसती है—काले रूप के बावजूद रजत हँसी) अरे साब, तुम उसको खटलम कहता है ?

साहब : खटलम नहीं, खटमल खटमल ।

आया : हां, हां ! (हँसती है) इसीसे तो बाबा भी कइसा हो गया था । कितना फुड़िया उड़िया निकला था !

साहब : आया कोई थी नहीं, मेम साहब बच्चे को देखें कि

*बग = Bug = खटमल

घर को ? आया मिल जाती तो हम मेम साहब को जल्दी भेज देते।

[कुर्सी पर पीछे को झुकते झुकते दीवार के साथ जा लगते हैं। आया फिर पूर्ववत् मेज़ के कोने से लगी खड़ी हो जाती है।]

आया : हम तो एक बरस तुम्हारे साथ नौकरी किया, हम छोड़ता इंने, पर हमारा ब्वाय फ्रैंड बोला, "तुमारे पास आने को हमको बोत त्रास पड़ता है। तीन घंटा मलाड आने जाने में लगता है। तुम कोलाबा में नौकरी करो।"

साहब : क्या हाल है तुम्हारे ब्वाय फ्रैंड का ?

आया : हलकट था ओ तो साब। हम इदर से नौकरी छोड़कर गया तो उसका भी नौकरी छूट गया। रोज दारू पीता और हमको त्रास देता। हम कोलाबा का नौकरी छोड़ दिया। हमसे शादी बनाने को मांगता था। हम बोला, हम भूखा मरेंगा, फुट पाथ पर सोयेंगा, पन तुमसे शादी नहीं बनायेंगा।

[साहब जोर से ठहाका मारते हैं और फिर पहली पोज़ीशन में आ जाते हैं।]

साहब : तुम्हारी कहीं बनेगी भी आया ?

आया : तुमको यह आया पसन्न* है साब ?

[साहब की आंखों में देखती हुई फिर मेज़ पर कुहनियां टिकाकर झुक जाती है। साहब की दृष्टि उसके भरपूर वक्ष से टकरा कर मुड़ जाती है।]

---

* पसन्न = पसंद

साहब : हमारी पसन्द का क्या सवाल है ? मेम साहब को पसन्द है।

आया : यह हमारा जात का है साब। हम उसको बोत देर से जानता है। हमारा जात वालों के पास नौकरी करता था। सार्टिफ़िकिट इसके पास नेइँ। शकल भी अच्छा नेइँ।

साहब : दुर्लभ, हमारे दफ्तर का चपड़ासी, इसे सान्ताक्रूज़ से लाने गया तो इसे लाये बिना वापस आ गया। मैंने पूछा तो बोला, साहब, उसकी शक्ल अच्छी नहीं।' मैंने कहा, 'लाओ उसे, यदि वह काम करेगी तो चलेगा। मुझे कौन सा उससे इश्क करना है।

आया : तुम कइसा है साब ?

[फिर रजत हँसी कमरे में गूंजती है और हँसते-हँसते वह मेज़ पर झुक जाती है। उसके हाथ फैल कर साहब के हाथों के समीप पहुँत जाते हैं। साहब उठ खड़े होते हैं।]

साहब : और क्या ! (कमरे में घूमने लगते हैं।) आया बहुत अच्छी है। शोर नहीं मचाती, तंग नहीं करती, अपने काम से काम रखती है। एक जगह टिक कर बैठती है। और फिर उसका भेजा भी बराबर* है (हँसते हैं।) तुम्हारी तरह नहीं है। कहो, अब किधर काम कर रही हो ?

[जाकर झूले पर बैठ जाते हैं और उसे हल्के से झुला देते हैं। आया उनके निकट जा खड़ी होती है।]

आया : मलाड में करता था, साहब।

---

* भेजा बराबर है = दिमाग ठीक है।

साहब : (सहसा रुककर) मलाड ! यहीं ?

आया : परसों से हम मलाड में था।

साहब : किसके यहां ?

आया : उदर साब, हम उस का नाम नेईं जानता। उस पूने वाली जाड़ी*। मेम साब ने भेजा था, पन आज झगड़ा हो गया।

साहब : तुम्हारा झगड़ा कहाँ नहीं होता ? क्या बात हुई ?

आया : ओ मेम साब बोत खिटखिट करता है, साब। ओ बोला—तुम अइसा साड़ी पेनता है, अइसा बाल बनाता है, तुमारा रूआब तो हमसे भी ज्यास्ती है।

साहब : साड़ी तो सचमुच अच्छी है।

आया : हम बोला—हम तो अइसा बाल बनायेंगा, अइसा साड़ी पेनेंगा, फ़ोकट में काहे बूम मारता है†। ओ बोला—अइसा साड़ी पेनना इदर नेई माँगता, तुमको काम करना हो तो ठीक से करो, अइसा रुआब इदर नेई चलेंगा। हम बोला—हमारा पगार देओ, हमको नेईं माँगता नौकरी। ओ बोला—साब से पगार लो। साब बोला—मेम साब से लो—हम तो कंटाल गया‡। बोला जाओ हमको नेईं माँगता पगार, हम भूका मरेंगा, .फ़ुटपाथ पर सोयेंगा, पन तुम्हारे घर नौकरी नेईं करेंगा। हमारा पगार रख के तुम धनी हो जाओ। हम चला आया। (क्षण भर को रुक कर) साब, एक रुपया हो तो देओ, कोलांबा जाने का भाड़ा माँगता है। दो चार आने का नाश्ता करेंगा।

---

*जाड़ी = मोटी। †बूम मारता है = शोर मचाता है। ‡कंटाल गया = तंग आगया।

[साहब फिर जाकर मेज़ पर बैठते हैं और दराज़ से एक रुपया निकालकर उसे देते हैं।]

साहब : (रुपया देते हुए) क्या तुम नाश्ता करके भी नहीं चली ?

आया : नेइँ साब, सुबह नाश्ते को ओ लोग कुछ देता नेइं, खाली पीली वूम मारता है।

साहब : तुम खाना खाओगी ?

आया : नेइँ साब।

साहब : अरे खाओ। (नौकर को आवाज़ देते हैं) जगदीश ! जगदीश !

[क्षण भर बाद नौकर प्रवेश करता है। रसोई-घर से आया है, हाथ में छुरी और अध-छिला प्याज़ है।]

साहब : यह आया यहीं खाना खायेगी।

जगदीश : जी अच्छा !

[चला जाता है। साहब की दृष्टि आया के वक्ष से टकराती और निमिष भर के लिए वहीं जमी रहती है।]

आया : (मुस्करा कर) क्यों साब, क्या देखता है ?

साहब : (सहसा दृष्टि हटाकर) बड़ी अच्छी साड़ी है, कहां से ली है ?

आया : वायल की है, यह तो प्रिन्ट है।

साहब : अच्छा प्रिन्ट है !

आया : उदर धोबी तलाओ में अइसा साड़ी मिलता है साब ! कइसा लगता है हमको हाब ?

[साड़ी के पल्ले को अपने शरीर पर लपेट कर दिखाती

है। साहब उसके सुडौल शरीर और उसकी रेखाओं को एक नज़र देखते हैं और विचित्र सी अकुलता से फिर उठ खड़े होते हैं।]

साहब : अच्छी लगती है, पर तुम्हें सफेद साड़ी पहननी चाहिए।

(कमरे में चक्कर लगाते हैं।)

आया : क्यों साब ?

साहब : (कौच के बाजू पर बैठते हुए) काले रंग पर सफेद साड़ी अच्छी लगती है।

आया : हम सफेद साड़ी भी पेनता था साब, पन कई आदमी हमारे पीछू लग जाता था। हम छोड़ दिया सफेद साड़ी पेनना।

(साहब केवल मुस्कराते हैं।)

आया : उसमें और भी ज्यास्ती रुआब लगता था साब। हम उधर बालकेशर† में काम करता था। एक दिन क्या हुआ। हम सफेद साड़ी ब्लाउज पेनेला * था। एक पंजाबी सोलजर टैक्सा में बैठेला था, ओ आफ़िसर था साब, बिल्ला लगायेला था। हमको देखकर उतरा। बोत दारू पियेला था। हमारे पास आकर बोला; तुम नेवी (Navy) में काम करता है? हम बोला—नेईं हम आया है। ओ बोला—नेईं, तुम झूठ बोलता है। तुम नेवी में काम करता है, तुम हमको बोत पसन्द है। हम बोला – हम तुमको मांगता बी नेईं। पन साब उसने हमको पकड़ कर टैक्सी में डाल लिया।

†बालकेश्वर। *पहने हुए = क्रिया के साथ 'ला' लगाने से बम्बई की हिन्दुस्तानी में हुए का अर्थ निकलता है।

(साहब हँसते हैं ।)

आया : साब ओ बोत तगड़ा था, बोत दारू पियेला था । हम चिल्लाया । एक सिपाही बी आया, पन ओ फौजी बोला —यह नेवी में काम करता है, हमारा फ्रैंड है, तुम जाओ । अने* ओ ड्राइवर से बोला—गाड़ी चलाओ । हम बोत घाबर गया साब । हम ड्राइवर से बोला—रोको गाड़ी । पन साब, ओ ड्राइवर को मारने दौड़ा । उसके पास दो बाटली दारू था । हमसे बोला—पियो—हम बोला—हमको माँगता बी नेईं । उसने बाटली हमारे सिर पर उँडेल दिया साब । ड्राइवर हमारे जात का था । हम उससे गाड़ी रोकने को बोला । चौपाटी पर उसने गाड़ी रोक लिया साब । तब ओ आफ़िसर पेटी से पिस्टल निकाल लिया और बोला—हम तुमको जान से मार देंगा । ड्राइवर डर गया अने चल पड़ा । हम बी बोत डर गया साब । ओ सोल्जर हमको ताज होटल में ले गया, अने अपने रूम में पोंचकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया । हम साब बोत घाबर गया । ओ बोला—बैठो । हमको पलंग में बिठाकर बाथरूम में गया । बस साब, हम भागा । हमारा पर्स भी उदर रे गया उसमें तीन रुपया अने हमारा ईयरिंग था । पन साब, हमने उसको बी नेईं देखा । भाग कर रीगल पोंचा, ट्राम लिया और कोलाबा आ गया ।

(साहब ज़ोर का ठहाका मारते हैं ।)

आया : सच साब ! फिर हमको एक दिन ओ सोल्जर कोलाबा मिला था । केने लगा, तुम उस दिन भाग क्यों गया ? हम

---

* अने = और । + बाटली = बोतल

तुमको बोत पसन्न करता है, हम तुमसे शादी बनाने को माँगता है। हम बोला—हमको नेईं बनाना शादी। इदर हमारा जातवाला रेता है। तुम हमको त्रास देंगा तो हम तुमारा सिर फोड़ डालेंगा।

साहब : (फिर जाकर कुर्सी पर बैठते हुए हँसकर) तुम सबका सिर फोड़ेगी तो कैसे चलेगा ? तुम कहीं शादी क्यों नहीं कर लेती ?

आया : हमको माँगता बी नेईं शादी। हम भूका मरेंगा, साब, फुटपाथ पर सोयेंगा, पन शादी नेईं बनायेंगा।

साहब : अब तुम किधर जाती है?

आया : हम तो इदर ही आया था साब। मेम साब बोला था—नौकर जाने को माँगता है; हमको साब का बोत फ़िकिर है, तुम उसको देखना। हम आया तो तुम बारगाम* जाने को माँगता है। हम तो ओ नौकरी फोकट में छोड़ दिया।

साहब : तुम मुझसे पूछ तो लेती।

आया : हमको क्या मालुम। मेम साब बोला था, हम चार तारीख को जायेंगा। आज पाँच है, हम इदर आया है।

साहब : तुमको पंटो साहब के पास भेजा था।

आया : उस मेम साब ने आया रख लिया।

साहब : वह मोटा साहब जो तुमको ले गया था, मैं उससे कह दूंगा, वह तुम्हारे लिए नौकरी ढूंढ देगा।

आया : (फिर आकर साहब की मेज़ पर झुक जाती है।) ओ बड़ा अइसा है साब !

---

* बारगाम=(बाहर गांव) नगर से बाहर

साहब : क्यों ?

आया : जब हम पंटो साब के घर से चला, तो ओ जाड़ा साब बोला—आया, सिनेमा देखने चलेंगा। हम बोला—हमको नेईं मांगता है सिनेमा। बोला—चलो चाय पियें। साब, ओ हमको जबरजस्ती होटल में ले गया। हम एक सिंगिल चाय पिया। ओ बोला—आया हमारे संग चलो, हम तुमको बोत पसन्न करता है।

साहब : वह तुमको पसन्द करता है ?

आया : उसका अपना शादी नेईं बना साब ?

साहब : उसका मेम साहब है। बहुत सुन्दर। लेकिन देस में है।

आया : वह बड़ा अइसा है साब।

साहब : अँधेरी वाले साहब को भी अब आया चाहिए। तुम उधर क्यों नहीं जाती ?

आया : हमको नेईं मांगता अँधेरी। वहाँ हमको ओ लम्बू साब बोत त्रास देता था। हम बेबी को लेकर बैठा होता ओ बेबी को लेकर अपना रूम में चला जाता। हमको भी उसके पीछू जाना पड़ता। ओ हमको बोत त्रास देता था।

साहब : वह लम्बा साहब अब उधर नहीं है।

आया : ओ मेम साब बी बोत खिटखिट करता था।

साहब : (हँसकर) तो फिर मैं अब तुम्हें किधर भेजूं ? तुम्हें कोई पसन्द भी हो !

आया : हमको तो तुम जैसा खत्री* साब पसन्न है। हम तुमारे घर इतनी देर रेया, तुम हमको कभी त्रास नेईं दिया। हम अच्छा साड़ी पेनता था, तुम हमको कबी नेईं

---

* खत्री = भला

बोला, खाने का हमको कोई वांदा नेई हुआ [1]। मेम साब खिटखिट बी करता था, तो तुम उसको बोल देता था।

साहब : लेकिन तुम तो यहाँ से भी लड़कर भाग गई।

आया : ओ हमारा हलकट ब्वाय-फ्रैंड हमको ले गया, साब। यहाँ का ब्वाय लोग बी त्रास देता है और धनी लोग बी। हम तो कंटाल गया बम्बई से!

साहब : तुम तो देश को जाने वाली थी?

आया : देस में गया था साब, पन हमारा मन उदर नेईं लगा।

साहब : तुमको पंजाब जाने को कहा था, उस अफ्रीका वाली मेम साहब के साथ!

आया : नेईं साब, हम बारगाम जाना नेई माँगता। उदर हमारा खिटखिट हो गया मेम साब के साथ, तो क्या करेंगा? हम एक बार एक साब के साथ दिल्ली गया, एक वीक (week) में मेम साब के साथ हमारा खिटखिट हो गया ओ बोला—दिल्ली में किदर जायेंगा। हम बोला—हम भूका मरेंगा, फ़ुटपाथ पर सोयेंगा, पन तुमारे घर नौकरी नेईं करेंगा। हमारा जातवाला उदर कोइ था नेईं, हमारे गले का दागीना[2] हमने बेचा तो इदर आया।

साहब : किसी और के यहां नौकरी कर लेती वहां।

आया : हमको तो कई लोग बोलता था साब, तुम दागीना न बेचो, तुम हमारे संग रेयो, तुमको ऐश करायेंगा। कोई तलकीफ[3] नेईं होने देंगा। पन हम बोला—हम भूका मरेंगा, फ़ुटपाथ पर सोयेंगा, पन दिल्ली में नेईं रयेंगा।

---

[1]वांदा नहीं हुआ = कमी नहीं हुई; [2] दागीना = गहना; [3] तकलीफ़ = तलकीफ़

[साहब कुछ क्षण उसकी ओर देखते हैं, फिर कंधे झटकाकर कलम उठा लेते हैं।]

साहब : (हंसकर) तुम शादी कर लो आया, मैंने कई बार पहले भी कहा है, तुम्हारे भेजे कि सब गर्मी दूर हो जायगी।

आया : हमको मांगता बी नेईं शादी। हमारा जात का बोत सुन्दर छ्वाय लोग हमसे शादी बनाने को मांगता था, पन हमको नेईं मांगता शादी। हमारा दो दिन में खिटखिट होने लगेंगा।

[फिर मेज़ पर झुक जाती है, हाथ फैलकर साहब के हाथों के पास पहुँच जाते हैं, आंखों में नमी और स्वर में मृदुलता आ जाती है।]

आया : हमको तो तुमारे माफ़क खत्री माँगता है साब, हलकट नेईं माँगना। हम तो तुमारे पास आया था। मेम साब बोला था—छोकरा चला जायँगा। हम इदर रेता था तो तुमको कोई तलकीफ़ नेईं होता था।

साहब : (कनखियों से क्षण भर के लिए उसके वक्ष को देखते रहते हैं जो मेज के कोने को दबाये जा रहा है, फिर हँस पड़ते हैं।) तुम यहाँ रहती, तो हमारा भी भेजा बराबर न रहता।

आया : तुम कइसा है साब !

साहब : (पूर्ववत् अपना काम आरम्भ करते हुए) लो अब जाओ। खाना वाना खाओ, फिर जाना।

आया : तुम यहीं रयेगा साब ?

साहब : (लिखते हुए) हाँ।

आया : साब, हम नीचू बाथरूम में बाथ लेने को माँगता है। इतना गर्मी है ! हमारे पास दूसरा साड़ी है।

साहब : (पूर्ववत् काम करते हुए) तौलिया किधर से लेगी ?

आया : टोवल है साब।

साहब : जाओ नहाओ।

(आया मुस्कराती हुई चली जाती है।)

साहब : (अपने आपसे) यह आया भी खूब है। (नौकर को आवाज़ देते हैं।) जगदीश, जगदीश !

(नौकर आता है।)

साहब : देखो वह आया नीचे नहाने गयी है। खाना यहीं खायेगी। दिल-फेंक किस्म की औरत है। बातों में न लगे रहना, खाना-वाना खिलाकर सारा काम निमटा देना।

[कलम छोड़कर हाथों की अंगुलियाँ मरोड़ते हुए अँगड़ाई लेते हैं।]

साहब : (अपने आपसे) मोटा नईम और लम्बा दीवान दोनों यों ही तो इसके लिए नहीं मरते।

(आया दरवाजे से झांकती है।)

आया : साब !

साहब : कहो ?

आया : कोई साबन का टुकड़ा हो तो देओ, साब !

साहब : साबुन ?

आया : पसीना बोत है साब। कपड़ा धोने का हो तो बी चलेंगा।

साहब : (नौकर को आवाज देते हैं) जगदीश !

जगदीश : (पृष्ठभूमि में) जी !

साहब : उधर हमारी साबुनदानी में साबुन का छोटा टुकड़ा पड़ा है, वह लाओ।

जगदीश : (पृष्ठभूमि में) जी लाया।

आया : साब इस टाइम धूप बोत है। हम थोड़ा टाइम इधर बालकोनी में आराम करलूं? साँझ को हम चला जायेंगा।

साहब : (पूर्ववत काम करते हुए) अच्छा!

(जगदीश साबुन का टुकड़ा लाता है।)

साहब : आया को दो। (आया से) चलेगा?

आया : चलेंगा साब, हम अभी बाथ लेकर आता है।

[चली जाती है, दीर्घ-निश्वास भरकर साहब उठते हैं।]

साहब : देखो जगदीश, हम अभी दफ्तर जाते हैं।

जगदीश : पर साहब, खाना...

साहब : खाना हम वहीं खा लेंगे। तुम शाम तक सब काम खत्म कर डालना। कल दीवाली है, कल तक कुछ बाक़ी न न रहे। आया के साथ बातों में न लगे रहना।

[चले जाते हैं। पर्दा कुछ क्षण के लिए गिरता है, फिर उठता है, घड़ी में बारह बज रहे हैं। साहब जल्दी-जल्दी प्रवेश करते हैं और आते ही नौकर को आवाज़ देते हैं।]

साहब : जगदीश!

जगदीश : (पृष्ठभूमि में) जी, आया।

साहब : एक पानी का गिलास लाओ।

[कनखियों से बारजे की ओर देखते हैं कि वहां कोई जीवन का चिन्ह है कि नहीं। फिर-फाइलों में ढूढ़कर एक फाइल निकालते हैं। नौकर पानी लाता है।]

साहब : (पानी का गिलास लेते और खिसियानेपन से हँसते हुए)

जल्दी में यह फाइल यहीं रह गई थी। (पानी का घूँट पीते हैं) खाना खिला दिया आया को ?

[फिर बारजे की ओर देखते हैं कि उधर से कोई उत्तर आता है या नहीं ?]

जगदीश : जी, वह तो चली गयी।

साहब : (चौंककर) चली गयी ?

जगदीश : उसी समय, आपके जाते ही।

साहब : क्यों ?

जगदीश : ज़रा सा तेल माँगने ऊपर आयी थी। आपको न देख कर बोली—साहब किदर गया ? मैं बोला—दफ्तर। बोली—कब आयेंगा ? मैंने कहा, मुझे मालूम नहीं। बस, उसी समय चली गयी। न वह नहायी, न उसने खाना खाया। यह रुपया दे गयी है। कहती थी, हम समझता था साहब घर रयेंगा। मैंने कहा, खाना तो खाती जाओ। बोली—हमको नेईं माँगता है खाना। जाते जाते कहती थी—यह कइसा साब है !

[साहब गिलास हाथ में लिये बारजे के शून्य में तक रहे हैं—पर्दा गिरता है।]

बतसिया

पात्र

बीएट्रिस (बतसिया)

विवियन टाइल्ज़

कोनी

जान

लूकस

एडविन

पादरी

जज

रीडर, वकील, चपड़ासी आदि

पहला अंक

[पर्दा जिस कमरे में उठता है वह काफ़ी खुला है, पर सामान की अधिकता के कारण भरा भरा सा दिखायी देता है।

दायीं दीवार में दर्शकों की ओर को एक दरवाजा है। दीवार के मध्य एक बड़ी, किन्तु पुरानी मेज़ लगी है जिसके दोनों ओर पुस्तकोंसे भरे रैक रखे हैं। पीछे ऊँची पीठ वाली कुर्सी है। कुर्सी के दोनों ओर शीशे की दो पुरानी अलमारियाँ हैं जिनमें कानून की बड़ी बड़ी पुस्तकें क़रीने से रखी हैं। मेज़ के साथ चार पाँच और कुर्सियाँ आगन्तुकों के लिए रखी हुई हैं। उधर की अलमारी के पीछे बायीं दीवार में एक दरवाज़ा है जो जान के शयन-गृह को जाता है।

सामने की दीवार में एक अंगीठी बनी है, जिस पर पीतल के नुमाइशी खिलौने रखे हैं, जिन्हें इस समय बीएट्रिस झाड़न से मल-मल कर चमका रही है। इन नुमाइशी खिलौनों के अतिरिक्त पीतल की दो इस्त्रियां भी अंगीठी पर रखी हुई हैं, ऐसा लगता है कि खिलौनों की तरह ये भी नुमाइशी हैं, क्योंकि उनकी चमक-दमक खिलौनों से किसी तरह कम नहीं।

अंगीठी के ऊपर स्वर्गीय मिस्टर टॉटनहेम टाइल्ज़ और मिसेज़ विवियन टाइल्ज़ के बड़े फोटो टंगे हैं। अंगीठी के नीचे पुराने फैशन का सोफ़ा सेट और कुर्सियां पड़ी हैं। सेट के साथ बाहर निकली हुई एक तिपाई है, जिस पर पीतल का चमचम करता हुआ एक फूलदान है।

अंगीठी में दोनों ओर दरवाजे हैं जो क्रम से पिछली ओर के बागीचे और कोनी के शयन-गृह को जाते हैं। किचन भी, क्योंकि कोठी के पीछे बना है, इसलिए पिछली ओर जाने वाला दरवाज़ा किचन को भी जाता है।

बायीं दीवार में खाने की मेज़ लगी है जिसके साथ कुर्सियाँ रखी हैं जो इस समय मेज के नीचे हैं और केवल उनके पृष्ठ-भाग दिखायी दे रहे हैं। दोनों कोनों में दो स्टूल हैं जिन पर बिजली के पंखे रखे हैं।

डाइनिंग टेबल के ऐन ऊपर दीवार पर स्वर्गीय टॉटेन-हेम टाइल्ज़ के लड़के जान टाईल्ज़ का बड़ा फोटो टंगा है जो उसने अपने वकालत के गाउन में खिंचवा रखा है।

कमरे की दीवारों का रंग हल्का गुलाबी है। दरवाजों के पर्दों के कपड़े, कुर्सियों की गद्दियां, मेज़, स्टूल और पंखों के कवर भी दीवार के रंग से मैच करते हुए हल्के गुलाबी रंग की पापलिन के हैं।

गुलाबी रंग का यह बाहुल्य अनाभ्यस्त आँखों पर ऐसा प्रभाव डालता है कि सिर चकरा सा जाता है और कुछ ही क्षण कमरे में बैठने के बाद इस बात का पता चल जाता है कि कमरे के सामान और रंग का चुनाव जिसने भी किया है वह उतना पढ़ा-लिखा नहीं। और यदि पढ़ा-लिखा है तो उसकी रुचि इतनी सुसंस्कृत नहीं।

बीएट्रिस युवती नहीं, पर अधेड़ भी नहीं, पहली दृष्टि में उसकी वयस का अनुमान नहीं किया जा सकता। ऐसी अपने आपको लिये दिये रहती है वह। रंग उसका श्याम है, पर चहरे के नक्श तीखे हैं। छींट की स्कर्ट और ब्लाउज़ पहने है। बाल सफाई से बने हैं। सस्ते क्लिप उनमें लगे हैं जिनकी सहायता से घुंघर डालने का प्रयास भी किया गया है।

पर्दा उठाने के क्षण भर पश्चात् बाहर से जान की आवाज़ आती है।]

जान : (अँग्रेज़ी लहजे में) बटेसिया।

[अर्थात् बतसिया—जान हिन्दुस्तानी मां और एंग्लो इण्डियन बाप का बेटा है और उसका उच्चारण प्रायः इस बात की चुगली खाता है।]

बीएट्रिस : (चौंकती है पर कोई उत्तर नहीं देती।)

(जान फिर आवाज़ देता है तनिक निकट से :)

जान : बतसिया

[बतसिया हल्की सी झुंझलाहट से कंधे हिलाती है, पर उत्तर नहीं देती। हाथ में पीतल के शेर को और भी ज़ोर से रगड़ने लगती है। उसे रखकर गुलदान को उठाकर मलने लगती है। अंगीठी से गुलदान तक उसके एक पग ही से उसका क्रोध और झुंझलाहट प्रकट लक्षित हो जाती है।

जान तेज़ी से प्रवेश करता है। छब्बीस-सत्ताइस वर्ष का गोल-मटोल युवक है। मिस्टर टाइल्ज़ और मिसेज़ टाइल्ज़ के चित्रों को देखने से पता चलता है कि मां की अपेक्षा बाप पर अधिक है। किंतु उसके पिता की आंखों में जो तीक्ष्णता है, उसका जान के यहां सर्वथा अभाव है। वह मां बाप के लाड़-प्यार में पले ऐसे युवकों में से है जिनका दिमाग़ अपेक्षाकृत कुंद और ज़बान तेज़ होती है और जो अपने आपको सब से चतुर और बुद्धिमान समझते हैं। नौकर के साथ जिनका व्यवहार अपने माता पिता की अपेक्षा अच्छा नहीं होता और जो उनके ज़रा से विरोध से चिढ़ जाते हैं।]

जान : (क्रोध से) बटेसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

जान : (उसकी बात को सुना-अनसुना करके अपनी रौ में) ममी कहाँ हैं ?

बीएट्रिस : डेविड साहब के यहाँ गयीं थीं, अभी आयी हैं, उधर किचन में हैं।

जान : (जाने लगता है फिर उसके पास सहसा रुक कर) तू जवाब क्यों नहीं देती रे, इतनी आवाज़ें मैंने दीं, कानों में क्या रुई ठोंस रखी है तूने ?

(बीएट्रिस उत्तर नहीं देती, गुलदान साफ़ किये जाती है।)

— : आज से सुन ले, जब हम आवाज़ दें तो फ़ौरन जवाब दिया कर।

[तेज़ तेज़ जाने लगता है, पर तिपाई की बाहर को निकली टाँग से उलझ कर गिर पड़ता है। जल्दी जल्दी उठता है और मुड़कर और भी झल्लाये हुए स्वर में:]

— : सुना बटेसिया ! (अपनी बात की अहमीयत को जताते हुए) हूँ—ऊं—ऊं !

(फिर मुड़ कर दरवाजे में गायब हो जाता है)

बीएट्रिस : (मुंह चिढ़ाते और उसकी नकल उतारते हुए) सुना बटेसिया हूँ—ऊं—ऊं, (मुंह बिचकाकर) सुन लिया ! सुन लिया ! और तुम भी सुन रखो कि हमार नाम बीएट्रिस है, बीस बार कहा कि हुजूर हम बतसिया नहीं रहे, बीएट्रिस हो गये हैं, पर सुनते ही नाहीं, जब बुलाइत हैं, नाम बिगाड़ के बुलाइत हैं, कूकर का सिंहासन पर काहे न बैटाये देब, ऊ कूड़े में मुँह का मारब न छोड़ब।

एल.एल. बी. होय गये तो काव भवा अहै तो आखिर वहै चमारिन के बिटवा।

[फिर गुलदान को जोर जोर से रगड़ने लग जाती है। मेहतरानी हीरा बाहर झाड़ू देते देते आती है, निम्न-लिखित सम्वाद में हीरा चुपचाप कमरे का फर्श (जिस पर दरी बिछी है) साफ किये जाती है।

हीरा की आयु भी बीएट्रिस जितनी है, अंग ढीले ढीले हैं, हर बात के उत्तर में निरर्थक दांत निपोर देती है।]

हीरा : के से बात करति हो अकेले अकेले ?

बीएट्रिस : (गुलदान को मलना छोड़ कर) देख हीरा, अगर कोई तेरा नाम बिगाड़ कर हीरिया कर दे तो तुझे बुरा न लगेगा।

हीरा : काहे नहीं, काहे नहीं......पर हमका तो सबै लोग इसी नाम से बुलाइत हैं।

बीएट्रिस : पर बुरा तो लगता है।

हीरा : (दाँत निपोरते हुए) काहे नहीं, काहे नहीं !

बीएट्रिस : कितनी बार कहा है कि हमारा ठीक नाम बुलाने को चाहिए, फिर वही (नकल उतार कर) बटेसिया बटेसिया !

हीरा : हम तो कबहूँ बतसिया नहीं कहिति हैं, जबै बुलाइत हैं बतासो बुलाइत हैं।

बीएट्रिस : पर हमारा ठीक नाम तो बीएट्रिस है। बतासो थे जब अपने गाँव में थे; बतसिया थे जब छुटपन में इनके यहाँ काम करते थे, पर जब से फ्रेंक साहब ने हमको क्रिश्चियन बनाया, हमें पढ़ाया-लिखाया तो हमारा वह गँवारू नाम भी बदल दिया। कोई बुला तो जाता फ्रेंक साहब के रहते हमको बतसिया।

हीरा : काहे नहीं, काहे नहीं !

बीएट्रिस : हमारे गाँव वाला, हमारी पहली जात वाला कोई हमको बतसिया बुलाये तो हमें बुरा न लगे, पर ये लोग पढ़े-लिखे होकर, क्रिश्चियन होकर बतसिया बुलाते हैं, गुस्सा क्यों न आये।

हीरा : काहे नहीं, काहे नहीं !

[बतसिया फिर गुलदान को जोर जोर से रगड़ने लगती है, हीरा चुपचाप फर्श बटोरती है।]

बीएट्रिस : (गुलदान साफ़ करना छोड़कर धीमे स्वर में।) फ्रैंक साहब की क्या बात है हीरा, हमको बहुत चाहते थे, हम जब छुटपन में गाँव से आये तो अम्मा यहीं काम करती थीं, तब सब हमें बतसिया बुलाते थे, पर बड़े साहब के मरने पर मेम साहब से हमारी अम्मा का पटी नहीं, तब कई जगह घूम कर अम्मा फ्रैंक साहब की खानसामिन हो गयी। फ्रैंक साहब ने हमसे बातचीत की तो बड़े खुश हुए। हमारी माँ से बोले कि इसको बरतन भाँडे मलने पर मत लगाओ। हम इसे पढ़ाये लिखायेगा, अपना सेक्रेट्री बनायेगा। अम्मा मर गई तो साहब ने दूसरी खानसामिन रख ली, पर हमें उस काम पर नहीं रखा।

हीरा : काहे नहीं, काहे नहीं !

[कुछ क्षण चुपचाप दरी की सिलवट निकालती है, बीएट्रिस एक कुर्सी की बाँह पर बैठी बड़े धीरे धीरे गुलदान मलती है।]

बीएट्रिस : फ्रैंक साहब ने हमको क्रिश्चियन बनाया, हमारा नाम बीएट्रिस रखा। हम तीन जमात पढ़े थे कि साहब का बिज़नेस फेल हो गया, नहीं तो हम जाने कितना पढ़ता...

अगर खानसामिन कभी हमें बतसिया बुलाती तो साहब डाँट देते, कभी कभी कहते बीएट्रिस तुम तो सचमुच बीएट्रिस हो, दाँते की बीएट्रिस !

हीरा : दाँते कौन ?

बीएट्रिस : कोई जर्मन पोइट था ।

हीरा : पूईट ।

बीएट्रिस : शायर, कवि । बीएट्रिस उसकी चहेती थी । फ्रैंक साहब कहते थे कि तुम बीएट्रिस जैसा सुन्दर है । हमें टाइप करना सिखाते रहे । उनका बिज़नेस फ़ेल न हो जाता तो हम अब तक टाइपिस्ट हो गया होता और कभी ऐसे लोगों के घर काम नहीं करता ।

हीरा : (जो इस बीच में कमरा साफ़ कर चौखट में चली गयी है ।) काहे नहीं, काहे नहीं !

[अन्दर से विवियन और जान के बातें करते हुए आने का स्वर सुनायी देता है । हीरा तत्परता से चौखट के बाहर झाड़ू देने लगती है ।]

विवियन : अब यह तुम दोनों भाई-बहन तय कर लो... ...कोनी को मैंने कई बार समझाया है......

[विवियन बातें करती हुई प्रवेश करती है । वयस पैंतालिस वर्ष के लगभग है, पर शक्ल से पचास वर्ष की लगती है । मँझला नाटा कद, रङ्ग बीएट्रिस से भी काला, छींट का फ्राक और चप्पल पहने है । सिर के बाल कटे हैं, अधपके हैं । देखने में वह मालकिन की अपेक्षा नौकरानी अधिक दिखायी देती है ।]

जान : लेकिन ममी कोनी तो लूकस से.........

विवियन : दूसरा कोई चारा नहीं, यह मकान......

[सहसा यह देखकर कि बीएट्रिस उनकी बातें सुन रही है चुप हो जाती है और उसकी ओर मुड़ती है और कहती है।]

— : क्यों बतसिया तुम से क्या कहा था ?

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

विवियन : नाम तो तेरा सुन लिया, पर तुझ से कहा क्या था ? कोनी कहाँ है ? गयी नहीं तू उसे बुलाने।

बीएट्रिस : लूकस साहब के उधर हैं। आती हैं।

विवियन : भाग कर बुला ला उसे।

बीएट्रिस : बहुत अच्छा मेम साब। पर हमारा नाम बतसिया नहीं, बीएट्रिस है।

(चली जाती है।)

विवियन : मैं जानती हूँ, कोनी लूकस से प्रेम करती है। लेकिन लूकस के पास है क्या .....बेउंचन खाट, सोये सो पिंडुरी खाये।

(कौच के बाजू पर बैठ जाती है।)

जान : वह एडवोकेट है। ज़रा उसकी प्रेक्टिस चली कि मोटर और बंगला रख देगा।

विवियन : जैसे तुम्हारी चल गयी। छै महीने हुए लाइसेंस लिये और एक केस तक नहीं आया।

जान : अब फिर तुमने मुझे कोसना शुरू किया मेमी, इस कबाड़खाने में कौन मुवक्किल पैर रखने आयेगा...... यह डाइनिंग टेबल, ये कुर्सियाँ, ये बिजली के बेकार पंखे, ये अंगीठियाँ, ये इस्त्रियाँ, यह मेडिसिन बाक्स,

ये हाथी, घोड़े, यह सब कूड़ा कबाड़ा.........यह किसी वकील का दफ़्तर है या किसी कबाड़ी का गोदाम। कितनी बार कहा कि हमारे लिए एक कमरा अलग कर दो कि ढंग से कुछ प्रेक्टिस करें। और नहीं तो यह डाइनिंग टेबल और ये बेकार चीजें ही उठवा दो......पर तुम्हें तो ज़िद है कि पापा ने जो चीज़ जिस जगह भूल से भी रख दी वह वहाँ से सुई बराबर भी इधर-उधर न हटेगी......भला दुनिया में इस सेन्टीमेन्टैलिटी*से काम चलता है। पापा से हमें कम प्यार न था, पर इन पुरानी चीज़ों को, इन बेकार पंखों और बेकाम अंगीठियों को सम्हाल कर रखने से उनका अधिक नाम होगा या मेरे मशहूर एडवोकेट बनने से। अब यहाँ खाना खायें, आये-गये को बैठायें या मुवक्किलों से माथा फोड़ें।

विवियन : (व्यंग्य से मुँह बिचका कर) मुवक्किलों से (बेजारी से एक 'उंह' करती है) जैसे सारा दिन मुवक्किलों का तांता ही तो लगा रहता है यहाँ। छः महीने लाइसेंस लिये हो गये और मरे एक मुवक्किल की शकल दिखायी नहीं दी।

[उठ कर बीएट्रिस का झाड़न उठा लेती है और गुलदान पोंछ कर अपनी जगह रखती है।]

जान : मुवक्किल नाम देखते हैं, नाम न हो तो शान देखते हैं, मोटर और चपरासी देखते हैं। एक दो एलसेशियन कुत्ते दरवाजे पर बँधे हों तो और भी रोब पड़ता है।

विवियन : (अंगीठी पर रखी हुई इस्त्रियों को साफ़ करती है।) ये सब

* भावुकता

जो इतने बड़े वकील एडवोकेट हैं, वे मुवक्किलों पर रोब डालने के लिए भेड़िये ही पालते होंगे।

जान : (उसके पीछे जाता है।) उन लोगों का बड़ा नाम है। मैं नये वकील की बात करता हूँ। मैं सच कहता हूँ, कुत्ता जितना ही उन्हें भगायेगा उतना ही वे खिंचे आयगे।

विवियन : पर कुत्ता भगायेगा किसे ? कोई मुवक्किल आयेगा तभी न ? छः महीने में कितने मुवक्किल आये हैं, जिन्हें कुत्ता भगाता और डेविड ने धमकी दी है कि इस महीने रुपया न मिला तो मकान कुर्क करा लेगा।

जान : एक ही पाजी आदमी है डेविड।

विवियन : उसको गाली देने से क्या लाभ। उसने तो वक्त पर रुपया दिया।

[इस्त्रियों को छोड़, कोने में जा, दायें पंखे का कवर उतार कर झाड़ती है। जान भी उसके पीछे पीछे जाता है। नौकरानी सी दीखने पर भी विवियन टाइल्ज़ की गतिविधि में एक अजीब सा हठ और आत्म-विश्वास है। जान ऐसे लाड़ले बच्चे की तरह उससे चिमटा है जिसकी नालायकी से तंग आकर माँ ने उसकी बात पर कान देना छोड़ दिया हो।]

जान : रुपया दिया। जानता हूँ जैसे रुपया दिया उसने...... उसकी आंख पहले से लगी थी इस मकान पर......अपना तो एक पैसा नहीं फँसाया और तुम्हें कर्ज दे दिया कि तुम फ्रैंक की उस दिवालिया कम्पनी में रुपया लगा दो। मैं तो पहले ही से कहता था कि फ्रैंक सब रुपया खा उड़ा जायगा, पर तुम उसके गुण गाया करती थीं।

विवियन : पर फ्रैंक की कम्पनी ही में तो सारा रुपया नहीं लगा। पढ़ाई और लाइसेंसों में भी लगा है। फ्रैंक की कम्पनी में तो दो हज़ार रुपया लगा और हम पर तो दस हज़ार का कर्ज है। छः हज़ार तो तुम्हारी पढ़ाई पर ही लगा।

(कवर एक ओर रख पंखा झाड़ती है।)

जान : खाक लगा मेरी पढ़ाई पर। असल और व्याज मिलाकर जाने कितना बना लिया है।

विवियन : मैं तो लाख टोनी से कहती थी कि तुम्हें भी अपने काम में लगाये, पर उसे तो अपनी मिट्टी से चिढ़ थी (मुंह चिढ़ाते हुए) उसका लड़का तेल कोयले का काम न करे। जज, बैरिस्टर हो! आज तुम फोरमैन होते तो दस हज़ार कर्ज के बदले दस हज़ार बैंक में होता। मकान बेचने के बदले एक और ऐसा मकान खड़ा हो जाता।

(दायें पंखे का कवर चढ़ा बायें का उतारती है।)

जान : (उसके पीछे पीछे जाकर) मेरी प्रेक्टिस चल लेने दो फिर तुम्हें पता चलेगा कि पापा ने ग़लत किया या ठीक।

विवियन : (कवर झाड़ते हुए) चल गयी तुम्हारी प्रेक्टिस !

जान : अब ममी हथेली पर सरसों तो नहीं जमती।

विवियन : (पंखे का कवर छोड़ क्रोध से) हथेली पर न सही, पर क्यारी में तो जमनी चाहिए, तुम्हारी तो क्यारी छोड़ खेत में भी नहीं जमती। तुम्हीं कहा करते थे, एडवोकेटों के चपरासी तक छोटी अदालतों के वकीलों से ज्यादा मशहूर होते हैं, हाईकोर्ट का लाइसेंस लेते ही रुपया पानी की तरह बरसने लगेगा और डेविड का रुपया महीनों नहीं दिनों में उतर जायगा— एडवोकेट...एडवोकेट...

एडवोकेट... तुम सारा दिन चिल्लाया करते थे और अब एडवोकेट बने तुम्हें छः महीने हो गये हैं, मुआ केस तो क्या मिलता कोई झूठी सच्ची सलाह तक लेने नहीं आया। तुम इसी कमरे को रो रहे हो, अगर कोनी अपने हठ पर अड़ी रही, तुमने उसे न समझाया तो सिर पर यह छत भी न रहेगी। और तुम्हें अपनी वकालत आसमान की छत तले चलानी होगी।

[फिर पंखे की सफाई करने लगती है। जान निराश भाव से बाहें लटकाये कमरे में घूमता है। मिसेज़ टाइल्ज़ पंखे का कवर चढ़ा कर मुड़ती है।]

— : देखो वह बतसिया वहाँ जाकर मर गयी। कोनी को बुलाकर समझाओ। एडविन तो अभी आ जायगा। मैं उसे चाय पर बुला आयी हूँ। मुझे अभी कबाब और सेंडविच तैयार करने हैं। तुम खुद लूकस के यहाँ जाओ कोनी को समझाओ और बतसिया को किचन में भिजवाओ।

[शेष सफाई को बीएट्रिस के लिए छोड़ कर चली जाती है।]

जान : (कुछ क्षण चुपचाप कमरे में घूमता है, फिर दरवाजे पर जा कर आवाज देता है।) बटेसिया, बटेसिया!

[कोई आवाज नहीं आती...कमरे में एक चक्कर लगाकर फिर दरवाजे जाकर आवाज़ देता है।]

— : बटेसिया बटेसिया!

बीएट्रिस : (बाहर से दरवाजे से आते हुए) हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

जान : (अपनी परेशानी में) कोनी नहीं आयी।

बीएट्रिस : आ रही हैं, लूकस साब के साथ बैठी है, अभी आती हैं।

जान : तूने कहा नहीं जल्दी आने के लिए।

बीएट्रिस : हुजूर मैंने तो बहुत कहा पर मिस साब लूकस साब से बात कर रही थीं।

(फिर सफाई करने लगता है।)

जान : ममी तुम्हें किचन में बुला गयी हैं।

[विवियन हाथ में एक ढकी ट्रे लिए आती है और उसे खाने की मेज़ पर रखती है।]

विवियन : अब सफाई रहने दे बतसिया, एडविन साहब आने वाले हैं और नाश्ते का सामान तैयार नहीं हुआ। उधर किचन में जाकर सेंडविच बना डाल टमाटरों के, एडविन को टमाटरों की सेंडविच बहुत पसंद हैं।

(बीएट्रिस कोई उत्तर नहीं देती।)

— : सुना नहीं बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

विवियन : हां हां सुन लिया तेरा नाम ! अब जाकर सेंडविच तैयार कर डाल जल्दी से। (जान से) जान तुम अभी गये नहीं। कोनी को जाकर समझाओ अगर......

जान : मैं कहता था कि ममी तुम एक बार फिर सोच लेतीं कोनी लूकस से मुहब्बत करती है, उस मोटे मुटल्ले, काले रंडुवे, एडविन से कितने दिन बसर होगी उसकी। पापा जिन्दा होते तो कोयलों की जिस कालिख से वे अपने लड़के को बचाना चाहते थे, उसमें अपनी लड़की

को कैसे डालते ? तुम्हें याद होगा एडविन ने पापा के जीते जी एक बार कोनी से शादी करने की इच्छा प्रकट की थी। पापा ने उसका आना बंगले में बंद कर दिया था। एडविन जब शाम को अपने काले कलूटे शरीर पर मिट्टी के तेल और कोयलों की कालिख लिये घर आयेगा तो क्या कोनी उसे पसंद करेगी।

विवियन : तब यह मकान गिरवी न था और तुम्हारे पापा तुम्हारे जज बनने के सपने देखते थे।

जान : (अपनी बात पर ज़ोर देते हुए) सोचो वह कोयलों की कालिख और तेल में सना आयेगा तो...

विवियन : तुम्हारे पापा भी तो तेल और कोयलों से सने आते थे, क्या मैं उन्हें घर से बाहर निकाल देती थी।

जान : पर ममी कोनी में और तुममें फर्क है। तुम कोयलों की धूल में पली और कोनी के निकट पापा ने एक ज़र्रा तक नहीं फटकने दिया।

विवियन : वह धूल से प्यार करना सीखे या भूखों मरे। वह लूकस से शादी करेगी तो वही नहीं हम सब भूखों मरेंगे और एडविन डेविड का कर्ज ही न उतारेगा, वकालत में भी तुम्हारी मदद करेगा। तुम साल भर भी बिना मुवक्किल के बैठे रहोगे तो चल जायेगा।

जान : लेकिन ममी......

विवियन : (झुंझलाकर) लेकिन ममी, लेकिन ममी करने से कहीं अच्छा है कि लूकस के यहां जाकर कोनी को और उसको समझाओ।

जान : तुम्हारी मर्जी लेकिन......

[कंधे झटकाता चला जाता है, बीएट्रिस किचन से आती है।]

बीएट्रिस : मेम साब, वहाँ सैंड तो है नहीं, संडविच काहे का बनेगा।

विवियन : सैंड।

बीएट्रिस : एस ए एन डी=सैंड। सैंड का मतलब रेता।

विवियन : रेता का क्या होगा ?

बीएट्रिस : आप ही तो बोला कि टमाटर का सैंडविच बनाना है। सैंड के बिना कैसे बनेगा ?

विवियन : तेरा फ्रैंक साहब रेता का सैंडविच खाता था, और कहती है (मुंह चिढ़ाते हुए) मेरा नाम बीएट्रिस है, बांडी विस्तुइया बाघे से नजारा मारे। चल उधर मेरे साथ !

बीएट्रिस : पर मेम साहब हम खानसामिन थोड़ी था। हम दफ़्तर में......

विवियन : चल चल दफ़्तर की चाची......

[उसे कंधे से धकेलती ले जाती है। कोनी भागी भागी आती है और कौच में गिरकर सिसकने लगती है। उसके पीछे पीछे जान और लूकस आते हैं। लूकस आकर कोनी के पास बैठता है। हाथ से उसकी पीठ थपथपाता है।]

लूकस : मैं कहता हूँ, हम दोनों की ज़िन्दगी तबाह करने से ममी के हाथ क्या आयेगा।

जान : दोनों की नहीं तीनों की, तुम्हारा ख्याल है एडविन इस घर में पाँव रखेगा तो मैं इसमें रह पाऊँगा। यह सब अंकल डेविड की बदमाशी है। वह ऊपर से चाहे लाख मिनमिनाता हो, उसे पापा के गोरे रंग से, उनकी नीली

आँखों से, इस कोयले की कालिख से ऊपर उठने की कोशिश से……उनकी हर बात से नफ़रत थी। वह न चाहता था कि पापा मुझे पढ़ायें लिखायें और वकील एडवोकेट बनायें। वह जब आता था पापा से मुझे भी वर्कशाप में भर्ती कराने को कहता था। हमें फिर उसी दलदल में खींचकर उसे जितनी खुशी होगी, वह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

लूकस : लेकिन यह एडविन कहाँ से आ टपका……अंकल टोनी के रहते उसे कभी बँगले के अन्दर तक आने का भी हौसला न होता।

(कोनी सिसकती है, लूकस उसकी पीठ थपथपाता है।)

जान : मुझे पूरा विश्वास है, अंकल डेविड ने उसके दिल में यह ख्याल पैदा किया होगा कि पापा तो अब रहे नहीं, हम कर्ज़दार हैं और ममी अब मान जायेगी।

लूकस : लेकिन कोनी और उसकी उम्र में बीस साल का फर्क है, उसे खुद ही इतनी समझ चाहिए ………

जान : समझ उसके भेजे में हो तब ना (कोनी सिसकती है।) कोनी तुम क्या सिसके जा रही हो ? इस मुसीबत से निकलने की कोई तरकीब सोचो, सिसकने से क्या होगा ?

कोनी : (लगभग रोते हुए) लूकस तुम चलो, हम दोनों शादी कर लें।

लूकस : चलो, मुझे एतराज नहीं। पर ममी कहती हैं ठीक, मैं अभी कुछ कमाने के लायक नहीं हुआ।

कोनी : मैं नौकरी कर लूंगी।

लूकस : नौकरी से क्या होगा ?

जान : पचास-साठ से ज्यादा तुम्हें कौन देगा। मैट्रिक भी तो कर नहीं पायीं तुम।

लूकस : और फिर तुम्हारे नौकरी करने से हम दोनों का मामला तो सुलझ जायगा, मकान की कुर्की का कैसे सुलझेगा ? यह तो खुदगर्ज़ी होगी। फिर तुम नौकरी करोगी तो मेरी प्रेक्टिस क्या चलेगी।

कोनी : चल गयी तुम्हारी प्रेक्टिस !

जान : सुन लिया, इन माँ बेटियों की नज़र में हमारी कोई वक़अत नहीं। इनकी नज़र में हम निरे बूदम-बेदाल हैं ! इन्हें कौन समझाये कि हम क्या कर सकते हैं। दो हमें कोई केस और देखो हमारे जौहर। ऐसी दलीलें दें कि सामने का वकील ही नहीं जज तक भी सिर कुरेद कर रह जाय !

लूकस : वह जिरह करें कि दूसरी पार्टी के गवाहों की धज्जियाँ उड़ जायँ।

जान : बस, एक अच्छा सा केस मिल जाय, फिर देखो मुवक्किल कैसे हमारे बँगले का रास्ता पूछ पूछ कर आते हैं। खुदा कसम, एलसेशियन रखूंगा जो बिना डराये उन्हें ऊपर न आने दे।

लूकस : (जैसे उसे अचानक कुछ सूझ गया हो, हाथ पर हाथ मार कर) लो भई केस तो ऐसा मिल सकता है कि शहर भर में धूम मच जाय।

जान : कहाँ, कैसे ?

लूकस : तुम्हारा मकान भी हाथ से न जाय, डेविड को भी उसकी शरारत का मज़ा मिल जाय और यह साला

एडविन भी ऐसा सीधा हो कि ज़िंदगी भर फिर इस बंगले की तरफ मुंह न करे।

जान : तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है।

लूकस : मज़ाक नहीं, बस कोनी ज़रा मदद करे तो मैं कहता हूँ प्राविंस (Province) भर में हमारे डंके बजने लगें।

कोनी : मैं क्या मदद करूँ ?

जान : यह क्या कर सकती है ?

लूकस : यह सब कुछ कर सकती है, यह हमारे लिए एक बहुत बड़ा मुकदमा ? ममी के लिए दस हज़ार रुपया, जिससे वे डेविड का कर्ज़ उतार दे, तुम्हारे लिए प्रेक्टिस चलाने को कुछ पूँजी और मेरे लिए......मेरे लिए मेरे जीवन का स्वप्न, यह स्वयं......

कोनी : (अतीव उत्सुकता से) लूकस पहेलियां न बुझवाओ।

लूकस : (सहसा उसकी ओर मुड़कर) एडविन तुम्हें कैसा लगता है ?

कोनी : मैं उससे घृणा करती हूं।

लूकस : उसकी समझ के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।

कोनी : वह एकदम इडियट (Idiot) है।

लूकस : उसे अगर कुछ नुकसान हो तो तुम्हें बुरा तो न लगेगा।

जान : इसे बेहद खुशी होगी, उस काले कलूटे रंडुवे का यह साहस कि वह कोनी के हाथ की इच्छा करे ! मेरा बस चले तो उसे.........

कोनी : तुम बात तो बताओ क्या सोचा तुमने ?

लूकस : एडविन कारीगर चाहे जैसा हो, पर मूरख वह अव्वल

दर्जे का है, चाहे डेविड के सिखाने से हो या उसकी बासी कढ़ी में उबाल आया हो, पर वह तुम पर बेतरह मरता है। अगर तुम जरा भी उसका हौसला बढ़ाओ तो वह फौरन तुम से अपनी मुहब्बत का ऐलान कर देगा। बस, वह ऐलान करे और तुम मान जाओ।

कोनी : (रूठते हुए) बस, यही तुम्हारी स्कीम है. तुम्हें शरम नहीं आती मेरा मज़ाक उड़ाते। मैं उससे शादी करने के बदले भीख मांगना पसंद करूँगी।

(तिनतिनाती हुई उठकर चली जाती है।)

लूकस : (उसके पीछे जाते हुए) अरे ...रे...रे तुम सुनती तो हो नहीं और ले उड़ती हो। तुम्हें कोई सचमुच तो शादी करनी नहीं उससे। बस, वह प्रोपोज़ (Propose) करे और तुम मान लो।

कोनी : और उस चूहेदानी में फँस जाऊँ।

लूकस : तुमने अपना दिमाग कहाँ गिरवी रख दिया है ? अरे मैं अपने होश हवास रहते तुम्हें जान बूझकर उसके हाथों सौंप सकता हूँ। बात यह है कि इस वक्त ममी को और कोई रास्ता सुझाई नहीं देता। तुम कहीं भागती हो, या मेरे साथ शादी करती हो, या नौकरी करने लगती हो, या कोई और दूसरा कदम उठाती हो तो उससे मामला तो सुलझेगा नहीं, उलटे बिगड़ जायेगा, ममी ज़िंदगी भर के लिए नाराज़ हो जायेगी। इतने लोगों के दुख का कारण बन कर हम सुखी रह सकेंगे, इसमें शक है, इसलिए कहता हूं कि........

कोनी : चुपचाप एडविन से शादी कर लो, वह मकान भी छुड़ा देगा और........

लूकस : अरे नहीं नहीं नहीं........शादी का वादा तुम झूठ-मूठ करो, वह प्रोपोज़ करे तुम मान लो, हम पादरी को बुला कर धूम धड़ाके से सगाई का ऐलान कर दें। जब सगाई हो जाय तो मैं, जान, बतसिया सब मिलकर उसे बतायें कि तुम अव्वल दर्जे की लड़ाका हो, तुम्हारे साथ रहना बर्रों के छत्ते में रहने के बराबर है, हम लोग उसे ऐसा डरायें कि वह घबराकर......मूर्ख तो वह है ही...सगाई तोड़ दे, वह सगाई तोड़े कि जान उस पर दस हज़ार रुपये हर्जाने का दावा कर दे!

जान : (खुशी से कमरे में नाचते हुए) वाह...वा...बा...बावा वा...वा...जाते रहो। क्या तरकीब सोची है। वह सगाई छोड़े और मैं दस हज़ार नहीं, पन्द्रह हजार रुपये हर्जाने का दावा उस मरदूद पर कर दूँ। जब मेरी गर्जदार आवाज़ ..

लूकस : मेरी नहीं हमारी हमारी, क्योंकि मैं भी तो तुम्हारे साथ ही मामले की पैरवी करूँगा।

जान : हाँ हाँ हाँ, जब हमारी गर्जदार आवाज़ हाईकोर्ट में गूँजेगी और हम एक के बाद एक दलील देकर साबित कर देंगे कि उस चमार एडविन ने सगाई तोड़ कर स्वर्गीय टाटनहैम टाइल्ज़ के उज्ज्वल आयरिश नाम पर कितना बड़ा धब्बा लगाया है और कैसे कोनी की ज़िंदगी तबाह की है तो मैं न सिर्फ उससे पन्द्रह हज़ार रुपया ले मरूँगा, बल्कि इण्डियन पिनेल कोड की दफ़ा पाँच सौ के मातहत उस को दो साल की सजा दिलवाऊँगा और तभी ममी को, ममी ही को नहीं, अंकल डेविड को भी और उस चमार एडविन को भी पता चलेगा कि मैं कितना ज़ोरदार वकील...

लूकस : मैं नहीं, हम...हम...

जान : कि हम कितने ज़ोरदार वकील हैं। न सिर्फ़ यह, मैं इस बात का खास इंतज़ाम करूंगा कि इस मामले की रिपोर्ट पेशी दर पेशी अखबारों में छपे। यह मामला जितना सनसनीदार बनाया जा सकता है, बनाया जाय। बस अगर इसे जीत गये तो शहर ही नहीं, प्राविंस भर में हमारा नाम हो जायगा। ल ला ला ल ला ला ला......

[जान कमरे में नाचता हुआ घूमने लगता है। लूकस इस बीच में रेडियो चला देता है जिस पर नाच की ट्यून बजने लगती है और वह और कोनी नाचने लगते हैं। तभी कॉल-बेल बज उठती है। नाच थम जाता है और विवियन और उसके पीछे पीछे बीएट्रिस नाश्ते का सामान लेकर आती है।]

जान : बतसिया, देखो कौन है?

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

जान : (अपने उल्लास में उसकी बात को सुना-अनसुना करके) तुम्हारे दिन फिरने वाले हैं। तुम्हारी तरक्की होने वाली है, अगर तुम ने हमारी मदद की तो......

बीएट्रिस : काहे की मदद?

जान : बतायेंगे, पहले देखो कि बाहर कौन है?

(बीएट्रिस चली जाती है।)

बीएट्रिस : क्या कोनी मान गयी?

कोनी : ममी! (कृत्रिम दुख के साथ अपनी मां से लिपट जाती है।) ममी! लूकस ने इनगेजमेंट तोड़ दी।

जान : मैंने इन दोनों को सारी स्थिति समझा दी है।

लूकस : (कृत्रिम दुख से) और कोई चारा न था ममी। यह ठीक है कि मैं कोनी से जितनी मुहब्बत करता हूँ दूसरा कोई न कर सकेगा। यह भी ठीक है कि कोनी के बिना मेरी ज़िन्दगी काली रात की तरह अँधेरी हो जायगी, मैं शायद सारी उम्र कुंआरा रहूँगा, लेकिन मेरी मुहब्बत स्वार्थी नहीं, अंकल टाइल्ज़ मुझे अपने बच्चों सा प्यार करते थे। मेरे कारण उनके कुटुम्ब पर आंच आये, यह मुझे मंजूर नहीं, कोनी एडविन के साथ सुखी रहे, मैं इसी में सुख मानूंगा।

[बड़े नाटकीय ढंग से 'गुड आफ़टर नून' कहता हुआ चला जाता है। क्षण भर बाद बीएट्रिस आती है।]

बीएट्रिस : हुजूर एडविन साहब आया है।

विवियन : जान, जाओ, तुम उसे ले आओ !

(जान चला जाता है।)

—: तुम जाकर चाय का पानी चढ़ा दो बतसिया !

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

विवियन : हां हां सुन लिया तेरा नाम, जा और जल्दी से चाय का पानी चढ़ा ! और देख एडविन साहब के सामने अपने नाम की दुहाई न देना।

(बीएट्रिस चली जाती है।)

—: और देख कोनी डार्लिङ्ग एडविन से अच्छा सलूक करना, वह तुमसे बेहद मुहब्बत करता है। उसका रंग काला है तो क्या, वह उन लोगों से कहीं अच्छा है जिनके दिल काले हैं। मेरा रंग तुम्हारे पापा के मुकाबिले में क्या था, पर तुम्हारे पापा ने मुझे दसियों

गोरी लड़कियों में चुना। ब्यूटी इज़ स्किन डीप *
एडविन का प्यार सदियों का लिहाफ़ है, इतना समझ
लो, और लूकस का पूस की चाँदनी।

कोनी : ममी……मुझे एडविन से डर लगता है।

विवियन : वह ऊपर से ही भद्दा बेडौल लगता है, वैसे तो वह बड़ा सीधा साधा है। तुम उसकी नाक में नुकेल डाले जिधर चाहे घुमाती फिरोगी।

(जान और एडविन आते हैं।)

[एडविन मोटापे की ओर को मायल हृष्ठ-पुष्ट काला व्यक्ति है। ऊँचे दर्जे का कारीगर है, पर ऊँचे दर्जे का मूरख भी, यह बात पहली दृष्टि ही में उसकी आकृति से स्पष्ट हो जाती है।]

जान : (नाटकीय अंदाज़ में) हियर कम्ज़ मिस्टर एडविन, दि ब्राइटेस्ट जेम आफ़ दि रेलवे वर्कस शाप !†

विवियन : आओ आओ एडविन।

एडविन : गुड आफ़टर नून, ममी।

विवियन : गुड आफ्टर नून, गुड आफ़टर नून। कोनी से तुम्हारा इन्ट्रोडक्शन नहीं क्या ? (कोनी की ओर मुड़ कर) एडविन तो हमारे यहाँ कई बार आया है। (परिचय कराती है।) यह है कॉन्स्टेंस टाइल्ज़। जब तुम आते थे तो यह बड़ी छोटी सी थी. देखो तो अब कितनी बड़ी हो गयी है।

---

*Beauty is skin deep; अर्थात सौंदर्य केवल खाल के ऊपर है।

†Here comes Mr. Edwin, the brightest gem of the Railway Workshop.

[बीएट्रिस आती है और अलमारी से टीकोज़ी-कवर निकालती है ।]

कोनी : (हाथ मिलाते हुए) ग्लेड टू हैव मैट यू ।

एडविन : आई हैव आल्वेज़ ड्रेम्ट आफ़ मीटिंग यू अगेन, इट इज़ ए ग्रेट ओकेयन इन माई लाइफ़ ।

(हाथ मिलाता है ।)

बीएट्रिस : टीकोज़ी कवर यह ले जाऊँ हुज़ूर ।

विवियन : हां हां ।

एडविन : यह कौन है ?

जान : (एडविन को खाने की मेज़ की ओर ले जाते हुए) हमारी नौकरानी है बतसिया ।

बीएट्रिस : (मुड़ते हुए) हुज़ूर मेरा नाम बीएट्रिस है ।

[विवियन नाश्ते के सामान से कपड़ा उठाते हुए चौंकती है ।]

(पर्दा गिरता है ।)

सरा अंक

[वही कमरा, पर्दा उठते समय पादरी साहब कोनी और एडविन के साथ अन्दर से बातें करते हुए आते हैं, बैक-ग्राउंड में गाने-बजाने का मद्धम सा शोर है।]

पादरी : (बाहर के दरवाजे के पास रुकते और हाथ बढ़ाते हुए) अच्छा, एडविन साहब अब हमें छुट्टी दीजिए (घड़ी देखते हुए) आइ मस्ट रन ऐटवन्स[1] पादरियों की मीटिङ्ग है, सेन्ट डेविड चर्च में, मुझे वहाँ बोलना है। थैंक्स फ़ार दी टी, विच वाज़ (हँसते हैं) ऐज़ गुड ऐज़ ए सम्पचुअस डिनर।[2]

एडविन : शुक्रिया तो मुझे आपको देना चाहिए, हमारी एंगेज़मेन्ट[3] को ब्लेस[4] करने के लिए! हम तो चाहते थे कि आप अभी रहते, कोनी के गाने का प्रोग्राम था।

कोनी : मैं तो इतने ही से ऊब गई। मेरा सिर दुखने लगा है। कनपटियाँ फटी जा रही हैं।

पादरी : मैं फिर आऊँगा। (हँसते हुए) अब तुम लोग जल्दी शादी करो। हमारे चर्च में आओ। फिर हम लोग चाय नहीं डिनर पर आयेंगे।

एडविन : जल्द ही आप को तकलीफ़ देंगे।

पादरी : (दोनों से हाथ मिलाते हुए) अच्छा अच्छा। बाई...बाई!

---

1. I must run at once.
2. Thanks for the tea which was as good as a sumptuous dinner.
3. Engagement.
4. Bless.

(चले जाते हैं ।)

कोनी : (मुँह चिढ़ाते हुए) जल्दी ही आप को तकलीफ़ देंगे। कोई निवाला हूँ जो उठा कर मुँह में रख लोगे।

एडविन : तुम्हारी इच्छा के बिना कुछ न होगा डार्लिङ्ग ।

कोनी : (मुँह चिढ़ाते और नकल उतारते हुए) डार्लिङ्ग ।

(जाकर कौच पर बैठ जाती है ।)

एडविन : (उसकी ओर ध्यान दिये बिना अपनी भावना की रौ में) मुझे तो कभी सपने में भी यह ख्याल न था कि मैं तुमसे इतनी जल्दी मिल पाऊँगा। डेविड साहब ने कई बार मुझे अपने साथ यहाँ लाने के लिए कहा। पर मैं कभी न आ सका। जब मेरा दिल दूर ही से तुम्हें देखकर बेतरह धड़क उठता था तो पास आने पर उसकी क्या दशा होगी, इसका मुझे डर था। तुम नहीं जानतीं कोनी, कितने वर्षों से मैं तुम्हारी याद को इंजन की आग की तरह दिल में छिपाये हूँ। मेरी मुहब्बत को स्वीकार कर तुमने मुझे सदा के लिए अपना गुलाम बना लिया। मैं इंजन को चलाता हूँ, पर अब तुम मुझे चलाओगी। तुम मेरी ड्राइवर हो, मैं तुम्हारा इंजन हूँ। जैसे चलाओगी, वैसे चलूँगा।

कोनी : (व्यंग्य से) सचमुच तुम इंजन लगते हो, इंजन ने तुम्हें बिल्कुल अपने-सा बना लिया है, काला कलूटा, मोटा मुटल्ला !

एडविन : (उसके पास कौच पर बैठते हुए) लेकिन इस काले कलूटे इंजन के दिल में मुहब्बत की कैसी लाल-लाल आग धधक रही है, इसके अन्तर में कैसी प्रबल शक्ति छिपी है,

उस शक्ति के बल पर वह गाड़ी को लिये किस तरह हज़ारों मीलों की मंज़िल मार सकता है—यह तुम क्या जानो !

कोनी : (हँसकर) पटरी से उतर भी तो जाता है इंजन ।

एडविन : तुम अपने गोरे-गोरे एकस्पर्ट* हाथों से उसकी कला घुमाओगी तो वह पटरी से न उतरेगा, तुम्हारे इशारे का गुलाम बना आँख बन्द किये चलेगा, कोनी डार्लिङ्ग ।

(उसका हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर दबा लेता है ।)

कोनी : (झटके से हाथ छुड़ा लेती है) परे......परे......कहाँ ऊपर चढ़े आ रहे हो !

[एडविन फिर हाथ पकड़ लेता है और उसे चूमने का प्रयास करता है।]

कोनी : (फिर हाथ छुड़ा लेती है) गुलाम की यह मजाल ! चूमना चाहते हो तो वह पड़ा है मेरा जूता, जितना चाहे चूमो ।

(एक पैर का जूता परे फेंकती है ।)

एडविन : मैं इसे वर्षों तक चूम सकता हूँ ।

कोनी : तो इसे साथ ही घर ले जाओ ! हालाँकि मेरे पास दूसरा जूता नहीं। पर अपने काले कलूटे इंजन की खातिर इतनी कुर्बानी सह लूंगी। जब चाहे इसे चूमना ।

एडविन : (कोनी के स्वर में जो व्यंग्य है, उसे न समझ कर आगे बढ़ते हुए) कोनी डार्लिङ्ग ।

---

*Expert=दक्ष ।

कोनी : (दूसरा जूता उतार कर हाथ में उठाते हुए) परे रहो, नहीं यह दूसरा जूता खुद तुम्हारा मुंह चूमने बढ़ आयेगा ।

एडविन : (कोनी के भ्रू-भंग को देख कर दुख से) कोनी आज हमारी सगाई हुई है । और मैं हेड फ़ोरमैन हूँ ।

(कौच के दूसरे कोने में हताश सा जा पड़ता है ।)

कोनी : लेकिन मैं न रेंच हूँ, न प्लास, न हथौड़ी और न तुम्हारे इशारों पर चलने वाली गाड़ी, मैं कान्स्टेंस एमीलिया टाइल्ज़ हूं ।

एडविन : (उठकर) मैं तुम्हारा होने वाला पति हूँ ।

कोनी : केवल अंगूठी बदलने से तुम मेरे पति नहीं हो जाते । कहो यह अंगूठी अभी वापस कर दूँ ।

(अंगूठी उतारती है ।)

एडविन : (अतीव दुख से उसे दोनों हाथों से रोकते हुए) न..... न......न......क्या करती हो कोनी ?

कोनी : जब तक तुम मेरे जूते को कम से कम एक वर्ष तक नहीं चूमते, तुम मेरे पति नहीं हो सकते । अभी तुम कहते थे कि तुम मेरे गुलाम हो, तुम इंजन हो और मैं ड्राइवर हूँ और अभी तुम समझने लगे कि मैं जैसे चुपचाप तुम्हारे पीछे पीछे चलने वाली गाड़ी हूँ । अपनी औकात मत भूलो । तुम चाहे इंजन हो, पर मैं गाड़ी नहीं । मैं ड्राइवर ही हूँ ।

एडविन : मैं कब इनकार करता हूँ ?

कोनी : तो चूमो एक वर्ष के लिए मेरे जूते ।

[एडविन किं-कर्तव्य-विमूढ़ कभी कोनी को देखता है, कभी जूते को। कोनी ज़ोर से ठहाका मार उठती है और फिर नौकरानी को आवाज़ देती है।]

कोनी : बतसिया......बतसिया......

बीएट्रिस : (आते हुए) हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

कोनी : बतसिया इंजन पटरी से उतर गया। इंजन पटरी से उतर गया। (ठहाका मारती है।) एडविन साहब को जरा पानी पिलाओ।

(हँसती हुई भाग जाती है।)

बीएट्रिस : क्या हुआ एडविन साहब ?

एडविन : (जैसे कब्र से बोल रहा हो) बतसिया !

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

एडविन : बीएट्रिस !

बीएट्रिस : (जो इस बात से प्रसन्न है कि एडविन ने उसे ठीक नाम से पुकारा) हुजूर !

एडविन : कैसी है तुम्हारी मिस साहब ?

बीएट्रिस : एक दम तीती है साब।

एडविन : तीती ?

बीएट्रिस : मिरच है मिरच !

एडविन : मिरच ?

बीएट्रिस : लाल मिरच। (स्वर को धीमा करके) साहब आप कहाँ फँस गया। ऐसा बुरा स्वभाव है मिस साब का कि चार दिन में आपका दम नाक में कर देगी। लूकस साब ने

तो बड़ी मुश्किल से अपना पीछा इन से छुड़ाया। ऐसी बदजबान है कि चमारों को मात करती हैं।

एडविन : चमारों को।

बीएट्रिस : अपनी मिट्टी से कहाँ भागेंगी। रंगत गोरी है तो क्या, आखिर खून तो वही है। (स्वर को धीमा करके) आप को मालूम नहीं, मेम साहब तो जात से चमारिन हैं। हम से भी नीची जात की हैं। मेरी माँ खानसामिन थी यहाँ। मुझे सब मालूम है। साहब के बाप का पता न था। एंग्लो इंडियन घर में शादी होती न थी। मेम साहब भी थीं उन दिनों उद्‌माती, बस फाँस लिया इनने साहब को! और अब इनके नखरे देखो जैसे आयरलैंड से सीधी यहाँ आई हों। बीस बार कहा है...हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है। पर मजाल है जो कभी ठीक नाम से पुकार जायँ। जब पुकारेंगी वही 'बतसिया, बतसिया'। पूछो, तुम मुंदरिया से क्रिश्चियन बन गयी हो, जो तुम्हें कोई फिर से मुंदरिया बुलाये तो कैसा लगे!

एडविन : बीएट्रिस।

बीएट्रिस : हुजूर।

एडविन : डेविड साहब तो कोनी की बड़ी तारीफ़ करते थे।

बीएट्रिस : उनको तो रुपया लेना है मेम साहब से। फँसा दिया तुमको। नहीं कोई शरीफ़ आदमी भेजे में अकिल रहते ऐसी लड़ाका मुंहफट, अक्खड़, बतमीज़ लड़की से शादी कर सकता है? तुमको तो साब ऐसी बीबी चाहिए थी कि जो तुम्हारी सेवा करे। जब तुम दिनभर का थका घर आये तो तुम्हें आराम दे। तुम्हारे लिए गर्म पानी तैयार रखे। तुम नहाये तो गर्म गर्म चाय तुम्हारे सामने

ले आये। तुम्हारे मित्र आयें तो उन्हें देख कर जले नहीं, तुम्हारी इच्छा के मुताबिक उनका स्वागत करे, तुम ब्रिज या फ़्लाश खेलना चाहो तो घर को अखाड़ा न बना दे, चुपचाप उसका प्रबन्ध कर दे। तुम्हारा पीने को मन हो तो तुम्हें बाहर जाकर झख मारने को विवश करने के बदले घर ही में प्रबन्ध कर दे। जो तुम्हारे घर को स्वर्ग बना दे। यह तो तुमको तिगनी का नाच नचा देंगी।

एडविन : और मैं अपने आप को खुशकिस्मत समझता था।

बीएट्रिस : साब, तुम खुशकिस्मत है कि तुम्हें अभी पता चल गया। नहीं शादी के बाद पता चलता तो मुसीबत हो जाती। खर्च होता सो अलग, परेशानी होती सो अलग।

एडविन : मेरा तो इसी पार्टी पर चार सौ उठ गया।

बीएट्रिस : तब चार हज़ार उठ जाता।

एडविन : बतसिया, तुम ज़रा मेम साब को भेजो।

बीएट्रिस : (बिना क्रोध के प्यार भरे स्वर में) हुजूर, मेरा नाम बीएट्रिस है।

एडविन : माफ़ करना बीएट्रिस, ज़रा मेम साब को भेजो।

बीएट्रिस : हुजूर अभी भेजती हूँ।

(जाती है, क्षण भर बाद जान आता है।)

जान : अरे एडविन साहब आप यहाँ कैसे बैठे हैं। चलिए न उधर, एक एक प्याला और पिया जाय। आपने तो चाय अभी पी ही नहीं।

एडविन : मेरा कुछ सिर दर्द कर रहा है।

जान : वह कोनी किधर गयी?

(आकर कोच की बांह पर बैठ जाता है।)

एडविन : क्यों जान कोनी स्वभाव से कुछ सख्त है।

जान : (तनिक हँसकर) नहीं कुछ ऐसी तो नहीं। क्या उसने आज ही परिचय दे दिया आपको अपने स्वभाव का?

एडविन : नहीं कुछ ऐसी बात नहीं। योंही पूछा था।

जान : अभी बच्ची है, उसकी उम्र ही कितनी है। पापा और मर्मा के लाड में पली है। किसी ने कभी किसी बात से उसे रोका नहीं, इसलिए ज़रा मुँहफट है। कुछ झगड़ा कर लिया उसने आप से?

एडविन : नहीं, नहीं, कोई ऐसी बात नहीं। तुम ठीक कहते हो अभी बच्ची है।

जान : बच्ची की तरह यदि आप उसे रखेंगे तो धीरे धीरे उसके मिज़ाज की तुंदी मिट जायेगी। मैं तो खुश हुआ था कि उसने आपको चुना। आप उम्र में भी उससे बड़े हैं और तजुरबे में भी! लूकस तो उससे ऐसे घबराता था जैसे चूहा बिल्ली से।

एडविन : (सोचते और समझते हुए) हूँ।

जान : (हँसकर) हमने लाख कोशिश की कि दोनों में कुछ बात बन जाय। लूकस मेरा बचपन का दोस्त है। मुझे पसन्द है। पापा को भी पसन्द था, पर कोनी ऐसी शरमस्ती करती है कि वेचारा घबरा जाता है। आपने तो आते ही उस पर ऐसा रोब डाल दिया कि मैं क्या कहूँ, आप की शादी हो तो हम सब सुख की साँस लें।

एडविन : (घबराये स्वर में) डेविड क्या अभी तक है?

जान : गये तो नहीं अभी। हम तो सोच रहे थे कि आप पादरी

साहब को छोड़ कर वापस आयेंगे, पर आप वहीं रह गये। मैं......

एडविन : (अपनी सोच में) ज़रा डेविड साहब को इधर भेजिए तो......(जान उठ कर जाने लगता है)...नहीं मैं स्वयं जाता हूँ।

[उठकर तेज़ तेज़ जाता है। विवियन दूसरे दरवाजे से आती है।]

विवियन : एडविन ने बुलाया था मुझे।

जान : वे डेविड अंकल से बात करने गये हैं।

विवियन : बात क्या है ?

जान : (क्षण भर सोचता है कि क्या उत्तर दे, फिर उसकी आँखें चमक उठती हैं, पर उस चमक को वह कृत्रिम गम्भीरता से छिपा लेता है।) मेरा ख्याल है उन्हें कोनी की चुप्पी पसन्द नहीं।

विवियन : चुप्पी !

जान : एडविन का ख्याल है कि कोनी इतनी चुप है कि उससे बात तक करना मुश्किल है। अगर वह इसी तरह रही तो कै दिन निभेगी।

विवियन : (चकित) चुप है ?

जान : तुम एडविन से कहना कि वह शर्माती होगी। नहीं, चुप वह नहीं है। बड़ी खरमस्ती करती है। चन्द दिन में खुल जायगी तो चुप्पी की शिकायत न रहेगी।

विवियन : घर में तो सारा दिन हुरदंग मचाये रखती है।

जान : अब दो दिन में कैसे खुल जाये, फिर दोनों की उम्र में

भी इतना फ़र्क है और लूकस को भी वह इतनी जल्दी कैसे भूल सकती है।

विवियन : मैं उसे समझा दूँगी। इतनी जल्दी वह उससे कैसे खुल सकती है। मर्द भी कैसे मूरख होते हैं!

(चली जाती है।)

जान : (ज़ोर से ठहाका लगता है) ममी उसे समझायेगी कि कानी कोई ऐसी चुपकी नहीं, ख़ासी चंचल है।

(ठहाका लगाता है। अन्दर के कमरे से लूकस आता है।)

लूकस : अरे भई कैसे हँस रहे हो अकेले अकेले, कुछ हमें भी बताओ, कुछ समझ में नहीं आता, तुम इधर हँस रहे हो और कानी उधर अपने कमरे में पड़ी बराबर हँसे जा रही है। कुछ बताती नहीं, बस लोट पोट हुई जा रही है। पूछता हूँ तो कहती है—इंजन पटरी से उतर गया। इंजन पटरी से उतर गया। आखिर क्या हुआ?

जान : इंजिन पटरी से उतर उया (ठहाका मारता है।) लगता है कोनी ने चक्कर चला दिया है। अब इस चक्कर में मियाँ एडविन को ऐसे घुमाना कि उसका सिर चकरा जाय, यह हमारा काम है। मैंने उसमें हाथ लगा दिया है। ममी का डर था कि वह एडविन को समझायेगी, पर हमने ऐसी चाल चली है कि जो वह समझायेगी, उसका उल्टा असर पड़ेगा। (ठहाका मारता है।) बस तुम अवसर पड़ने पर अपना पार्ट अदा कर दो तो मैदान हमारे हाथ रहे।

[बाहर से डेविड और एडविन के बातें करने की आवाज़ आती है।]

एडविन : नहीं-नहीं, मैं नहीं चाहता।

डेविड : पर आखिर कुछ बताओ भी।

जान : चलो उधर छिप जाते हैं।

लूकस : हां...हां...समय पर पहुँच भी सकेंगे उधर से।

[दबी हँसी के साथ दोनो दूसरे कमरे में जाकर छिप जाते हैं। डेविड और एडविन तेज़-तेज़ बातें करते आते हैं।]

डेविड : (कोच पर बैठते हुए) आखिर हुआ क्या बताओ भी। यह कोई बच्चों का खेल है क्या। इतने लोगों के सामने पादरी द्वारा जो सगाई हुई वह यों तोड़ दोगे तो दुनिया क्या कहेगी ? तुम कोई बच्चे हो।

एडविन : आपने मुझे कभी नहीं बताया कि उसका स्वभाव ऐसा है। ऐसी तुंद मिज़ाज लड़की से मेरी कैसे बसर हो सकती है।

[डाइनिंग टेबल के नीचे से कुर्सी निकाल कर उस पर बैठता है।]

डेविड : वह तुंद है ही कहाँ, मैं कोनी को अच्छी तरह जानता हूं, बड़ी प्यारी और भोली है। मैंने कभी उसके मुँह से तेज़ बात नहीं सुनी।

एडविन : आपने उसे मि० टाइल्ज़ के जीते जी देखा होगा, इधर वह कैसी हो गयी है, यह शायद आप नहीं जानते, अव्वल दर्जे की मग़रूर और बदज़बान है।

डेविड : (दबी जबान से) हुस्न और ग़रूर तो सदा साथ रहते हैं, लेकिन दोनों को प्यार, दानाई और रुपये के बल पर जीता जा सकता है और ये तीनों चीजें तुम्हारे पास काफ़ी मिक़दार में हैं।

एडविन : लेकिन बदजबानी को इन तीनों में से किसी से भी दूर नहीं किया जा सकता। जबान की मिठास का ताल्लुक कल्चर से है। कोनी की नसों में अपनी मां के पुरखों का खून है, बाप का नहीं।

डेविड : क्या कहते हो उसकी मां के पुरखे और हमारे पुरखे एक जैसे हैं।

एडविन : जो भी हो, कोनी की सुन्दरता पर ही नहीं, उसके कल्चर पर भी मैं मरता था (उठ कर कमरे में घूमता है।) जिस बच्ची को मिस्टर टाइल्ज ने अपनी देख-रेख में पढ़ाया-लिखाया, पाला-पोसा और परवान चढ़ाया, वह मेरे घर आयेगी तो मेरे बच्चे भी अपनी मिट्टी से ऊपर उठेंगे, पर यह तो बदज़बानी में हमारी औरतों को भी मात करती है।

डेविड : क्या बदज़बानी देख ली चार घड़ी में तुमने ?

एडविन : चावलों को देखने के लिए तो एक दाना ही काफ़ी है।

[फिर आकर परेशनी में कुर्सी पर बैठ जाता है, जैसे किसी कल चैन नहीं उसे]

डेविड : बदज़बानी और शोखी कहीं छिपाये छिपती है। मुझे क्या उसका पता न चलता। मैं तो जब भी आया, उसे सदा चुप पाया।

[विवियन घबराई आती है प्रकट है, कि उसने डेविड का अन्तिम वाक्य सुन लिया है।]

विवियन : क्यों बहका रहे हो एडविन को डेविड ! नहीं बेटे, ऐसी चुप नहीं कोनी। तुम से शर्माती होगी, मैं तो तुम्हें ढूँढ ढूँढ कर हार गयी। क्या मालूम डेविड तुम्हारे संग यहाँ

बैठा मिसकौट कर रहा है। तुम्हें गलत बताया डेविड ने। कोनी ऐसी चुपीती नहीं; पर तुम्हीं सोचो इतनी जल्दी खुल कैसे सकती है तुम्हारे साथ? दो दिन की भी मुलाकात नहीं उसकी तुम्हारी। शोख और चंचल वह अव्वल दर्जे की है। ज़रा खुली कि तुम्हारे कंधों पर चढ़ बैठेगी। (स्वयं हँसती है।) वह है कहाँ? अभी उसे तुम्हारे संग ज़िन्दगी बितानी है तो चुप्पी से कैसे काम चलेगा। मैं तो समझती थी तुम दोनों इस कमरे में बैठे कल के सपने देख रहे हो। (स्वयं हँसती है।) नहीं, तुमने तो एक कप चाय भी नहीं पी।

(एडविन कुछ कहने को उठता है।)

— : यहीं चाय भी भेजती हूँ और कोनी को भी समझा कर भेजती हूँ। अजीब मूरख लड़की है, ऐसी चुप भी क्या जो अपने आदमी का मुँह मोड़ दे।

(तेज़ी से मुड़ती है।)

एडविन : नहीं ममी, कोई ऐसी बात नहीं। यहाँ चाय भिजवाने की जरूरत नहीं......

विवियन : नहीं नहीं, तुम यहाँ बैठो (नौकरानी को फिर आवाज़ देती है।) बतसिया...बतसिया!

एडविन : और आप कहते थे वह बड़ी चुपीती है।

[बाहर निकल जाती है, पर एडविन की बात सुनकर दरवाज़े ही से पलटती है।]

विवियन : हाँ चुपीती है। मैना है मैना। अब बड़ों के सामने थोड़े ही चहक सकती है, कुछ रेसपेक्ट का भी ख्याल रहता है। अभी पूछती हूँ उससे जाकर और भेजती हूँ उसे।

डेविड : (उठकर) अरे क्या गजब ढा रही हो मिसेज़ टाइल्ज़ सुनो......

(उसके पीछे पीछे जाते हैं। बीएट्रिस आती है।)

बीएट्रिस : मुझे आवाज दी साब ?

डेविड : (जाते जाते) चाय लाओ साब के लिए यहीं।

(निकल जाते हैं।)

बीएट्रिस : हुजूर आपने चाय नहीं पी ?

एडविन : नहीं बीएट्रिस, मेरा जी चाय पीने को नहीं

बीएट्रिस : हुजूर मर्द होकर ऐसे जी छोटा करते हैं। जो पत्थर न उठे उसे आदमी छोड़ दे। उसके पीछे जान थोड़ी हल्कान की जाती है। आप कमाऊ आदमी हैं, जांच जोख कर अपने मतलब का साथी लाइए। जी छोटा करने से थोड़ी काम चलता है।

एडविन : लेकिन सगाई तो हो गई।

बीएट्रिस : हो गई तो क्या टूटते देर लगती है। आदमी ही से गलती होती है। आदमी ही उसे सुधारता है।

एडविन : सोचता हूँ उठकर भाग जाऊँ और जाकर लिख दूँ कि मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं।

बीएट्रिस : भगोड़े की तरह भागने की क्या ज़रूरत है सरकार। मर्द हैं, मर्दों की तरह मुकाबिला कीजिए हालात का। ढूँढ लीजिए कोई बहाना।

एडविन : तुम्हीं कोई सुझाओ ना।

बीएट्रिस : मिस साहब बदज़बान तो हैं ही। एक बहाना तो यही हुआ। फिर बीस बुरी आदतें हैं उनमें, हर बात में ज़िद

करती हैं। जो कहो उससे उलटा करेंगी। राशन में चीनी की मात्रा कम हुई, मेम साहब ने कहा चीनी-कम पियो, उसी दिन से चाय में चार चम्मच चीनी पीने लगीं।

एडविन : यह तो जुर्म है। बतसिया तुम यहीं चाय ले आओ।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

एडविन : माफ़ करना बीएट्रिस। मेरी चाय तुम यहीं ले आओ!

बीएट्रिस : बहुत अच्छा हुजूर।

(चली जाती है। लूकस आता है।)

लूकस : कहिए आप इधर बैठे हैं, चलिए न उधर।

एडविन : नहीं भाई मेरा मन ठीक नहीं।

लूकस : अजी उठिए, ऐसे मुबारक दिन भला कमरे में बन्द बैठा जाता है।

एडविन : आप को तो खुशी न होनी चाहिए।

लूकस : क्यों?

एडविन : मैंने सुना था कि आपके साथ बात चल रही थी कोनी की।

लूकस : बात चलने से क्या होता है। कोई गाजर मूली की बात तो है नहीं कि बात चलने से उस पर मेरा अधिकार हो गया। कोनी ने शायद मेरी बेकारी को पसन्द नहीं किया।

एडविन : यही बात थी?

लूकस : बड़ी बात यही थी। माँ बाप के लाड़ प्यार में पली बड़ी ख़र्चीली लड़की है। मेरी औकात उसका खर्च उठाने की

नहीं। आप के साथ वह खुश रहेगी। और फिर मैं ज़रा शान्त स्वभाव का आदमी हूँ।

(कौच के बाजू पर बैठ जाता है।)

एडविन : डेविड कहते हैं कोनी भी शान्त स्वभाव की है।

लूकस : अंकल डेविड कहते हैं। (हँसता है।) चुप तो वह ऐसी है कि खुदा की पनाह। आप के सामने अभी चुप होगी। एक बार ज़बान खुली तो खुदा बचाये। मैं ठहरा एडवोकेट, अदालत की बकबक के बाद घर की बकबक, ऐसी जिन्दगी के ख्याल से ही मेरी रूह काँपती है। जान बड़ा ज़ोर दे रहा था, कोनी को भी मेरी तबीयत की चुप्पी और दब्बूपन पसन्द है, पर मैं तो सच कहता हूँ, सुख की साँस ली मैंने। हमारी तबीयतें नहीं मिलतीं, आपकी और उसकी जोड़ी अच्छी रहेगी। आप बेजान मशीनों से जूझ कर शाम को घर आयेंगे तो उसकी चहक आपका मन हरा कर देगी।

एडविन : चहक !

[दुख से एक हूँकार भरता है और उठ कर कमरे में घूमने लगता है।]

लूकस : (उसके साथ चलते हुए) मैं तो आज इतना खुश हूँ कि जी चाहता है जी भर नाचूँ। लगता है जैसे ज़ंजीर का जो घेरा मेरे गले की ओर बढ़ा आ रहा था, उससे सदा के लिए मुक्ति मिल गयी।

एडविन : (ऐसा हुंकार जिसके कराहट है) हूँ।

(विवियन कोनी को पकड़े हुए आती है।)

विवियन : लो बैठो यहाँ। यह दिन कमरे में बन्द होने का है। बैठो

यहाँ और एडविन को बताओ कि तुम न बदज़बान हो न बेज़बान। तुम बस वैसी ही हो जैसी उसे चाहिए। चलो लूकस तुम यहाँ क्या कर रहे हो।

लूकस : चलो मम्मी।

[जाता नहीं, वहीं खड़ा है, आँख बचाकर कोनी को समझा देता है कि उसने अपना पार्ट अदा कर दिया है। बीएट्रिस चाय लाती है।]

बीएट्रिस : चाय बनाऊँ हुजूर या आप बनायेंगे ?

विवियन : इधर रख कोनी बनायेगी।

[कोनी एक पाँव का जूता दूसरे पाँव से निकाल कर फेंकती है।]

बीएट्रिस : यह जूता क्यों उतार फेंका ?

कोनी : तंग है, पाँव में चुभता है।

एडविन : (उसी व्यथा में हुंकारता है) हूँ।

(उठकर घूमने लगता है।)

विवियन : लो तुम लोग बैठो। मुझे दूसरे मेहमानों को देखना है। जल्दी आ जाना, चलो लूकस।

लूकस : चलो मम्मी।

एडविन : (जैसे मन में किसी बात का निर्णय कर लेता है।) बीएट्रिस चाय बनाओ

(बीएट्रिस चाय बनाती है।)

बीएट्रिस : कितने चम्मच चीनी साब ?

एडविन : एक !

बीएट्रिस : आप तो मिस साब चार लेंगी।

कोनी : हाँ मेरे प्याले में चार डालो।

एडविन : (आश्चर्य और कृत्रिम क्रोध से) तुम प्याले में चार चम्मच चीनी पीती हो।

कोनी : हाँ।

एडविन : राशन के जमाने में।

कोनी : मैं पाँच लेने की सोच रही हूँ।

एडविन : (जोर के साथ) यह तो क्रिमिनल है। तुम्हारी हमारी कैसे बन सकती है।

(कोनी उसकी ओर अंगुली वाली अंगूठी बढ़ा देती है।)

कोनी : मैं स्वयं ऐसे प्रेमी को पाकर कैसे छोड़ सकती हूँ जो मेरे जूते को व ्र भर चूम सकता है, अपने आप अंगूठी उतार लो।

एडविन : यही ठीक है। मैं अंगूठी उतार लेता हूँ।

(अंगूठी उतार लेता है।)

कोनी : (चीखकर) क्या तुमने सगाई तोड़ दी। (उठकर चीखती हुई भागती है।) ममी, एडविन ने सगाई तोड़ दी। जान, एडविन ने सगाई तोड़ दी।

(उसकी चीखें और सिसकियाँ दूर से सुनायी देती हैं।)

बीएट्रिस : तूफान आयेगा हुजूर। मर्द बन कर उसका मुकाबिला कीजिऐगा।

एविन : तुम मेरी मदद करना बीएट्रिस।

बीएट्रिस : मैं तो नौकरानी हूँ सरकार, पर आप अब इस चक्कर में न फँसिएगा। चाहे कितना प्यार जतायें। चाहें धमकी दें।

[विवियन घबराई हुई आती है। उसके पीछे और लोग हैं।]

विवियन : क्यों बेटा क्या कोनी सच कहती है ? क्या देख लिया दस मिनट में तुमने कि सगाई छोड़ दी ?

एडविन : (चुप)

डेविड : क्या यह सच है कि तुमने सगाई छोड़ दी ?

एडविन : हाँ !

विवियन : (लगभग रोते हुए) लेनिक क्यों बेटा। क्या केवल इसलिए कि लोगों ने तुम्हें उसके स्वभाव के बारे में बहका दिया।

जान : (घबराया हुआ आता है।) ममी तुम उधर जाओ। कोनी बेहोश हो गयी है।

विवियन : ओह गाड !

(तेज़ तेज़ जाती है।)

जान : क्यों एडविन साहब यह सच है कि आपने सगाई छोड़ दी ?

एडविन : (चुप)

जान : आखिर बात क्या हुई ? (बीएट्रिस से) बतसिया तू भी तो यहीं थी।

बीएट्रिस : मैं चाय बनाने लगी थी कि मिस साहब ने प्याले में चार चम्मच चीनी डालने को कहा। बस साब भड़क उठे। झगड़ा हो गया। मिस साहब ने अंगूठी वाली अंगुली आगे बढ़ा दी। साहब ने अंगूठी उतार ली।

जान : क्या कोनी ने कहा मैं सगाई तोड़ती हूँ।

बीएट्रिस : नहीं। मिस साब ने कहा मैं खुद सगाई नहीं तोड़ना चाहती। तुम्हें पसन्द न हो तो......

जान : (दूसरों को सुनाकर) कोई स्वाभिमानी ऐसी हालत में और क्या कर सकता है।

डेविड : (बचाव के प्रयास में) तो तुमने मज़ाक मज़ाक में सगाई तोड़ दी।

एडविन : (जो इतनी देर से भरा बैठा है) क्या आपने मुझे कभी हँसी मज़ाक करते देखा है। मैंने सगाई तोड़ दी है। मैं ऐसी खर्चीली और बदज़बान लड़की से कभी शादी नहीं का सकता।

जान : (नकल उतारते हुए) कभी शादी नहीं कर सकता। क्या यह बच्चों का खेल समझ लिया है आपने ? इतने महमानों के सामने पादरी को बुलाकर सगाई का ऐलान किया गया। और आप दस मिनट में उसे छोड़ देंगे। इससे हमारा जो अपमान होगा, कोनी के नाम पर जो धब्बा लगेगा, उसकी ज़िन्दगी जैसे तबाह होगी उसकी जिम्मेदारी किस पर है ? उसका हरजाना कौन देगा ? आप को मालूम है मैं आप पर पन्द्रह हज़ार के हर्जाने का दावा कर सकता हूँ।

एडविन : तुम पन्द्रह लाख का दावा भी करो तो मैं उस बदज़बान लड़की से शादी नहीं कर सकता।

जान : (कमीज़ की आस्तीने चढ़ाते हुए) ज़बान साहब सम्हाल कर बात कीजिए मि० एडविन।

डेविड : (रोकते हुए) क्या कर रहे हो जान ?

जान : आप ने यह क्या मामूली बात समझ ली अंकल। इस

घटना के बाद कोनी किस तरह शादी कर सकेगी? हमारी कितनी बदनामी होगी। मैं चुप चाप अपनी बहिन का भविष्य तबाह होते कैसे देख सकता हूँ। अगर यह अपने हठ पर अड़े रहे तो मुझे हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ेगा।

एडविन : तुम हाई कोर्ट नहीं, सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटओ मैं कोनी से शादी नहीं करने का।

(झुंझलाया हुआ चला जाता है।)

डेविड : सुनो तो एडविन......एडविन......

(उसके पीछे निकल जाता है।)

जान : आप लोग खड़े क्या देख रहे हैं। उसे मनाइए। मेरी बहिन तो इस सदमे से मर जायगी।

[सभी एडविन के पीछे जाते हैं। लूकस अन्दर से आता है।]

जान : कोनी को होश आया?

लूकस : जब तक एक मेहमान भी यहाँ है उसे कैसे होश आयेगा।

(दोनों बड़ी दबी हँसी हँसते हैं।)

बीएट्रिस : हुजूर जरा इधर से हटिए तो मैं यह सामान उठा ले जाऊँ।

(जान आगे से हटता है बीएट्रिस ट्रे उठाती है)

लूकस : (बतसिया के आगे से हटते हुए) बतसिया ने तो कमाल कर दिया।

जान : (उसके जाने को जगह देते हुए) बतसिया तुमने कमाल का पार्ट अदा किया (जेब से दस का नोट निकाल कर ट्रे में रख देता है) लो यह इनाम और आज से हमने तुम्हारी पगार दो रुपये बढ़ा दी। बोलो अब खुश हो बतसिया।

(बतसिया चुप है।)

जान : (उसके साथ साथ जाते हुए) क्यों क्या कम है इनाम? मामला जीतने दो, तुम्हें इतना इनाम देंगे बतसिया कि तुम्हें कहने को न रहेगा।

बीएट्रिस : हुजूर इस खुशी के अवसर पर यह न भूलिए कि मेरा नाम बीएट्रिस है।

[ट्रे लेकर निकल जाती है—पर्दा एकदम गिरता है।]

तीसरा अंक

[पर्दा बड़ी अदालत में उठता है। दायीं ओर एक जंगलेदार ऊंचे प्लेटफ़ार्म पर जज की मेज़ लगी है, जिसके पीछे ऊंची कुर्सी है। कुर्सी के पीछे जज की बायीं ओर को दीवार में एक दरवाज़ा है जिस पर गहरा नीला पर्दा पड़ा है। यह दरवाज़ा जज साहब के रिटायरिंग रूम को जाता है। इधर ही से वे आते जाते हैं।

जज की दायीं ओर को तनिक नीचे प्लेटफार्म पर रीडर और उसके क्लर्क के मेज़ लगे हैं। इस प्लेटफ़ार्म पर भी कोने में एक दरवाज़ा है जो बाहर को जाता है। रीडर और क्लर्क आदि उधर ही से आते जाते हैं। इस दरवाज़े पर भी गहरा नीला भारी पर्दा पड़ा है। मेज़ों पर भी गहरे नीले रंग का कपड़ा है।

जंगले के इधर को, बायीं दीवार की ओर, कमरे के बीच में एक बड़ी अंडाकार मेज़ है। उसके साथ कुर्सियां लगी हैं। वकील लोग इस पर बैठते हैं और यहीं से जज को सम्बोधित करते हैं। इस पर भी गहरे नीले रङ्ग का कपड़ा है।

मेज़ से और बायीं ओर को हटकर, सामने की दीवार और बायीं दीवार के कोने में, बड़ा सा बेंच पड़ा है जो मुवक्किलों, उनके सगे सम्बंधियों और दर्शकों के लिए है।

बायीं दीवार में बेंच के साथ ही एक दरवाजा है जो बाहर को जाता है। इधर ही से वकील, मुवक्किल आदि आते हैं।

वातावरण में कुछ अजीब सी गहराई, आतंक

और कठोर रुक्षता विद्यमान है जिसे मेज़ों तथा पर्दों का गहरा नीला भारी ऊँनी कपड़ा कुछ बढ़ाता ही है।

पर्दा उठने पर एक चपड़ासी स्टूल पर, चढ़कर जज की कुर्सी के पीछे दीवार पर लगे क्लाक को चाबी देता दिखायी देता है। चाबी देकर वह उतरता है और स्टूल को, रीडर की ओर के दरवाज़े के बाहर, रख देता है और झाड़न लेकर मेज़ कुर्सियों को जल्दी जल्दी झाड़ता है। घड़ी में दस बजने को हैं। बाहर किसी आती जाती कार के हार्न का स्वर कमरे में आ जाता है। इसके अतिरिक्त कमरे में निपट शान्ति है, जिसे केवल चपड़ासी के झाड़न का स्वर भंग करता है।

कुछ क्षण बाद रीडर आता है। अलमारी से कुछ फ़ाइलें निकालता है। एक फ़ाइल में से दो टाइप किये कागज़ निकालता है और घंटी पर हाथ मारता है। चपड़ासी, जो इस बीच में नीचे उतर कर वकीलों की मेज़ झाड़ रहा है, आदेश की प्रतीक्षा में जंगले के पास जाता है।]

रीडर : यह आज के मामलों की सूची बाहर बोर्ड पर लगा दो।

[चपड़ासी एक हाथ में दोनों टाइप किये कागज़ लेकर दूसरे से झाड़न को कंधे पर मार चला जाता है।

रीडर बड़ी गम्भीरता से दूसरे कागज पत्र देखता है। फाइलें छांटता है। कुछ को मेज़ पर रखता है। एक आध कागज निकाल कर उन पर पेपर वेट रखता है। कुछ क्षण बाद उठ खड़ा होता है और ज़ोर से घंटी पर हाथ मारता है। घंटी से जैसे रबड़ का तार लगा हो, चपड़ासी स्वर के साथ खिंचा आता है।]

— : देखो मैं जरा भवानी दयाल जी के पास जा

रहा हूँ। जज साहब की कार के आते ही मुझे पता देना वहाँ दरवाज़े में खड़े रहो और एक नजर अन्दर की ओर रखो और एक बाहर की ओर।

चपड़ासी : जी बेहतर।

जाकर दरवाज़े में खड़ा हो जाता है। सरिश्तेदार पिछले दरवाज़े से निकल जाता है।

क्षणभर तक कमरे की कठोर गम्भीरता जैसे कोने खदरों से निकल कर वातावरण पर छा जाती है, फिर उस वातावरण को भंग करती हुई जान और लूकस की आवाज़ें आती हैं। और दूसरे क्षण जान, लूकस, विवियन टाहल्ज़, कोनी और बीएट्रिस प्रवेश करते हैं।

एक नौकर जान के साथ एक ट्रे में किताबें और फ़ाइलें लिये आता है।]

जान : (लूकस के साथ बातें करते हुए) मामला हमारा आज भी पहले पड़ा है। बस आज की गवाही ठीक हो जाय तो समझ लो मार लिया मैदान। जज का रवैया तो हमारे हक में ही दिखाया देता है।

(नौकर से किताबों की ट्रे ले कर मेज़ पर रखा है।)

लूकस : इसकी दाद कोनी को देनी चाहिए। अपना बयान इसने कुछ ऐसे अच्छे ढंग से दिया। अपने बयान में कुछ ऐसा दर्द इसने भर दिया कि जज यदि जज न होता तो फूट फूट कर अदालत में रो पड़ता।

जान : इसमें क्या शक है। उसके ओंठ तो सिटपिटा रहे थे, आँखें भरी आ रही थीं, पर जज है न आख़िर, बुत बना बैठा रहा।

लूकस : कोनी की खूबसूरती और फिर उस पर गम की घटा। आधा मामला तो समझो कोनी के बयान के बाद जीता गया।

कोनी : जान जैसे मुझसे कहलवाता गया मैं कहती गयी।

जान : अब तो ममी को मालूम हो जायगा कि अगर मेरी प्रेक्टिस नहीं चली तो इसमें मेरा कोई कसूर नहीं। जिस चीज़ की जरूरत थी वह था एक ज़ोरदार मामला जिसकी पैरवी में मैं अपने जौहर दिखाऊँ।

विवियन : जब रुपया लाकर मेरे हाथ में दोगे तो मैं समझूँगी कि हाँ किसी क़ाबिल हुए हो। अभी तो घर में बुहारी फिर गयी है। एक भी तो काम की चीज़ नहीं रही। आखिरी छल्ला तक मामले का खर्च जुटाने में उठ गया। वे सभी चीज़ें जिनके साथ हेरी की याद बँधी......

जान : (दोनों हाथ उठाते हुए) ब......ा......स! ...अदालत में नहीं ममी! घर चलकर जो मर्जी हो कहना। यह मामला मैं अपने लिए नहीं लड़ रहा। पापा के नाम की इज्जत के लिए लड़ रहा हूँ। कोनी की ज़िन्दगी के लिए लड़ रहा हूँ। जिस एडविन को पापा ने एक बार बँगले से निकाल दिया था, उसकी यह मजाल कि वह उनके नाम पर यों कलंक लगाये। उनकी बेटी की ज़िन्दगी तबाह कर दे। तुम रुपये की बात करती हो ममी, हम अपनी ज़िन्दगियाँ इस पर लगा सकते हैं।

लूकस : (मिसेज़ टाइल्ज़ को समझाते हुए) मामला बस जीता ही समझो ममी।

जान : मैं खाना ठीक से तब खाऊँगा, जब ममी की सब प्यारी चीज़ें पान शाप से वापस ला दूँगा। तुम यह तो देखो ममी मामला सूबे में कितनी मशहूरी पा गया है। हर अखबार में इसका ज़िक्र है। हर जगह इसकी चर्चा है। बिना रुपया खर्च किये कुछ नहीं होता। रिपोर्टरों को मैं ऐसी बढ़िया दावत न देता तो दो कालम दूर रहे, दो सतरों की खबर न निकलती। एडीटर लोग तो पड़े ऊँघते हैं। अखबार तो रिपोर्टरों के दम से चलते हैं।

लूकस : (रद्दा जमाते हुए) इसमें क्या शक है। इस मामले में फतेह हुई तो मुवक्किलों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा।

जान : खुदा गवाह है मामला जीतते ही बढ़िया एलसेशियन रखूंगा।

कोनी : दो रखना। एक बाहर के गेट पर, एक अन्दर के गेट पर। ताकि यदि बाहर वाले से बचकर मुवक्किल अन्दर आ जाये तो अन्दर वाला भगा दे।

(धीरे से हँसती है।)

लूकस : हँसने की बात नहीं। जान किसी हद तक सच कहता है। दो एलसेशियन हों तो और भी रोब पड़े। यह हिन्दुस्तान है। यहाँ क़ाबलीयत की क़दर नहीं, दिखावे की कदर है, जो साधू गाली दे वह सिद्ध, जो डाक्टर मरीज़ों के साथ तीखेपन से पेश आये वह धनवंतरी का बाप और जो वकील जितना बड़ा झूठा हो उतना ही सफल। वकालत आखिर रह ही क्या गयी है। सच को सच और झूठ को झूठ साबित कर दिखाना वकालत नहीं, बल्कि हर तरीके से झूठ को सच साबित कर देना वकालत है। जो वकील जितने बड़े झूठे मामलों को

जिता दे, उतनी ही उसकी मशहूरी होती है। फिर वह चाहे एलसेशियन पाले, चाहे सचमुच भेड़िए। उसकी ख्याति को वे बढ़ायेंगे ही। और वह कुत्तों या भेड़ियों वाला वकील प्रसिद्ध हो जायगा।

(बाहर कार के रुकने की आवाज़ आती है।)

जान : जज शायद आ गया।

[बढ़कर बाहर के दरवाजे में देखता है। चपड़ासी पिछले दरवाजे की ओर भागता है।]

— : यह कार उसी की है। देखो बतसिया घबराना नहीं, तुम्हारे सामने जो कुछ हुआ, निडर होकर वही बयान कर देना। यह समझ लो कि मामले की जीत हार तुम्हीं पर निर्भर है। दुश्मन का वकील तुम्हें बहकाने की कोशिश करेगा, पर तुम अपने बयान से जौ भर भी इधर-उधर न होना। जो कुछ तुम्हारे सामने हुआ बस वही बयान कर देना।

(बीएट्रिस उत्तर नहीं देती।)

— : सुना बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

जान : हाँ हाँ सुन लिया तुम्हारा नाम। लो अब तैयार रहो।

[रीडर जल्दी से आकर अपनी मेज पर बैठता है। चपड़ासी जंगले के बाहर रीडर के निकट खड़ा होता है।]

जान : ममी तुम उधर बेंच पर बैठ जाओ। कोनी तुम भी वहीं बैठो। अभी जज के आते ही आवाज़ पड़ेगी। बतसिया होश्यारी से......

[जज अपने कमरे से आता है। पीछे पीछे उसका चपड़ासी है जो अन्दर के दरवाजे पर आदेश की प्रतीक्षा में बैठ जाता है। सरिश्तेदार† एक फाइल जज ने आगे कर देता है और चपड़ासी से कुछ कहता है। चपड़ासी बाहर दरवाज़े पर जाकर आवाज़ देता है।]

चपड़ासी : चलो कोई इमली टैल्ज बनाम एडविन शाह, चलो कोई इमली टैल्ज बनाम एडविन शाह।

(एडविन, उसका वकील तथा डेविड आदि आते हैं।)

जान : ओह ह्वाट ए हौरीबुल प्रोननसियेशन* (जज से) हाजिर हैं योर आनर।

जज : गवाहों पेश करो।

जान : चलो बतसिया, गवाहों के कटहरे में खड़ी हो जाओ।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम......

जान : वहाँ खड़ी होकर नाम बताओ।

[चपड़ासी बीएट्रिस को गवाहों के कटहरे में ले जाता है। दोनों वकील जंगले के पास तक बढ़ आते हैं।]

चपड़ासी : (बीएट्रिस से) नाम बताओ!

जान : अपना नाम बताओ बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बतसिया नहीं, बीएट्रिस जायसवाल है।

चपड़ासी : अब यह लो बाइबिल और कसम खाओ कि जो कहूँगी सच कहूंगी।

(बीएट्रिस बाइबिल लेकर कसम खाती है।)

बीएट्रिस : जो कहूँगी सच सच कहूँगी।

---

† रीडर। *What a horrible pronunciation.

जान : तुम मुद्दई को जानती हो।

बीएट्रिस : मुद्दी, कौन मुद्दी ?

जान : अरे कम्पेलेंटनें, तुम्हारी मिस साब। अरे एडविन साब के खिलाफ मामला चलाया है न इन्होंने।

बीएट्रिस : (तनिक हंसकर) अरे तो कोनी मिस साब कहिए। हम तो इनके नौकर ठहरे सरकार।

जान : तुम प्रतिवादी को भी जानती हो।

बीएट्रिस : प्रतिवादी !

जान : अरे, मुद्दाअला...डिफेन्डेन्ट...डिफेन्डेन्ट...अरे एडविन साहब।

बीएट्रिस : अच्छी तरह जानते हैं हुजूर इन्हें। मिस साब से इनकी सगाई हुई थी।

जान : तुम उस दिन मौजूद थी।

बीएट्रिस : हम तो नौकर ठहरे हुजूर।

जान : हाँ या न में जवाब दो बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

जान : अच्छा, तो बताओ तुम उस दिन मौजूद थी।

बीएट्रिस : सभी लोग थे हुजूर।

जान : (झुँझलाकर) तुम थी या नहीं।

बीएट्रिस : हम न होते तो कैसे जानते कि सब लोग वहाँ थे।

जान : ओह यू आर हौरीबल।*

बीएट्रिस : देखिए हुजूर गाली न दीजिए।

---

* oh you are horrible !

जान : (झुँझलाहट को बरबस काबू में रखते हुए) हम गाली नहीं देते, तुम अदालत को बताओ कि किस दिन सगाई हुई और तुमने क्या देखा।

बीएट्रिस : ट्यूज़डे, बीस तारीख शाम को एडविन साहब चाय पर आये। उसी दिन मेम साहब ने बताया कि उनके साथ मिस साहब की बात पक्की हो गयी है, फ्राइडे को पादरी इंगेजमेंट को ब्लेस करने आयेंगे और चाय पार्टी होगी।

जान : थोड़े में कह।

बीएट्रिस : (माथे पर तेवर पड़ जाते हैं।) बस फ्राइडे को पार्टी हुई। पादरी साहब ने ब्लेस की और उनके जाने के दस मिनट बाद एडविन साहब ने सगाई तोड़ दी।

जान : खोल कर कहो बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है! खोल कर कहती हूँ तो आप कहते हैं थोड़े में कहो, थोड़े में कहती हूँ तो......

जान : (बड़ी कठिनाई से संयत रहकर) यह सगाई के टूटने की बात खोल कर कहो। क्या बात हुई। मिस साहब ने क्या कसूर किया ?

बीएट्रिस : पादरी साहब को जाना था। इसलिए सगाई को ब्लेस करते ही वे तैयार हो गये। एडविन साहब और कोनी मिस साहब उन्हें छोड़ने गये और फिर ड्राइंग रूम ही में रह गये। मैं चाय के लिए बुलाने गयी तो उन्होंने कहा कि यहीं चाय ले आओ। मैं ट्रे में चाय ले गयी। कोनी मिस साहब ने कहा—बनाओ। मैंने प्यालों में चाय ढाली और एडविन साहब से पूछा—कितनी चीनी

डालूँ ? उन्होंने कहा एक चम्मच। तब मैं मिस साहब से बोली कि आप के प्याले में तो चार हो। डालू मिस साहब बोलीं—हाँ। तब एडविन साहब ने कोनी मिस साहब से पूछा—तुम चाय में चार चम्मच चीनी पीती हो? मिस साहब बोलीं—मैं पाँच पीने की सोच रही हूँ! साहब बोले—यह तो क्रिमीनल है। तुम्हारी हमारी कैसे बन सकती है!

जज : (ऐसे स्वर में जिससे न यह पता चले कि उन्होंने उस बयान का समर्थन किया और न यह कि विरोध) चाय में चार चम्मच चीनी पीना क्रिमिनल है।

प्रतिवादी वकील : योर आनर आप जानते हैं राशन के ज़माने में जो एक प्याले में चार चम्मच चीनी पीयेगा, वह ब्लेक मार्केट से खरीदेगा। ब्लेक मार्केट में बेचना ही जुर्म नहीं, ख़रीदना भी है।

जज : हूं......

(ओठों में हंसते हैं।)

जान : तो मिस साब ने सगाई तोड़ दी।

बीएट्रिस : नहीं मिस साहब ने कहा मैं ऐसे प्रेमी को पाकर कैसे छोड़ सकती हूँ जो मेरे जूते को बरस भर चूम सकता है।

जान : यह कब कहा था मिस साहब ने ?

बीएट्रिस : मेरे सामने कहा था। आपने मुझे बाइबिल की कसम दिलायी है तो क्या मैं झूठ बोलूंगी। मैं अब बतासो नहीं रही कि झूठ मूठ दिन भर में बीस बार गंगा मइया की कसम खाऊँ। मिस साहब ने यह कहते हुए उंगली आगे बढायी और साहब ने अंगूठी उतार ली।

जज : यह बरस भर के लिए जूता चूमने की क्या बात थी ?

जान : योर आनर, प्रेम-मुहब्बत में आदमी क्या क्या नहीं कहता। इससे यह पता चलता है कि प्रतिवादी ने कैसे अपनी गहरी मुहब्बत जता कर वादी को फांसा। वादी के बाप ने कभी उसका जो अपमान किया था, उसका बदला उसकी लड़की से लेने के लिए उसने कैसे ओछे हथियारों से काम लिया (बतसिया से) तो एडविन साहब ने तुम्हारे सामने अंगूठी उतारी बतसिया।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है और मैं अंगूठी उतारने की बात कह चुकी हूँ।

प्र० वकील : लेकिन एक बात आप छोड़ गयीं मिस बीएट्रिस।

बीएट्रिस : (इस बात पर खुश होकर कि उसने न केवल उसका ठीक नाम पुकारा है बल्कि आदर से पुकारा है) कौन सी बात हुजूर?

प्र० वकील : आपने एडविन साहब से कहा कि मिस साहब तीती हैं?

जान : युअर आनर गवाह को पहले बयान खत्म करने दिया जाय।

जज : हां हां।

जान : तो बतसिया तुम्हारे सामने एडविन साब ने अँगूठी उतार ली।

बीएट्रिस : साब आप बहुत जल्द भूल जाता है। इतनी बार हम बोला कि हमारा नाम बीएट्रिस है पर तुम भूल जाता है। और अब हमने बताया कि हमारे सामने एडविन साब

ने अंगूठी उतार ली तो वह भी तुम भूल गया। तुम कैसे प्रेक्टिस करेगा ?

जान : (झुंझलाकर) क्या बकती हो ?

(अदालत में ज़ोर से ठहाका पड़ता है।)

जान : (खिन्न होकर) युअर आनर गवाह का बयान खत्म हुआ।

(अदालत में फिर हल्की सी हँसी फूटती है।)

प्र०वकील : युअर आनर मैं एक दो सवाल पूछना चाहता हूँ।

जज : पूछो लेकिन जल्दी और इधर उधर के सवाल नहीं।

प्र०वकील : क्यों मिस बीएट्रिस आपने एडविन साहब से कहा था कि कोनी मिस तीती हैं ? देखिए आप ने बाइबिल की कसम खायी है।

बीएट्रस : कहा था हुजूर। हमने तो बल्कि कहा था कि कोनी मिस एकदम तीती हैं। और आप अपना भला चाहते हैं तो सगाई तोड़ दें।

जान : यह तुमने कब कहा ?

प्र०वकील : (बड़े सत्कार भरे पिघले स्वर में) अपने मालिक के खिलाफ़ आपने यह बात क्यों कही ?

बीएट्रिस : बात सच्ची है। मिस साब से शादी करके एडविन साब का दम नाक में आ जाता। और फिर यही बात कहने का हुकुम मालिक ने दिया था।

प्र०वकील : किस मालिक ने ?

बीएट्रिस : जान साब ने।

जान : क्या बकती है !

प्र०वकील : इन्होंनें क्यों कहा ?

बीएट्रिस : (बीएट्रिस जानको कोई तीखा उत्तर देने जा रही थी कि प्रतिवादी वकील की बात के उत्तर में कहती है।) कि डर कर एडविन साहब सगाई छोड़ दें और वे उन पर मामला चलाकर पन्द्रह हज़ार रुपया वसूल कर सकें।

प्र०वकील : हीयर हीयर ! युअर आनर !

जान : (हताश भाव से चिल्ला उठता है।) बतसिया तुमने हमें तबाह कर दिया।।

बीएट्रिस : हुजूर मेरा नाम बीएट्रिस है।

(पर्दा एक दम गिरता है)

सयाना मालिक

[एक घरेलू झाँकी]

पात्र

गुप्ता बाबू	एक हेड क्लर्क
कौल साहब	
दीन दयाल	
बिन्दा बाबू	उनके पड़ौसी
श्याम	
सरदार साहब	
कैप्टन लीकू	
हीरा	नौकर

[पर्दा गुप्ता साहब के ड्राइंगरूम, में उठता है। दायां-बायां दीवारों में क्रम से बाहर से आने और अन्दर को जाने के दरवाज़े हैं। गुप्ता साहब हेड क्लर्क हैं। जैसा किसी हेड क्लर्क का ड्राइंग रूम हो सकता है वैसा ही उनका भी है। कमरे में बेत के कौच का एक सेट भी पड़ा है। एक आफिस टेबल और टेलीफोन भी है। अंगीठी पर कुछ खिलौने और तस्वीरें भी सजी हैं और चन्द सुरुचि पूर्ण चीज़ों से कमरे को सजाने की अपेक्षा बहुत सी चीज़ों से उसे भरने का प्रयास किया गया है।

इस समय गुप्ता साहब और उनके मित्र एक गोल मेज़ बीच में रखे उसके गिर्द बैठे ब्रिज खेलने में तन्मय हैं। दो एक केवल देखकर ही खेल का आनन्द पा रहे हैं।

पर्दा उठते समय बिंदा बाबू पत्ते बाँटते दिखायी देते हैं। कुछ क्षण मौन रूप से पत्ते बँटते रहते हैं, फिर :]

श्याम : (अपने पत्ते लेते हुए) कम्बख्त गजब की गर्मी पड़ रही है, गुप्ता साहब घर में कुछ बर्फ़-वर्फ़ है।

गुप्ता : (पत्ते उठाते हुए) बर्फ तो शायद न हो। थी तो सही, पर खाने के वक्त खत्म हो गयी। लेकिन मैं भेजता हूँ नौकर को !

दीनदयाल : अरे भाई बारात आने पर दुलहन के कान न विंधवाओ। सुराही का पानी ही पिला दो ?

श्याम : कब बर्फ आयेगी और कब हम पानी पियेंगे, और यहाँ प्यास के मारे दम निकला जा रहा है।

गुप्ता : (पत्ते उठा कर लगाते हुए) सुराही का पानी तो गर्म होगा, अभी भरा गया है, लेकिन मैं नौकर को भेजता हूँ,

अव्वल तो नुक्कड़ पर मिल जायगी, नहीं भाग कर चौक से ले आयेगा। (नौकर को आवाज़ देते हैं।) हीरे! ओ हीरे!

हीरा : (दूर से) जी बाबू जी!

(प्रवेश करता है।)

— : जी!

गुप्ता : ज़रा भाग के कहीं से एक आध सेर बर्फ ले आ।

हीरा : जी बहुत अच्छा।

(चला जाता है।)

बिंदाबाबू : (जो पत्ते बाँट चुके हैं) हाँ भई बोलो श्याम।

श्याम : वन क्लब

दीनदयाल : वन नो ट्रम्प।

गुप्ता : थ्री क्लब्ज

बिंदाबाबू : थ्री नो ट्रम्पस

श्याम : डबल

दीनदयाल : रीडबल

(दरवाजे पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक होती है।)

कैप्टनलीकू : (बाहर से) गुप्ता साहब! गुप्ता साहब!

(सब खेल में व्यस्त हैं, कोई उत्तर नहीं देता)

दीनदयाल : क्यों गुप्ता बाबू बोलते हैं?

गुप्ता : नहीं। चलिए खोलिए बिंदाबाबू।

[दस्तक फिर होती है और घबराई हुई आवाज़ आती है।]

लीकू : (बाहर से) गुप्ता साहब, गुप्ता साहब।

गुप्ता : लीकू है शायद ।

[उठकर दरवाज़ा खोलते हैं । कैप्टन लीकू घबराये हुए प्रवेश करते हैं ।]

गुप्ता : कहिए क्या बात है घबराये हुए क्यों हैं ?

लीकू : क्या मैं टेलीफ़ोन कर सकता हूँ ।

गुप्ता : हाँ, हाँ आइए आइए क्या बात है ?

लीकू : अरे साहब वह जो नया नौकर रखा था न, वह सब बर्तन लेकर चम्पत हो गया है ।

बिंदाबाबू : बर्तन लेकर चम्पत हो गया है !

(लीकू टेलीफ़ोन का चोंगा उठाते हैं)

लीकू : जी हाँ ! कोतवाली का फ़ोन नम्बर क्या है ?

गुप्ता : हमें तो कभी वास्ता नहीं पड़ा कोतवाली से। यह डायरेक्ट्री लीजिए ।

(टेलीफ़ोन के नीचे से डायरेक्ट्री निकाल कर देते हैं ।)

लीकू : (जल्दी जल्दी डायरेक्ट्री के पन्ने पलटते हुए) अजीब मुसीबत है । एक भी बर्तन नहीं छोड़ गया कमबख्त... यह रही कोतवाली......टू टू फ़ोर (टेलीफ़ून करता है) हेलो, हेलो, हेलो, इज़ दैट टू टू फ़ोर ? कैप्टन लीकू दिस साइड...नमस्कार, नमस्कार...अरे साहब गजब हो गया। दो तीन दिन से नया नौकर रखा था।आज हम सिनेमा देखने गये, वापस आये तो मालूम हुआ कि नौकर ही गायब नहीं, सब बर्तन भी गायब हैं......नहीं बाक़ी तो ख़ैरियत है । कमरों को ताले लगा गये थे , रसोई घर खाली था और उसमें सब क्राकरी थी......लेकिन साहब बर्तन भी तो चार पाँच सौ रुपये से कम के नहीं हैं।

बड़ी कीमती क्राकरी थी......आज कल वैसे सेट देखने तक को नहीं मिलते। अरे साहब एक भी बर्तन नहीं रहा। (ज़रा हँस कर) यह तो मैं नहीं कह सकता। साथ में ज़रूर कोई और भी मिला होगा। वह कहते है न, यारी चोरी चाकरी बिना वसीले ना...अब सन्देह की बात क्या कहूँ।...आइए तो कुछ पता चले। थैंक्स, बाई, बाई!

श्याम : अजीब भुक्खड़ चोर है। बर्तन ही उड़ा कर ले गया।

लीकू : अजी साहब, चार पाँच सौ रुपये से कम के न थे बर्तन। आज कल लेना हो तो एक हज़ार रुपये लग जायें। चार सेट तो चाय के थे। तीन डिनर सेट थे। फिर रिकाबियाँ, गिलास, जग और दूसरा सामान।

कौल : लेकिन इतनी क्राक्री वह ले कैसे गया? और फिर दिन दिहाड़े!

लीकू : अब यह मैं कैसे बता सकता हूँ? जरूर दो एक मिले हुए होंगे। अकेले का काम तो यह है नहीं।

दीनदयाल : लेकिन आपने इतनी सारी क्राक्री रसोई घर में कैसे रख दी।

लीकू : (ज़रा हँस कर) अब क्या बताऊँ। बात दुखद भी है और दिलचस्प भी। मिसेज लीकू को तो आप जानते हैं काम करने की आदत नहीं। उनके लिए तिनका तोड़ना पहाड़ ढाने के बराबर है। हमेशा नौकरों में रही हैं। बनारस में तो तीन नौकर थे, यहाँ जब से आये हैं, कोई नौकर ही नहीं मिलता। आता है तो दो दिन से ज्यादा टिकता नहीं।

कौल : नौकरों के दिमाग की एक ही कही। आज कल बीवी मिल सकती है, पर नौकर नहीं मिलता।

लीकू : मुसीबत यह है कि मिसेज़ लीकू को तो काम करने की आदत नहीं। मैं स्वयं रोटी पकाने से रहा। लंच यदि होटल में भी ले लूँ तो शाम का खाना तो घर ही पर खाना पड़ता है। फिर चाय और नाश्ता, मित्र भी तो आ जाते हैं। हर घड़ी होटल को तो भागा नहीं जा सकता। इधर हुआ यह कि मिसेज़ लीकू रोटी तो पका लेतीं। चाय और नाश्ता भी बना लेतीं। पर बर्तन मलने से उनकी रूह फ़ना होती। सेट पर सेट निकाल कर जूठा रखती जातीं। तीन चार दिन में सब बर्तन और काक़ी रसोई घर में आ जाती, तभी कोई नौकर मिल जाता, उन सब को मलता और वे फिर अलमारी में सजाये जाते। तीन नौकर तो इतने सारे बर्तन मलने से ही भाग गये और यह आया तो बर्तन ही लेकर चम्पत हो गया।

(मित्र ज़रा सा हँसते हैं।)

श्याम : खैर अब आपका नौकर आयेगा तो भागेगा नहीं।

बिंदाबाबू : (हलकी भर्त्सना से) आप भी खूब हैं। जो इनकी मुसीबत में मज़ाक कर रहे हैं।

लीकू : अरे नहीं साहब, मुझे खुद हँसी आती है, इसी को तो कहते हैं—दुःख पै रोना बला पै हँसना। हम तो नौकर की ही मुसीबत में परेशान थे, अब यह नयी विपत्ति गले पड़ गयी।

गुप्ता : पर आपको उसके घर बार का तो पता होगा।

लीकू : बताया तो उसने था, पर मैं लिखना भूल गया।

गुप्ता : (सहसा जोश से) यही ग़लती की आपने। सयाना मालिक

नौकर रखता है तो पहले उसका नाम और अता पता पूछ लेता है। न केवल यह बल्कि उसकी पूरी-पूरी जाँच कर लेता है। सयाना मालिक नौकर की दस पन्द्रह दिन की पगार नीचे रखता है, उसे ज्यादा छुट्टियाँ नहीं देता, काम में लगाये रखता है और दूसरों के नौकरों से ज्यादा मिक्स नहीं होने देता।

श्याम : याने सयाने मालिक के लिए नौकर का जेलर होना आवश्यक है। मैंने कभी इतनी सावधानी से काम नहीं लिया, लेकिन कभी किसी नौकर से मुझे शिकायत नहीं हुई। कई ऐसे नौकर भी मेरे यहाँ रहे, जिन्होंने दूसरी जगह चोरियाँ कीं। पर मेरे यहाँ कौड़ी की चीज़ को हाथ नहीं लगाया। मैं समझता हूँ कि नौकर को भी अपने जैसा आदमी समझना चाहिए; उसकी आवश्यकताओं—बीड़ी, पान, सिगरेट अथवा महीने में एक आध सिनेमा—का ख्याल रखना चाहिए, समय पर उसे पगार देनी चाहिए; झगड़ा होने पर या नौकर की ज़रूरत न रहने पर भी उसे पूरी पगार के अलावा चार छै आने अधिक देकर विदा करना चाहिए। नौकरों के समाज में सदा आपका क्रेडिट बना रहेगा।

गुप्ता : (अपनी बात कटती देख और भी जोश से) आपको किसी नौकर के हाथ नहीं लगे, नहीं सारी चतुराई धरी रह जाती। मैं तो भाई बिना अता पता लिये कदापि नौकर को रखने के हक में नहीं।

कौल : अरे भाई अते पते की भी खूब कही। अब तो मेरा पुराना नौकर आ गया है। पिछले दिनों जब वह छुट्टी पर गया तो मैंने एक नौकर रखा, चपरासी के यहाँ आया था। उसने कहा कि मैं साहब इसकी गारंटी तो नहीं देता, पर

है मेरे गाँव का। दूसरे ही दिन मेरे दोनों पेन, घड़ी और दस रुपया लेकर भाग गया, अब कहिए अते पते को लेकर चाटा जाय।

गुप्ता : आपने पुलिस में रिपोर्ट की होती।

कौल : पुलिस में रिपोर्ट की थी। सब इन्सपेक्टर कहने लगे, रखते समय रिपोर्ट करते तो कुछ बात भी थी।

गुप्ता : (दायें हाथ की तर्जनी से बायें हाथ की हथेली पर ज़ोर देते हुए) हियर यू आर ! मैं हमेशा नौकर का पता ही नहीं नोट करता, पुलिस से वेरीफाई verify भी करा लेता हूँ। और कम से कम उसकी एक महीने की पगार अपने हाथ के नीचे रखता हूँ।

श्याम : यह सब सावधानी तो मुझे निरर्थक लगती है। हाँ यदि कोई कर सके तो यह करना चाहिए कि कीमती चीज़ें आदमी सम्हाल कर रखे, रुपये पैसे यदि बिखरे रहें तो खाह-म-खाह लालच हो आता है। साधारण नौकर ताला तोड़ने का साहस नहीं करता, यह काम तो पुराने पापी करते हैं। लेकिन मैं तो भाई यह सब भी नहीं कर सकता। ताला लगाने की न मेरी आदत है न मेरी पत्नी की। मैं तो अपने नौकर को इतना सन्तुष्ट रखता हूँ कि सामने पड़ी चीज़ को भी वह न उठाये।

लीकू : पर भाई कोई नौकर चार दिन रहे तो उसे संतुष्ट करने का अवसर मिले।

[पड़ोसी सरदार साहब आते हैं। जो देश के विभाजन के समय इधर आये थे। अजीब पंजाबी-मिश्रित हिंदी बोलते हैं।]

सिक्ख : क्यों कैप्टन साहब, असां सुण्या आपके घर चोरी हो गयी।

लीकू : जी हाँ सरदार साहब, नया नौकर रखा था, सब बर्तन उठाकर ले गया।

सिक्ख : कुछ होर ते नहीं ले गया ?

लीकू : नहीं और तो खैरियत रही।

सिक्ख : भला होइया, भला होइया। नहीं जे कुछ होर लै जांदा ते वड़ा कहर हो जांदा।

लीकू : दूसरे कमरों को ताले लगा रक्खे थे सो बच गये।

बिदाबाबू : अरे साहब ताले साधुओं के लिए होते हैं चोरों के लिए नहीं।

सिक्ख : होर क्या जी, हम जब पंजाब से आये तो हेस्टिंगज रोड पर अपने दोसत के यहाँ ठहरे, ओत्थे की होया जी, गरमियाँ की बहार थी। बाहर सोये होए साँ। चोर अन्दरों सब सफाई कर गया। मज़ा इह कि सब ताले लग्गे होए थे। पुलिस में रिपोर्ट कीती ते उनके मज़ाक सुणने पड़े।

श्याम : मुझे इस बात पर 'जस्टिस महेश सिंह' का किस्सा याद आ गया। 'जस्टिस सिंह' आप लोगों को शायद मालूम न हो, क्रिश्चियन थे। पंजाब हाईकोर्ट के प्रसिद्ध जज थे। दुबले पतले, नाटा कद, लम्बी सी नाक, बेढंगी ठोड़ी और काला रंग, शक्ल से और चाहे जो मालूम हों, पर जस्टिस छोड़, जस्टिस के क्लर्क भी न दिखायी देते। अजीब यतामत बरसती थी उनके मुँह पर। उनका स्वाभाव था कि प्रातः चार पाँच बजे उठकर सैर को जाया करते थे। एक दिन सैर से वापस जो आये तो पता चला कि इस बीच में कोई चोर सब कुछ साफ कर गया है।

गुप्ता : कोई पुराना पापी रहा होगा। बदला लिया होगा जस्टिस साहब से अपनी सज़ा का।

श्याम : यह तो राम ही जाने, पर जस्टिस सिंह उस समय 'नाइट सूट' ही में थे। लोयर माल पर उनकी कोठी थी। पुरानी अनारकली का थाना पास ही था। नाइट सूट पहने ही पैदल रिपोर्ट लिखाने चल दिये। थाने में जो सिपाही ड्यूटी पर था। वह उन्हें जानता न था। उन्होंने थानेदार को तलब किया तो उसने उन्हें मज़ाक किया कि जो कहना है मुझसे कह, थाने दार से क्या सगाई करनी है। जस्टिस महेश सिंह को क्रोध तो आया, पर सिपाही के मुंह लगना उन्होंने उचित न समझा और बताया कि मैं महेश सिंह हूँ और मेरे बँगले पर चोरी हो गयी है। यह पतला दुबला, काला, नाटा महेश सिंह जस्टिस महेश सिंह है, यह उसके देवताओं को भी ख्याल न था। सिपाही बिना कुछ लिये कब रिपोर्ट लिखता। थानेदार भी उस समय आ गया। एक जरूरी केस के सिलसिले में वह जा रहा था। जस्टिस महेश सिंह ने अपनी बात दुहराई। उसने भी उनको कभी न देखा था। सिपाही ने हँसते हुए कहा कि इस कंटे के घर चोरी हो गयी है। थानेदार ने मज़ाक किया कि जाकर बीवी से पूछे हम क्या कर सकते हैं। जिससे आशनाई होगी उसी को उठा दिया होगा सब कुछ। अब जस्टिल महेश सिंह के संतोष का पैमाना भर गया। टैलीफ़ोन उठाकर उन्होंने सुप्रिंटेंडेण्ट को फ़ोन किया। दस मिनट के अन्दर अन्दर वे कार में आ पहुँचे। और सबकी वर्दियाँ उतरवालीं।

दीनदयाल : लेकिन रिपोर्ट में उन्होंने अपना नाम न लिखवाया ?

श्याम : नाम तो बताया, पर जस्टिस हैं, यह नहीं बताया। सुप्रिंटेंडेंट को फोन किया तब उनको पता चला।

सरदार साहब : मुझे भी इस पर लाहौर दी इक बात याद आ गई। साडे इक रिश्तेदार वहाँ सिटी मजिस्ट्रेट थे। एक दिन ऐन माल पर उनकी मोटर बिगड़ गयी। खैर ओहणा ने ड्राइवर को वहाँ छोड़िया ते ताँगा कीता। चौरस्ते पर सिपाही ने ताँगे वाले को पकड़ लीता। बात इह होई कि जब ताँगा सिपाही के पास पहुँचा तो सिपाही ने हाथ बदल दित्ता। घोड़ा तो तेज़ जा ही रहा था, आगे वढ़ गया और सिपाही ने सीटी दे दी। सिटी मजिस्ट्रेट साहब ने सिपाही को डाँटा कि ग़लती तुम्हारी है। सिपाही नया था। उनको जानता न था। उसने कहा 'जा, ओ सरदारा अपना कम्म कर, नहीं चलान कर देआँगा'। सिटी मजिस्ट्रेट साहब कुछ कहने ही वाले थे कि ताँगे वाले ने अट्ठ आने के पैसे जरा अलग होकर सिपाही के हत्थ पर रख दित्ते। सिटी मजिस्ट्रेट होराँ पुच्छिया कि तुमने ऐसा क्यों कीता, कर लेने देते चालान। ताँगे वाले ने बिना यह जानते होए कि यही साहब सिटी मजिस्ट्रेट हण, शुद्ध पंजाबी भाषा में दस गालियाँ देते हुए कहा कि मामला जाता माईं या सिटी मजिस्ट्रेट के यहाँ और वह पाँच रुपये ठोक देता। अब अठन्नी ही में जान बच गयी है। बिना क्रोध किये उन्होंने पुच्छिया, 'तुम कभी गये हो उनकी अदालत ये।' तागें वाले में भोलेपने से कहा, 'रब्ब न ले जाये। जो गया है रोंदा आया

है। श्रो पहले दो रुपये जुर्माना करदे हुए। आगे से उज्र करो तो पाँच रुपये ठोक देते हुए।' बात सच थी। खैर सिटी मजिस्ट्रेट साहब ने उस सिपाही को अपना परिचय दित्ता और उससे सीटी लेकर दूसरे सिपाही को बुलाया और उसकी वर्दी उतरवा ली। ताँगे वाला लग्गा गिड़गिड़ाने। लेकिन सरदार साहब ने ओस को कुछ नहीं किहा, बल्कि धन्नवाद दिया कि उसने उनकी आँखें खोल दीं।

(त्रिपाठी घबराये हुए आते हैं।)

त्रिपाठी : क्योंजी लीकू साहब, सुना आप के चोरी हो गयी।

लीकू : अरे हाँ भाइ पुलिस को अभी फ़ोन किया गया है।

त्रिपाठी : अरे साहब नौकरों की बड़ी कठिनाई है। आजकल ढंग का नौकर मिलता ही नहीं। मिलते हैं, तो चोर, उचक्के, जेब कट, आपने कहाँ से लिया था नौकर ?

लीकू : अरे भाई क्या बताऊँ। तीन नौकर आकर जा चुके और बीवी मेरी काम करते आजिज़ आ गयी थी। बर्तनों से रसोई घर भर गया था, पानी पीने तक के लिए गिलास साफ न था। मैं दफ्तर जाने लगा कि मुझे घर के सामने ही मिल गया। हीरा जाने क्या लेने चौक जा रहा था, उसने मुझे रोका भी कि साहब बिना अता पता लिये नौकर न रखिए, पर मेरी ज़रूरत अंधी थी। शक्ल से इतना भोला लगता था कि बाद में हीरे ने भी कहा कि साहब, यह चोर नहीं मालूम होता।

त्रिपाठी : आपने गज़ब किया, नौकर आप को कभी ऐसे नहीं रखना चाहिए, आपने एम्प्लायमेंट एक्सचेंज को क्यों नहीं लिखा ?

लीकू : पहले तीन नौकर एम्प्लायमेंट एक्सचेंज से आये थे।

कौल : एम्प्लायमेंट एक्सचेंज की भली चलाई। वे जैसे रसोइए भेजते हैं, वह कुछ मैं ही जानता हूँ। पिछले महीने मैंने भी उनसे रसोइया भिजवाने की प्रार्थना की थी। उत्तर मिला कि ज्योंही कोई आया भिजवायेंगे। दूसरे दिन जो देखता हूँ तो एक अजीब टेढ़ा मेढ़ा, मैला कुचैला बेहंगम सा ठिगना आदमी चला आ रहा है। टखनों से ऊँचा पायजामा, बड़ा सा गर्म कोट जो निश्चय ही किसी मोटे आदमी का रहा होगा। उसके गले में बाँस के हौवे जैसा लटक रहा था। सिर के इर्द गिर्द उसने एक मैला अंगोछा लपेट रक्खा था। शक्ल से वह किसी अस्तबल का साईस मालूम होता था। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मालूम हुआ कि नौकरी के दफ़्तर ने खाना पकाने के लिए भेजा है। मैंने कहा, तुम कहीं साईस रहे हो? मालूम हुआ कि साईस भी रहा है, ताँगा भी चलाया है, मिलिट्री में नौकरी भी की है और अब तेरह दिन से घास खोद रहा है। मैंने कहा, 'खाना वाना पका लेते हो?' कहने लगा, 'हाँ जी आप एक मौका दीजिए। छै महीने से एक बंगाली बाबू के यहाँ खाना पकाने का काम कर रहा था।' मैंने पूछा 'वहाँ से क्यों छोड़ा?' कहने लगा, 'मेरा दिमाग जरा गर्म है।' मैंने कहा, 'दिमाग तो मेरा भी गर्म है तो काम कैसे चलेगा।'

सरदार : अरे साहब, मेरे एक दर्जी मित्र ने एम्प्लायमेंट एक्सचेंज से एक 'कटर'* माँगा उन्होंने 'ग्रास-कटर'† भेज दिया।

---

*सूट आदि काटने वाला, †घास काटने वाला।

गुप्ता : लेकिन एम्प्लायमेंट एक्सचेंज से नौकर मँगाना इस बात की गारण्टी तो नहीं करता कि वह चोरी न करेगा। उनके पास कोई अपनी सी. आई. डी. तो है नहीं कि वे नौकरी की दरख्वास्त देने वाले के इनटेसीडेण्ट (पूर्व चरित) का पता करते फिरें। मैं इसके लिए कभी उनका भरोसा नहीं करता। नौकर मैं प्रायः वहीं से ले लेता हूँ, पर सी. आई. डी. का काम खुद करता हूँ। अब इसी हीरे को ले लीजिए। जब इसे मैंने नौकर रखा तो अच्छे काम और चरित्र के सर्टीफिकेट देखने पर ही संतोष नहीं किया। कहाँ का रहनेवाला है? इसका पता किया। उसके घर चिट्ठी लिख कर देखा कि पता गलत तो नहीं दे दिया। जब वहाँ से उसके पिता का जवाब आ गया तो मुझे तसल्ली हुई। आप लोग नौकर रख लेते हैं और पता रखते नहीं, फिर वे चोरी न करें तो क्या हो?

श्याम : लेकिन भाई वह तुम्हारा नौकर बर्फ लेने गया था। अभी तक नहीं आया।

गुप्ता : (ज़ोर से आवाज़ देते हैं) हीरे...हीरे!

(गुप्ता साहब की लड़की रन्नी भागी हुई आती है।)

रन्नी : बाबू जी, बाबू जी, हीरा गहने उठाकर भाग गया है।

गुप्ता : (घबराये स्वर में) क्या कहती हो, कौन से गहने ले गया?

रन्नी : बीनू के घर शादी है ना, माता जी वहाँ गयी थीं, आकर उन्होंने गहने उतारे थे कि दूसरे कमरे में कुक्कू रो पड़ा। ट्रङ्क में रक्खे बिना वे दूसरे कमरे में चली गयीं। आकर देखा तो एक भी नहीं। माता जी आपको बुला रही हैं।

गुप्ता : (जाते जाते झल्लाये हुए स्वर में) मैंने बीस बार कहा कि चीज़ सम्हाल कर रखो पर इन औरतों को........

(चले जाते हैं।)

बिंदाबाबू : मैं भी कहूं कि बर्फ की दुकान तो नुक्कड़ पर है। यह साला आया क्यों नहीं।

दीनदयाल : बताइए अब अते पते को चाटेंगे, वह कोई घर थोड़ी जायगा।

बाहर से आवाज : लीकू साहब, लीकू साहब।

लीकू : कौन है।

बाहर से : पुलिस आयी है।

लीकू : आया।

[जाते हैं—कौल, त्रिपाठी और सरदार साहब उनके साथ निकल जाते हैं।]

दीनदयाल : अच्छा हुआ लीकू ने पुलिस को बुला लिया, गुप्ता को तकलीफ न करनी पड़ेगी।

श्याम : जाने किस बुरे महूर्त में ताश खेलने बैठे थे।

(पत्ते समेटता है, गुप्ता घबराये हुए दाखिल होते हैं।)

गुप्ता : चार हज़ार के गहने ले गया हरामज़ादा! मेरे ख्याल में लीकू के नौकर ने ज़रूर हीरे को भी मिला लिया होगा। क्या नम्बर बताया था लीकू ने पुलिस स्टेशन का?

(डारेक्ट्री उठाते हैं।)

दीनदयाल: फ़ोन करने की ज़रूरत नहीं। लीकू साहब के घर पुलिस आ गयी है।

[सभी दरवाज़े की ओर जाते हैं। पर्दा गिरता है।]

———

तौलिये

पात्र

वसन्त

मधु

सुरो

चिन्ती

मङ्गला

स्थान

नयी दिल्ली

[पर्दा वसन्त के ड्राइङ्ग रूम में उठता है। ड्राइङ्ग रूम न बहुत बड़ा है न छोटा। न सामान से अधिक भरा है न बिलकुल खाली। वसन्त एक फर्म में मैनेजर है। अढ़ाई सौ वेतन पाता है। दिल्ली में अढ़ाई सौ अधिक महत्व नहीं रखते, पर वह फर्म का मैनेजर है, इसलिए कमरा सजा है और दरवाज़ों पर पर्दे लगे हैं। दायीं दीवार के साथ मेज़ लगी है, उस पर कागज़-पत्रों के अतिरिक्त टेलीफ़ोन भी रखा है।

मेज़ के इधर एक दरवाज़ा है, जो अन्दर कमरे में जाता है। मेज़ के उस ओर कोने में एक अँगीठी है, किन्तु आग शायद इसमें नहीं जलती, क्योंकि अँगीठी का कपड़ा अत्यन्त सुन्दर है, उस पर सजावट की चीज़ें भी रखी हुई हैं—वैसी ही जैसी मध्यवर्गीय घरों में होती हैं—लेकिन वे बिखरी नहीं हैं, करीने से लगी हुई हैं। दो पीतल के फूलदान दूसरी वस्तुओं के अतिरिक्त अँगीठी के दोनों कोनों पर रखे हुए हैं। इसी अँगीठी के कपड़े की लम्बी झालर को छूता हुआ रेडियो सेट नीचे एक छोटी-सी मेज पर रखा है, जिसके मेज़-पोश का डिज़ाइन अँगीठी के कपड़े से मैच करता है और मधु की सुरुचि का पता देता है।

अँगीठी के ऊपर दीवार पर एक कैलेंडर ऐसे लटक रहा है कि मेज़ पर बैठे हुए व्यक्ति के ऐन सामने पड़े। कैलेंडर को एक नज़र देखने से मालूम होता है कि १६४३ के

नवम्बर का महीना है। अँगीठी के बराबर सामनी दीवार में एक दरवाज़ा है जो रसोई-घर को जाता है।

इस दरवाज़े से ज़रा हटकर सामने की दीवार के साथ एक बेत के कौच का सेट है। इसके आगे एक तिपाई पड़ी है। सेट की गद्दियाँ सुन्दर और सुरुचिपूर्ण हैं और तिपाई का कवर अँगीठी के कपड़े से मैच करता है।

सामने, दीवार की बायीं ओर, सोफ़ा सेट से ज़रा हटकर, एक दरवाज़ा है जो स्नानगृह को जाता है।

बायीं दीवार के साथ शृंगार की मेज़ लगी है जिससे वसन्त और मधु दोनों अपने टायलेट का काम ले लेते हैं। इसके ऊपर खूँटियों पर तौलिये टंगे हैं। मेज़ के दोनों ओर एक-दो कुर्सियां पड़ी हैं। बायीं दीवार में इधर को एक दरवाज़ा है जो बाहर को जाता है।

पर्दा उठते समय हम वसन्त को शृंगार की मेज़ पर बैठे हजामत बनाते देखते हैं। वास्तव में वह हजामत बना चुका है और तौलिये से मुँह पोंछ रहा है। तभी रसोई घर से स्वेटर बुनती हुई मधु प्रवेश करती है।]

मधु : यह फिर आपने मदन का तौलिया उठा लिया। मैं कहती हूँ आप...

वसन्त : (मुँह पोंछते-पोंछते रुककर) ओह ! ये कम्बख्त तौलिये ! मुझे ध्यान ही नहीं रहता। बात यह है (हँसता है।) कि मदन के तौलिये छोटे हैं और हजामत......।

मधु : (चिढ़कर) और हजामत के तौलियों जैसे हैं। जी ! ज़रा आँख खोलकर देखिए हजामत के तौलिये कितने रंगीन हैं, बीसियों तो धारियाँ पड़ी हुई हैं उनमें और मदन के कितने सादे और.........।

वसन्त : लेकिन रोएँदार तो...।

मधु : (व्यंग्य से) दोनों हैं। जी! आँखें बन्द करके आदमी दोनों का अन्तर बता सकता है मैं कहती हूँ...।

वसन्त : (निरुत्तर होकर) वास्तव में मेरा ध्यान दूसरी ओर था। लाओ, मुझे हजामत का तौलिया दे दो। कहाँ है ? मुझे दिखायी ही नहीं दिया।

मधु : (खूँटी पर टँगा हुआ तौलिया उठाकर) यह तो टँगा है सामने फिर भी......

वसन्त : मैंने ऐनक उतार रखी है और ऐनक के बिना तुम जानती हो हमारी दुनिया......।

(खिसियानी हँसी हँसता है।)

मधु : जी, आप की दुनिया! जाने आप किस दुनिया में रहते हैं। अब तो ऐनक नहीं। ऐनक हो तो कौन सा आपको कुछ दिखायी देता है।

[मुँह फुलाकर धम से कौच में धँस जाती है। और चुपचाप स्वेटर बुनने लगती है। वसन्त हजामत का सामान रखता है फिर अचानक उसकी ओर देखकर :]

वसन्त : यह तुमने फिर मुँह फुला लिया। नाराज़ हो गयी हो ?

मधु : (व्यंग्य से हँसकर) नहीं मैं नाराज़ नहीं।

वसन्त : तुम्हारा ख्याल है कि मैं इतना मूर्ख हूँ जो यह भी नहीं पहचान सकता ?

मधु : (उसी तरह हँसकर) मैं कब कहती हूँ ?

वसन्त : (सामान वैसे ही छोड़कर कुर्सी को उसकी ओर घुमाते हुए) मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि अपने भावों को छिपा लेना तुम्हारे बस की बात नहीं। तुम्हारी उपेक्षा

तुम्हारा क्रोध, तुम्हारी समस्त भावनाएँ तुम्हारी आकृति पर प्रतिबिम्बित हो जाती हैं। तुम्हें मेरी आदतें बुरी लगती हैं, पर मैंने तुम्हें अँधेरे में नहीं रखा। अपने सम्बन्ध में, अपने स्वभाव के सम्बन्ध में, सब कुछ बता दिया था। मैंने अपने सब पत्ते......।

मधु : मेज पर रख दिये थे। (उसी तरह व्यंग्य से हँसकर) मैं कब इनकार करती हूँ ?

वसन्त : तुम्हारी यह हँसी कितनी विषैली है। इसी तरह विष घोल-घोलकर तुमने अपने स्वास्थ्य का सत्यानाश कर लिया है।

मधु : (चुप रहती है।)

वसन्त : मैं तुम्हें किस प्रकार विश्वास दिलाऊँ कि मैं स्वयं सफ़ाई का बड़ा भारी समर्थक हूँ।

मधु : (हँसती है।) इसमें क्या सन्देह है !

वसन्त : और मुझे स्वयं गन्दगी पसन्द नहीं।

मधु : (सिर्फ़ हँसती है।)

वसन्त : पर मैं तुम्हारी तरह 'एरिस्टोक्रेटिक' (Aristooratio) वातावरण में नहीं पला और मुझे नज़ाकतें नहीं आतीं। हमारे घर में सिर्फ़ एक तौलिया होता था और हम छहों भाई उसे काम में लाते थे।

मधु : आप मुझे 'एरिस्टोक्रेट' कहकर मेरा उपहास करते हैं। मैं कब कहती हूँ, दस-दस तौलिये हों।

वसन्त : दस और किस तरह होते हैं ? नहाने का अलग, हजामत बनाने का अलग; हाथ-मुँह पोंछने का अलग और फिर तुम्हारे और मदन के.........।

मधु : (पहलू बदलकर) लेकिन मैं पूछती हूँ, इसमें दोष क्या है? जब हम खरीद सकते हैं तो क्यों न दस-दस तौलिये रखें। कल, परमात्मा न करे, हम इस योग्य न रहें तो मैं आपको दिखा दूँ कि किस तरह ग़रीबी में भी सफ़ाई रखी जा सकती है। तौलिये न सही, खादी के अँगोछे सही, कोई पुरानी-धुरानी पर उजली चादर या धोती के टुकड़े सही—कुछ भी रखा जा सकता है। लेकिन जिस तौलिये से किसी दूसरे ने बदन पोंछा हो, उस से किस प्रकार कोई अपना शरीर पोंछ सकता है?

वसन्त : मैं कहता हूँ, हम छः भाई एक ही तौलिये से बदन पोंछते रहे।

मधु : लेकिन बीमारी......।

वसन्त : हममें से किसी को कभी कोई बीमारी नहीं हुई।

मधु : लेकिन स्किन की बीमारी......।

वसन्त : तुम्हें और मदन को तो कोई बीमारी नहीं......और फिर रोग इस तरह नहीं बढ़ता। रोग बढ़ता है कमजोरी से! जब हमारे शरीर में रोग से लोहा लेनेवाले लाल कीटाणु कम हो जाते हैं, तब! 'चूहा सैदनशाह' की बात जानती हो?

मधु : चूहा सैदनशाह......?

वसन्त : शिकार करने के विचार से कुछ अफ़सर चूहा सैदनशाह गये। उनमें अमरीका के 'राक-फैलर-ट्रस्ट' के कुछ डाक्टर भी थे। लंच के समय उन्हें पानी की आवश्यकता पड़ी। बैरे ने आकर बताया कि गाँव में कोई कुआँ नहीं, लोग जौहड़ का पानी पीते हैं।

डाक्टरों को विश्वास न आया। क्योंकि जौहड़ का पानी मैला चीकट था। ऐसी कोई ही बीमारी होगी, जिसके कीड़े उस पानी में न हों और चूहा सैदनशाह के जाट हृष्ट-पुष्ट, लम्ब-तड़ंगे......?

मधु : तो क्या आप चाहते हैं, हम जौहड़ का पानी पीना शुरू कर दें?

(हँसती है।)

वसन्त : (उठकर कमरे में घूमता हुआ) तुम इस बात पर अपनी विषाक्त हँसी बिखेर सकती हो (उसके सामने रुककर) लेकिन तुम्हें मालूम हो कि अमरीका के डाक्टर वहीं रहे। एक जाट के रक्त का उन्होंने विश्लेषण किया। मालूम हुआ कि उस में रोग का मुकाबिला करने वाले लाल कीटाणु, रोग की मदद करने वाले श्वेत कीटाणुओं से, कहीं अधिक संख्या में हैं। तब उन्होंने वहाँ के लोगों की खुराक का निरीक्षण किया। पता चला कि वे अधिकतर दही और लस्सी का प्रयोग करते हैं और दही में बहुत-सी बीमारियों के कीड़ों को मारने की शक्ति है। बीमारी का मुकाबिला इन नज़ाकतों और नफ़ासतों से नहीं होता, बल्कि शरीर में ऐसी शक्ति पैदा करने से होता है, जो रोग के आक्रमण का प्रतिरोध कर सके।

(फिर घूमने लगता है।)

मधु : मैंने चूहा सैदनशाह की बात सुन ली। मैले तौलियों से शरीर में लाल कीड़े फैलें या सफेद, मुझेइससे मतलब नहीं। मैं तो इतना जानती हूँ कि बचपन ही से मुझे सफ़ाई पसन्द है। मामा जी......।

वसन्त : (मेज़ के कोने का सहारा लेकर) तुमने फिर अपने मामा

और मौसा की कथा छेड़ी। माना कि वे विलायत हो आये हैं, किन्तु इसका यह मतलब तो नहीं कि जो वे कहते हैं, वह वेदवाक्य है। उस दिन तुम्हारे मौसा आये थे। उन्होंने हाथ धोये तो मैंने कहीं भूल से तौलिया पेश कर दिया। (मधु के पास आकर) उन्होंने दाँत निपोर दिये (नकल उतारते हुए) 'मैं किसी दूसरे के तौलिये से हाथ नहीं पोंछता'—और वे अपने रूमाल से हाथ पोंछने लगे। मैं पूछता हूँ अगर वे उस तौलिये से हाथ पोंछ लेते तो उन्हें कौन-सी बीमारी चिमट जाती ?

मधु : अब यह तो......।

वसन्त : और तुम्हारे मामाजी......(वापस जाकर फिर मेज़ पर बैठ जाता है।) तुम्हारे जाने के बाद एक दिन मैं उनके यहाँ गया। रात वहीं रहा। दूसरे दिन मुझे सीधे दफ़्तर आना था। कहने लगे—'हजामत यहीं बना लो।' मैंने कहा—'मैं एक दिन छोड़कर हजामत बनाता हूँ, मुझे कोई ऐसी जरूरत नहीं'। जब उन्होंने अनुरोध किया तो मैंने कहा—'अच्छा, बनाये लेता हूँ!' तब वे एक निकृष्ट सा रेज़र ले आये और कहने लगे (नकल उतारते हुए)—'मैं अपने रेज़र से किसी दूसरे को हजामत नहीं बनाने देता, इसीलिए मैंने मेहमानों के लिए दूसरा रेज़र रख छोड़ा है'—क्रोध के मारे मेरा रक्त खौल उठा, लेकिन अपने आपको रोककर मैंने केवल इतना कहा—'रहने दीजिए मैं घर जाकर शेव कर लूँगा।'

मधु : मामा जी......।

वसन्त : (अपनी बात जारी रखते हुए) इस बात पर शायद उन्हें महसूस हुआ कि मुझे उनकी बात बुरी लगी और उन्होंने मुझे अपने ही रेज़र से हजामत बनाने पर विवश कर दिया। किन्तु मेरे हजामत बनाने के बाद मेरे ही सामने ब्लेड उन्होंने लॉन में फेंक दिया और नौकर से कहा कि रेज़र को Sterilise *कर लाये (नकल उतारते हुए) मामा जी...।

मधु : मैं कहती हूँ, आप उनके स्वभाव से परिचित नहीं, आप को बुरा लगा। स्वच्छता और सुरुचि की भावना भी काव्य और कला ही की भाँति...।

वसन्त : (आवेग में उस के पास आकर) क्यों काव्य और कला को अपनी इस घृणा में घसीटती हो। तुम्हारे ऐसे वातावरण में पले हुए सब लोगों की सुरुचि में घृणा की भावना काम करती है—शरीर से ,गन्दगी से, जीवन से घृणा की!

मधु : (चुप रहती है।)

वसन्त : और मुझे जीवन से घृणा नहीं। मुझे शरीर से भी घृणा नहीं और मैं सच कह दूँ, मुझे गन्दगी से भी घृणा नहीं।

मधु : (हँसती है।)तो फिर कूड़े के ढेरों पर बैठिये!

[वसन्त फिर कुर्सी पर जा बैठता है, और कुर्सी को और समीप ले आता है।]

वसन्त : मुझे गंदगी से घृणा नहीं, किन्तु मैं गंदगी पसन्द नहीं करता=बड़ा सूक्ष्म-सा अन्तर है। यदि हमें जीवन का

---

*Sterilise उबलते पानी में डाल कर किसी चीज़ का बीमारी के कीटाणुओं से पाक करना।

सामना करना है तो रोज़ गंदगी से दो-चार होना पड़ेगा। फिर इससे घृणा कैसी? जिन ग़रीबों को तुम अपने बरामदे के फ़र्श पर भी पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटों बैठ सकता हूँ।

मधु : (हँसती है।)

वसन्त : और मैंने ऐसे गंदे इलाकों में जीवन के निरन्तर कई वर्ष बिताये हैं, जहाँ तुम्हारी सुरुचि की सनक तुम्हें गुज़रने तक न दे। समझीं!

मधु : (वहीं बैठे और वैसे ही स्वेटर बुनते हुए) पर अब तो आप ग़रीब नहीं। अब तो आप गन्दे इलाक़ों में नहीं रहते। ग़रीबी की विवशता को मैं समझ सकती हूँ, किन्तु गन्देपन का स्वभाव मेरी समझ से दूर की चीज़ है।

वसन्त : तो तुम्हारे विचार में मैं स्वभाव से गन्दा हूँ।

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ) मैं कब कहती हूँ।

वसन्त : (खड़ा हो जाता है।) ऐसे दिन मुझ पर आये हैं, जब एक बनियाइन पहने मुझे कई कई दिन गुज़र जाते थे। उसे धोने तक का अवकाश न मिलता था और अब मैं दिन में दो-दो बार बनियाइन बदल लेता हूँ। यदि यह गन्देपन की आदत है तो...।

मधु : (उसी हँसी के साथ) मैं कब कहती हूँ?

वसन्त : स्वच्छता बुरी नहीं, न सुरुचि बुरी है, पर तुम तो हर चीज़ को सनक की हद तक पहुँचा देती हो, और सनक से मुझे चिढ़ है। (फिर कमरे में घूमने लगता है।) बनियाइनों और तौलियों की क़ैद मैंने मान ली, किन्तु

यदि मैं ग़लती से बनियाइन न बदल पाऊँ, या ग़लत तौलिया ले लूँ तो इसका यह मतलब तो नहीं कि मैं स्वभाव से गन्दा हूँ और मेरे इस स्वभाव पर तुम्हें मुँह फुलाकर बैठ जाना या अपनी विषैली हँसी बिखेरना चाहिए !

मधु : (चुप रहती है।)

वसन्त : (रेडियो के पास से) तुमने अपने आपको इन भूठे बन्धनों में इतना जकड़ लिया है कि मेरा ज़रा सा खुलापन भी तुम्हें अखरता है। अपने सिद्धान्तों को तुमने सनक की हद तक पहुँचा दिया है। ऊषी और निम्मो......।

मधु : (बुनना छोड़ देती है।) आपने फिर ऊषी और निम्मो की बात चलायी। ऊषी और निम्मो......।

वसन्त : (हँसते हुए) कल मिल गयीं बाज़ार में। मैंने पूछा—निम्मो आयी नहीं तुम इतने दिनों से। कहने लगी—हमको चची से डर लगता है।

(हँसता है।)

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ।) मैं उन्हें खा जो जाती हूँ।

वसन्त : (तिपाई के पास से) खाओगी तो तुम क्या, पर वे बच्चियाँ हैं...

मधु : बच्चियाँ !

(व्यंग्य से मुंह बिचकाती हुई हँसती है।)

वसन्त : (उसके व्यंग्य को सुना-अनसुना करके तिपाई पर बैठते हुए) हँसना उनका स्वभाव है। वे हँसेंगी तो बेबात की बात पर हँसेंगीऔर तुम्हारी 'सुरुचि' और 'संस्कृति'—बस दबेदबे घुटे-घुटे फिरो—ऊँह ! (बेज़ारी से सिर हिलाकर

उठता है।) जो आदमी जी भर खा-पी नहीं सकता; हँस-हँसा नहीं सकता, वह जीवन में कर ही क्या सकता है। दुख और मुसीबतों के बंधन ही क्या कम हैं जो ज़िन्दगी को शिष्टाचार की बेड़ियों से जकड़ दिया जाये— यह न करो, वह न करो; ऐसे न बोलो, वैसे न बोलो; यों न बैठो वों न बैठो—इन वर्जनाओं का कहीं अन्त भी है।

मधु : (चुप रहती है।)

वसन्त : और फिर तुम्हारे इस शिष्टाचार में वह स्निग्धता कहाँ है? तुम्हारे आने से पहले मैं, देव और नारायण एक ही लिहाफ़ में बैठ जाते थे। ज़रा कल्पना तो करो— सर्दियों की सुबह या शाम, एक ही चारपाई पर, एक ही रज़ाई घुटनों पर ओढ़े, चार-पाँच मित्र बैठे हैं। गप्पें चल रही हैं। सुख-दुःख की बातें हो रही हैं। वहीं चाय आ जाती है। साथ-साथ बातें होती हैं, साथ-साथ चुस्कियाँ लगती हैं—इस कल्पना में कितना आनन्द है, कितनी स्निग्धता है। अब मित्र आते हैं। अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। एक दूसरे पर बोझ मालूम होता है। (जोश से) चिड़िया तक तो फटकने नहीं देतीं तुम बिस्तर के पास। मैं तो इस तकल्लुफ़ में घुटा जाता हूँ।

[जाकर कुर्सी पर बैठ जाता है और हजामत का सामान ठीक से रखने लगता है।]

मधु : मैं तकल्लुफ़ स्वयं पसंद नहीं करती। पर जब दूसरों को सफ़ाई का कुछ भी ख्याल न हो तो विवश हो इससे काम लेना पड़ता है। आप ही बताइए—कितने लोग हैं, जिन्हें सफ़ाई की आदत है? कितने हैं जो हमारी तरह पाँव धोकर रजाई में बैठते हैं?

वसन्त : (वहीं से) पाँव धोने की मुसीबत रजाई में बैठने का लुत्फ़ ही किरकिरा कर देती है।

मधु : कुत्ता भी बैठता है तो दुम हिलाकर बैठता है। आदमी स्वभाव ही से सफ़ाई-पसन्द है। मुझे गन्दे लोगों से सख्त घृणा है।

(फ़िर स्वेटर बुनने लगती है।)

वसन्त : (मुड़ कर) घृणा-घृणा-घृणा—यही तो मैं कहता हूँ। तुम्हें मुझसे घृणा है, मेरे स्वभाव से घृणा है, मेरे मित्रों से घृणा है। तुम्हारा वातावरण मेरे वातावरण से घृणा करता है।

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ) यह आप कह सकते हैं।

वसन्त : तुम्हें मेरी हर एक बात से घृणा है—मेरे खाने-पीने से, उठने-बैठने से, हँसने-बोलने से—मैं जब हँसता हूँ, जी खोलकर हँसता हूँ और इसीलिए ऊषी और निम्मो...

मधु : (स्वेटर को फेंककर) आपने फिर ऊषी और निम्मो की कथा छेड़ी। मुझे हँसना बुरा नहीं लगता। पर समय-कुसमय का भी ध्यान होना चाहिए। उस दिन पार्टी में आते ही ऊषी ने मेरे कान पर चुटकी ले ली और निम्मो ने मेरी आँखें बन्द कर लीं। कोई समय था उस तरह हँसी-मज़ाक का। मुझे हँसी मजाक से घृणा नहीं, बदतमीज़ी से घृणा है।

वसन्त : ऊषी......

मधु : परले सिरे की बदतमीज है। मदन की वर्ष-गाँठ के दिन वे सब आये थे। निम्मो इतनी चंचल है; पर वह तो बैठ गयी एक ओर, यह नवाबजादी सैंडल समेत आ

बैठी मेरे सामने टाँगें पसारे और वे उसके गंदे सैंडल—मेरी साड़ी के बिलकुल समीप आ गये। आप इस बदतमीजी को शौक से पसन्द करें, मैं तो इसे हरगिज़ पसन्द नहीं कर सकती। जिसे बैठने, उठने, बोलने का सलीका नहीं; वह मनुष्य क्या पशु है।

वसन्त : (गरजकर) पशु ! तो तुम मुझे पशु समझती हो ? तुम मनुष्य की सहज भावनाओं को निर्मम वर्जनाओं की बेड़ियों में बाँधकर रखना चाहती हो कि उसकी रूह ही मर जाये। मुझे यह सब पसन्द नहीं और इसलिए तुम मुझसे घृणा करती हो। तुम्हारी इस विषाक्त हँसी में, मैं जानता हूँ, कितनी घृणा छिपी है और मुझे डर है कि किसी दिन मैं सचमुच पशु न बन जाऊँ। अभी मेरा जी चाहा था कि इस ज़लील से तौलिये को उठाकर बाहर फेंक दूँ और......और...मेरा जी चाहा करता है कि मैं तुम्हारी इस हँसी का गला घोंट दूँ। घृणा—तुम मेरी हर बात से घृणा करती हो—मुझे पशु समझती हो !

मधु : (स्वेटर उठाते हुए भरे हुए गले से) आप नाहक हर बात को अपनी ओर ले जाते हैं। अपनी कल्पना से मेरे मन में वे बातें देखते हैं, जो मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती। मुझे आपसे घृणा है या नहीं, इसे मैं ही जानती हूँ, पर आपको मुझसे ज़रूर घृणा है। आपने मुझसे शादी कर ली, मैं जानती हूँ। क्यों कर ली, यह भी जानती हूँ। लेकिन विवाह के लिए आपका तैयार हो जाना, यह नहीं बताता कि आपको मुझसे घृणा नहीं। इसका गुस्सा चाहे अब आप मेरी सुरुचि पर निकालें, या संस्कृति पर पहनावे अथवा स्वभाव पर !

वसन्त : तुम तो...

मधु : मेरा ख्याल था, मैं आपको सुख पहुँचा सकूँगी। आपके अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्था सिखा दूँगी, किन्तु मैं देखती हूँ कि मेरे सारे प्रयास विफल हैं......आपको इस गन्दगी, इस अव्यवस्था में सुख मिलता है। आपको मेरी व्यवस्था, मेरी सफ़ाई बुरी लगती है। मैं आपकी दुनिया में न रहूँगी। मैं आज ही चली जाऊँगी।

उठ खड़ी होती है—तभी टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। वसन्त जल्दी से जाकर चोंगा उठाता है।]

वसन्त : हैलो, हैलो, जी, जी, !

मधु : (नौकरानी को आवाज देते हुए) मंगला !

मंगला : (स्नानगृह की ओर के दरवाज़े से आती है।) जी बीबी जी !

मधु : मेरा बिस्तर तैयार कर और मेरा ट्रंक इस कमरे में ले आ।

मंगला : बीबी जी आप......

मधु : मैं जो कहती हूँ, उठा ला।

[मंगला चली जाती है। वसन्त "जी, जी बहुत अच्छा !" कहते हुए चोंगा रख देता है और हँसता हुआ आता है।]

वसन्त : मैं कहता हूँ तुम अपना सामान बाँधने की सोच रही हो, पहले मेरा सामान तो ठीक कर दो। मुझे पहली गाड़ी से बनारस जाना है। अभी साहब ने आदेश दिया है। अपना सामान बाद में बाँधना।

(हँसता है—पर्दा तत्काल गिरता है।)

[कुछ क्षण बाद पर्दा फिर उठता है। कमरा वही है। सामान भी वही है, सिर्फ इतना अन्तर है कि जहाँ मेज थी; वहाँ एक पलँग बिछा है। और टेलीफोन उसके सिरहाने एक तिपाई पर रखा है। मेज, ड्रेसिंग टेबल की जगह चला गया है। और शृंगार की मेज, अपनी कुर्सी के साथ दायें कोने को सरक गयी है।

पलँग पर मधु लिहाफ घुटनों पर लिये दीवार के सहारे अन्यमनस्क सी आधी लेटी है।

कुछ क्षण बाद वह कैलेंडर की ओर देखती है। उसकी दृष्टि का अनुसरण करते ही मालूम होता है कि जनवरी का महीना है और नया साल चढ़ गया है। जिसका मतलब यह है कि मधु को हम दो महीने बाद देख रहे हैं।

बाहर का दरवाजा खुला है और तीखी हवा अन्दर आ रही है। लिहाफ़ को कंधों तक खींचते हुए मधु नौकरानी को आवाज देती है।—"मंगला, मंगला!" लेकिन आवाज इतनी हलकी है कि शायद मंगला तक नहीं जाती। मधु रज़ाई लेकर लेट-सी जाती है। कुछ क्षण बाद मंगला स्वयं ही आती है।]

मंगला : बीबी जी, यह आप उदास-उदास क्यों हैं?

मधु : (लेटे-लेटे ज़रा सिर उठा कर) मंगला यह किवाड़ बन्द कर दे, बर्फ़ सी हवा अन्दर आ रही है।

मंगला : (किवाड़ बन्द करते हुए) मेरी बात का उत्तर नहीं दिया आपने बीबी जी?

मधु : योंही कुछ तबीयत उदास है मंगला!

मंगला : कोई पत्र आया बाबू जी का?

मधु : आया था। शायद आज-कल में आ जायें !

मंगला : तो फिर......

मधु : (विषाद से हँसकर) तबीयत कुछ भारी-भारी-सी है। शायद सर्दी के कारण......

(दरवाजे पर दस्तक होती है।)

— : (जरा उठकर) कौन ?

सुरो : (बाहर से) दरवाजा तो खोलो।

मधु : (बैठकर) मंगला, जरा किवाड़ खोलना।

(मंगला दरवाज़ा खोलती है सुरो और चिन्ती आती हैं।)

मधु : (रज़ाई परे करके) अरे सुरो, चिन्ती, तुम यहाँ कैसे ?

सुरो : आज ही सवेरे यहाँ उतरी हैं।

चिन्ती : माता जी प्रयाग जा रही थीं। सरिता बहिन का ख्याल था कि दिल्ली भी देखते चलें।

मधु : ठहरी कहाँ हो ?

चिन्ती : कनाट प्लेस में मलिक चाचा जी के यहाँ। देर से उनका अनुरोध था कि दिल्ली आयें तो......

मधु : और मुझे पत्र तक नहीं लिखा। इतने दिनों से मैं कह रही थी कि दिल्ली आओ तो......

सुरो : सबसे पहले तुम्हीं से मिलने आयी हैं। माता जी कहती थीं कुतुबमीनार...।

चिन्ती : मैंने कहा कुतुबमीनार एक तरफ़ और मधु बहन एक तरफ़......

(मधु ठहाका लगाती है।)

सुरो : और फिर दो घंटे से मारे-मारे फिर रहे हैं तुम्हारी तलाश में।

मधु : लेकिन पता तो मेरा...

चिन्ती : सुरो बहिन भूल गयीं। इन्हों ने ताँगेवाले को भैरो के मन्दिर चलने के लिए कह दिया।

मधु : (आश्चर्य से) भैरो के मन्दिर......

चिन्ती : और ताँगेवाला ले गया सब्जी मण्डी, कहीं तीस हज़ारी के गिर्जे के पास।

मधु : गिर्जे के पास......

(ज़ोर से ठहाका लगाती है।)

चिन्ती : (अपनी बात जारी रखते हुए) तब इन्हें ख्याल आया कि मन्दिर तो हनुमान का है। फिर नयी दिल्ली वापस आयीं।

(मधु फिर ज़ोर से हँसती है।)

सुरो : और तब पता चला कि हम लोग तो योंही परेशान होते रहे। घर तो तुम्हारा पास ही था।

मधु : तुम लोग भी, मैं कहती हूँ......

(ज़ोर से हँस पड़ती है।)

सुरो : यह इतना हँसना तुम कहाँ से सीख गयीं। तुम तो थीं जन्म की सिड़ी...

चिन्ती : भाई साहब ने सिखा दिया इतने ज़ोर के ठहाके लगाना ! कहाँ हैं वे ?

मधु : बनारस गये हुए हैं, दो महीने से। वहाँ के फ़र्म का

मैनेजर बीमार पड़ गया था। शायद आज-कल में आ जायँ।

चिन्ती : अच्छे तो हैं ?

मधु : अच्छे हैं। मौज में हैं। लेकिन तुम खड़ी क्यों हो। इधर आ जाओ बिस्तर पर (नौकरानी को आवाज़ देती है) मंगला, मंगला ?

(सुरो और चिन्ती कुर्सियों पर बैठने लगती हैं।)

मधु : अरे कुर्सियाँ छोड़ो। बस चली आओ इधर। पलँग पर बैठते हैं लिहाफ़ लेकर।

सुरो : लेकिन मेरे पाँव (हँसकर) और मैं धो नहीं सकती इन्हें।

मधु : अरे क्या हुआ है तुम्हारे पाँवों को। जुराबें तो पहन रखी हैं तुमने ?

चिन्ती : पर तुम्हारा बिस्तर ?

मधु : कुछ नहीं होता बिस्तर को। मेरे बिस्तर का ध्यान छोड़ो। बस चली आओ इधर। यह किवाड़ बन्द कर दो, बर्फ़ सी हवा अन्दर आ रही है।

(मंगला आती है।)

मंगला : आपने आवाज दी थी बीबी जी ?

मधु : मंगला चाय बनाकर लाओ !

[चिन्ती किवाड़ बन्द कर देती है। तीनों घुटनों पर लिहाफ़ लेकर आराम से बिस्तर पर बैठ जाती हैं।]

सुरो : पुष्पा की शादी हो रही है, अगले महीने।

मधु : (चौंक कर खुशी से) लेफ्टिनेंट वीरेंद्र के साथ ?

चिन्ती : (हँसकर) सब तुम्हारे जैसी नहीं। वह प्रेम करती रहेगी वीरेन्द्र से जीवन भर, पर शादी तो उसकी प्रोफ़ेसर मुन्शीराम ही के साथ होगी।

मधु : पर मुन्शी राम......

सुरो : खड़े का खालसा* है भई। लेफ्टिनेंट साहब तो आते हैं कभी-कभी-वर्ष भर में एक-दो बार और प्रोफ़ेसर साहब सिर पर सवार रहते हैं, आठों पहर बुरे साये की तरह।

चिन्ती : वह लम्म-सलम्मा लमढीक सा आदमी। ज़ोर की हवा चले तो उड़ता चला जाये। मैं तो सोचती हूँ कि उसे पुष्पा जैसी मोटी मुटल्ली से प्रेम भी हुआ तो कैसे?

मधु : और मैं इस बात पर हैरान हूँ कि पुष्पा उसे पसन्द ही कैसे करती है। मैं तो उसे पाँच मिनट के लिए भी सहन न कर सकूँ। चेहरे पर तो उसके नहूसत बरसती है और मालूम होता है जैसे......

चिन्ती : वर्षों स्नान-गृह का मुँह न देखा हो।

सुरो : सहन तो उसे करना ही पड़ता है। उसके पिता प्रोफ़ेसर मुन्शीराम पर बड़े प्रसन्न हैं। उन्होंने प्रोफ़ेसर साहब को पढ़ाया-लिखाया और अपने कालेज में लगाया। वीरेंद्र तो चार वर्ष बी० ए० में रहे और प्रोफ़ेसर मुन्शीराम ने रिकार्ड तोड़ा था।

चिन्ती : अब दोनों मिलकर बच्चे पैदा करने का रिकार्ड तोड़ेंगे।

(सब हँसती हैं—मंगला चाय की ट्रे लाती है।)

---

*पंजाबी का मुहाविरा—जो आदमी सिर पर खड़ा रहता है वह काम निकाल लेता है।

मंगला : कहाँ लगाऊँ चाय बीबी जी ?

मधु : वहाँ मेज़ पर रख दो और एक-एक प्याला बनाकर हमें दो। यह तिपाइ सरकाकर इस पर बिस्कुट रख दो।

सुरो : (आश्चर्य्य से) मधु !

मधु : अरे उठकर कहाँ आओगी ! यहीं बैठी रहो। इस गर्म बिस्तर से उठकर डाइनिंग टेबल पर जाने में आ चुका चाय का मज़ा।

चिन्ती : (उठने का प्रयास करते हुए हलके से क्रोध से) मधु !

मधु : हटाओ भी। अब बैठी रहो यहीं।

चिन्ती : (व्यंग्य से) तो ब्याह के बाद रानी मधुमालती ने अपने सब सिद्धान्त बदल डाले हैं। अब डाइनिंग टेबल के बदले बिस्तर पर ही चाय पीती हैं और बिस्तर पर ही खाना भी नोश फ़रमाती हैं।

सुरो : कहाँ तो यह कि पानी का गिलास भी पीना हो तो डाइनिंग रूम की ओर भागतीं और कहाँ यह कि...

मधु : अरे क्या रक्खा है इस तकल्लुफ़ में। सच कहो, इस समय किसका जी चाहता है कि इस नर्म-गर्म बिस्तर से उठकर डाइनिंग टेबल पर जाये। लो बिस्कुट लो और चाय का प्याला उठाओ! ठंडी हो रही है।

[सब चाय के प्याले उठा लेती हैं और चाय पीते-पीते बातें करती हैं।]

सुरो : मैं पूछती हूँ—यदि चाय बिस्तर पर गिर जाय ?

मधु : तो क्या हुआ। चादर धुलवाई जा सकती है। और फिर किसी दिन सहसा हो आने वाली दुर्घटना के भय से कोइ अपने रोज़ के सुख-आराम को तो नहीं छोड़ देता।

सुरो : सुख आराम (व्यंग्य से हँसती है) तुम बिस्तर पर चाय पीने को बहुत बड़ा सुख समझती हो......

(फिर हँसती है ।)

चिन्ती : और फिर संस्कृति, सुरुचि......

मधु : आदमी की आधारभूत भावनाओं पर नित्य नये दिन चढ़ते चले जाने वाले पर्दों का नाम ही तो संस्कृति है। सोसाइटी के एक वर्ग के लिए दूसरा वर्ग सदैव असभ्य और असंस्कृत रहेगा। फिर कहाँ तक आदमी सभ्यता और संस्कृति के पीछे भागे। और रही सुरुचि, तो यह भी अभिजात वर्ग का स्नाब्री*का दूसरा नाम है।

सुरो : यह तुम क्या कह रही हो ? क्या तुम चाहती हो कि इतना कुछ सीख-समझकर आदमी फिर पहले की भाँति बर्बर बन जाये ?

मधु : नहीं, बर्बर बनने की क्या ज़रूरत है ? आदमी सीमाओं को छूता हुआ क्यों चले। मध्य का मार्ग क्यों न अपनाये। न इतना खुले कि बर्बर दिखायी दे, न इतना बँधे कि सनकी—महात्मा बुद्ध ने कहा था......

सुरो : (हँसकर) महात्मा बुद्ध ! तुम्हें हो क्या गया है, सदियों पुराने गले-सड़े विचारों को तुम आज की सभ्यता पर लादना चाहती हो !

चिन्ती : मनुष्य हर घड़ी, हर पल प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज के सिद्धान्त कल काम न देंगे और कल के परसों। बर्नार्ड शा......

मधु : (व्यंग्य से हँसकर) बर्नार्ड शा—हटाओ क्या बेमज़ा

---

*Snobbery = अपने से छोटों को हेय समझने का स्वभाव।

बहस ले बैठी हो। मंगला चाय का एक-एक कप और बनाओ।

चिन्ती : बस भाई अब तो हम चलेंगे। इतनी देर हो गयी हमें यहाँ आये। मंगला हाथ धुला दो हमारे।

मधु : अरे भाई एक-एक प्याला तो और लो।

सुरो : नहीं मधु, अब चलेंगे। वहाँ सब लोग परेशान हो रहे होंगे। हमने कहा था, हम केवल मधु का घर देखने जा रहे हैं। एक-आध घंटे में लौट आयेंगे और यहाँ आने ही में दो घंटे लग गये।

चिन्ती : बाथ-रूम किधर है। हम वहीं हाथ धो आते हैं।

मधु : अरे क्या धोओगी इस सर्दी में हाथ ?

सुरो : नहीं भई, हाथ तो हम ज़रूर धोयेंगे। चिप-चिप कर रहे हैं।

मधु : तो मरो (मंगला से) मंगला इनके हाथ धुलवा दो।

सुरो : बाथ-रूम......

मधु : अरे बाथ-रूम में जाकर क्या करोगी ? इधर बरामदे ही में धो लो।

[किवाड़ खोलकर सुरो और चिन्ती हाथ धोती हैं। मधु चुपचाप अपने प्याले की शेष चाय पीती है।]

सुरो : (गीले हाथ लिये वापस आकर) तौलिया कहाँ है ?

मधु : तौलिया नहीं दे गयी मंगला ? अच्छा वह ले लो जो खूँटी पर टँगा है।

सुरो : (क्रोध से) मधु तुम अच्छी तरह जानती हो......

मधु : मंगला, इन्हें अन्दर से एक धुला हुआ तौलिया ला दो।

[चिन्ती भी गीले हाथ लिये आ जाती है। मंगला तौलिया ले आती है और दोनों हाथ पोंछती हैं।]

— : मैं कहती थी, अभी कुछ देर बैठतीं !

चिन्ती : नहीं भई अब कल आने का प्रयास करेंगे।

(हाथ पोंछकर तौलिया कुर्सी की पीठ पर रख देती है।)

मधु : प्रयास नहीं, ज़रूर आना। भूलना नहीं। और खाना भी यहीं खाना।

सुरो : हाँ, हाँ, अवश्य आयेंगे।

(मधु उठने का प्रयत्न करती है।)

— : अब उठने का तकल्लुफ़ न करो। बैठी रहो अपने गर्म लिहाफ़ में। दरवाज़ा हम बन्द किये जाते हैं। बर्फ-सी हवा अन्दर आ रही है।

(हँसती हुई चली जाती हैं दरवाजा बन्द किये जाती हैं।)

मधु : मुझे एक प्याला और बना दो मंगला।

मंगला : (प्याला बनाकर देते हुए) ये कौन थीं बीबी जी ?

मधु : मेरी सहेलियाँ थीं। कालेज में हम साथ-साथ पढ़ते थे और होस्टल में भी साथ-साथ ही रहते थे।

(कुछ क्षण मधु चुपचाप चाय पीती है, फिर :)

— : मंगला !

मंगला : जी, बीबी जी।

मधु : मंगला, ज़रा मेरी ओर देखकर बता तो क्या मैं सचमुच बदल गयी हूँ ?

मंगला : (चुप रहती है।)

मधु : (जैसे अपने आप से) मेरी सहेलियाँ कहती हैं, मैं बदल गयी हूँ। पड़ोसिनें भी यही कहती हैं! मेरी ओर ज़रा देखकर बता तो मंगला, क्या मैं वास्तव में बदल सकी हूँ?

मंगला : मैं तो आठों पहर आपके पास रहती हूँ बीबी जी, मैं क्या जानूँ।

मधु : (अपनी बात जारी रखते हुए) मेरी आँखों में देखकर बता मंगला, क्या ये बदल सकी हैं। इनमें घृणा की झलक तो नहीं?

मंगला : (आश्चर्य से) घृणा—

मधु : मेरे व्यवहार में तक़ल्लुफ़ और बनावट तो नहीं?

मंगला : (उसी आश्चर्य से) बनावट, तकल्लुफ़—

मधु : तक़ल्लुफ़, बनावट, नफ़रत—तीनों को अब मैं अपने मन से निकाल देना चाहती हूँ (जैसे अपने आप से) दो महीने पहले, वे इसी बात पर मुझसे लड़कर चले गये थे।

मंगला : क्या कह रही हैं बीबी जी आप। बाबू जी तो......

मधु : (शून्य में देखते हुए) उनका गुस्सा अभी तक नहीं उतरा। इन दो महीनों में उन्होंने मुझे एक पत्र भी नहीं लिखा

मंगला : एक पत्र भी नहीं लिखा, लेकिन......

मधु : (व्यंग्य से) "मैं कुशल से हूँ, अपनी कुशल का पता देना!" या "मैनेजर बीमार है ज्यों ही स्वस्थ हुआ चला आऊँगा" इन्हें तुम पत्र लिखना कहती हो। वे मुझसे नाराज़ हैं। उनका ख्याल है कि मैं उनसे घृणा करती हूँ।

मंगला : (कुछ भी समझने में असफल होते हुए)—घृणा, घृणा?

मधु : यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफ़ाई और सलीके का बेहद ख्याल रखा जाता है तो

इसमें मेरा क्या दोष है ? (लगभग भरे हुए गले से) वे सफ़ाई और सुरुचि को मेरी घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफ़ाई-उफ़ाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफ़ात को तिलांजली दे दूँ, पर अपने इन प्रयास में कभी कभी मुझे अपने आप से घृणा होने लगती है। (लम्बी साँस भर कर) बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं, उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं। (अचानक दृढ़ता से) पर नहीं। मैं अपनी इस सारी सनक को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफ़रत करती हूँ।

मंगला : आप क्या कह रही हैं बीबी जी ?

मधु : वे समझते हैं—मैं उनसे, उनके स्वभाव से, उनके वातावरण से, उनकी हर एक बात से घृणा करती हूँ। (सिसकने लगती है।) मैंने इन दो महीनों में अपने आपको बिलकुल बदल डाला है।

(दरवाज़ा अचानक खुलता है और वसन्त प्रवेश करता है।)

वसन्त : हेल–लो मधु ! क्या हाल–चाल है जनाब के ? (मंगला से) मंगला ताँगे से समान उतरवाओ। और (जेब से पैसे निकालते हुए) और यह लो डेढ़ रुपया ! ताँगेवाले को दे दो।

(मंगला पैसे लेकर चली जती है।)

वसन्त : (फिर मधु के पास आते हुए) कहो भाई, क्या हाल-चाल है, यह सूरत कैसी रोनी बना रखी है ! जी कुछ खराब है क्या ?

मधु : (जो इस बीच में पलंग से उतर आयी है—हँसने का प्रयास

करते हुए) सूखा जाड़ा पड़ रहा है। जुखाम है मुझे तीन चार दिन से।

वसन्त : मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखा करो। सेहत—सेहत—सेहत दुनिया में जो कुछ है सेहत है। जीवन में तुम्हारी यह सफाई और सुघड़ता, यह सुरुचि-संस्कृति, ये नज़ाकतें, नफ़ासतें इतना काम न देंगी, जितना सेहत। यदि यही ठीक नहीं रहती तो ये सब किस काम की और जब यह ठीक है तो फिर इनकी कोई ज़रूरत नहीं। (अपने कथन की बारीकी का स्वयं ही आनन्द लेता है और फिर जैसे उसने पहली बार कमरे को अच्छी तरह देखा हो) अरे यह कायापलट कैसी? यह पलंग ड्राइंगरूम में कैसे आ गया। और ट्रे और प्याले......।

मधु : मैंने पलंग इधर ही बिछा दिया है कि आप और आप के मित्रों को ज़रा भी कष्ट न हो। मज़े से लिहाफ़ लेकर बैठिए। टेलीफोन आपके सिरहाने रहेगा।

वसन्त : (उल्लास से) वाह ! मैं कहता हूँ। तुम...तो, तुम...तो ......बेहद अच्छी हो !

(उसे आलिंगन मे भर लेता है।)

मधु : मैं स्वयं अपनी सहेलियों के साथ इसी लिहाफ़ में बैठी रही हूँ।

वसन्त : (आश्चर्य-मिश्रित उल्लास से उसकी दोनों बाहों को थामे, उसकी आँखों में देखते हुए) सच !

मधु : (उसकी ओर प्रशंसाकी इच्छुक प्यारभरी दृष्टि से देखते हुए) और चाय भी हमने यहीं पी है।

वसन्त : (प्रसन्नता से) व...।...ह! (उसे छोड़ कमरे में एक चक्कर लगाकर) मैं कहता हूँ—अब तुम जिन्दगी का रहस्य समझ पायी हो। सफल जीवन का भेद बाह्य तड़क-भड़क में नहीं, अन्तर की दृढ़ता में है। यदि हमारी प्रतिरोध-शक्ति, हमारी Power of Resistence क़ायम है......।

मधु : चाय भी अब आप यहीं पिया कीजिएगा, अपने नर्म-गर्म बिस्तार पर!

वसन्त : (अत्यधिक उल्लास से) वाह वा वाह! अब इसी बात पर तुम मंगला से कहो। मेरे लिए चाय का पानी रखे।

मधु : अब तो आप नाराज़ नहीं हैं?

वसन्त : (आश्चर्य से) नाराज़!

मधु : आप इतने दिनों तक मन में गुस्सा रख सकते हैं, यह मैंने स्वप्न में भी न सोचा था।

वसन्त : (और भी आश्चर्य से) गुस्सा!

मधु : दो महीने से आपने ढंग से पत्र तक नहीं लिखा।

वसन्त : पर मैंने.........

मधु : पत्र लिखे थे...जी! "मैं कुशल से हूँ। अपनी कुशल का पता देना"—इसे पत्र लिखना कहते होंगे।

वसन्त : (जोर से ठहाका मारता है) तो तुम इसका कारण यह समझती हो कि मैं तुमसे नाराज़ हूं? पगली! तुमसे भी कभी कोई नाराज हो सकता है।

मधु : पर दो पंक्तियाँ.........।

वसन्त : दो पंक्तियाँ लिखने का भी अवकाश मिल गया, तुम इसी को बहुत समझो।

मधु : अच्छा आप जाकर हाथ-मुँह धो लीजिए। मैं चाय तैयार करती हूँ।

वसन्त : म कहता हूँ तुम कितनी...तुम कितनी......तुम कितनी अच्छी हो।

(उसे बाहों में भरकर कमरे में एक चक्कर दे देता है।)

मधु : (हँसकर अपने आपको उसके आलिंगन से मुक्त करते हुए) अच्छा अच्छा चलिए, पहले हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदलिए।

वसन्त : यह फिर तुमने कपड़े बदलने की पख लगायी ?

मधु : क्यों कपड़े न बदलिएगा ? एक रात और एक दिन गाड़ी में सफ़र करके आये हैं। मार्ग की धूल सारे शरीर पर पड़ी हुई है। चलिए, चलिए, जल्दी हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदलिए ! मैं इतने में चाय तैयार करती हूँ (वसन्त को स्नानगृह के दरवाज़े की ओर धकेल देती है, और नौकरानी को आवाज़ देती है) मंगला, मंगला।

मंगला : (दूसरे दरवाज़े से झांकती है) जी, बीबी जी !

मधु : सामान रखवा लिया या नहीं !

मंगला : जी, बीबी जी !

मधु : यह ट्रे और प्यालियाँ उठा। पानी तो चाय का ठंडा हो गया होगा। बाबू जी उधर हाथ मुंह धोने गये हैं। मैं और पानी रखती हूं। इतने में यह पानी फेंक कर चाय-दानी और प्यालियाँ अच्छी तरह धो डाल।

[मंगला ट्रे आदि उठाकर जाती है। एक चम्मच गिर जाता है।]

— : (कुछ तीखे स्वर में) यह चम्मच फिर फ़र्श पर गिरा दिया तूने। बीस बार कहा है कि चम्मच न गिराया कर फ़र्श

पर, चिप-चिप होने लगती है। अब ट्रे बाहर रखकर इस जगह को गीले कपड़े से पोंछ डाल!

वसन्त : (स्नानगृह से) अरे भई साबुन कहाँ है?

मधु : ध्यान से देखिए। वहीं तख्ती पर पड़ा है।

वसन्त : (वहीं से) और तौलिया!

मधु : हाथ-मुंह धो आइए और इधर कमरे से सूखा नया तौलिया लेकर पोंछ लीजिए।

[मंगला कपड़े का टुकड़ा भिगोकर लाती है और चुपचाप फ़र्श साफ़ करने लगती है।]

— : तू फ़र्श साफ़ करके चायदानी और प्यालियाँ धो डाल और मैं पानी रखती हूँ चाय का।

[रसोई घर के दरवाज़े से चली जाती है। कुछ क्षण तक मंगला चुपचाप फ़र्श साफ किये जाती है। फिर वसन्त हाथ-मुँह धोकर कुर्ते की आस्तीनें चढ़ाये, गुनगुनाता हुआ आता है—

हिंडोला कैसे झूलूं, मेरा जिया डोले रे।
मैं झूला कैसे झूलूं मेरा जिया डोले रे।

और अपने ध्यान में मग्न कुर्सी की पीठ पर पड़े हुए उस तौलिये से मुंह पोंछने लगता है जिससे सुरो और चिन्ती हाथ-मुंह पोंछकर गयी हैं।]

मधु : (रसोई घर से) यह केतली कैसी बना रखी है मंगला तूने? मनों मैल जमी हुई है पेंदे में (केतली हाथ में लिये आती है।) तुझे कभी बर्तन न साफ़ करने आयेंगे मंगला। कितनी बार कहा है कि सफ़ाई का...(अचानक वसन्त को सुरोवाले तौलिये से मुंह पोंछते हुए देखकर लगभग चीखते हुए) यह

सूखा नया तौलिया लिया है आपने ? मैं पूछती हूँ, आप सूखे और गीले तौलिये में भी तमीज़ नहीं कर सकते। अभी तो सुरो और चिन्ती चाय पी कर इस तौलिये से हाथ पोंछ कर गयी हैं।

वसन्त : (घबराकर) परन्तु नया......

मधु : नया तौलिया उधर कमरे में टँगा है।

वसन्त : ओह ये कम्बख्त तौलिये ! मुझे ध्यान ही नहीं रहता। वास्तव में दोनों तौलिये साफ़ हैं, मुझे......

मधु : जी साफ हैं। ज़रा आँख खोल कर देखिए ! गीले और सूखे......

वसन्त : मैंने ऐनक उतार रखी है और ऐनक केबिना तुम जानती हो हमारी दुनिया......

(खिसियानी हँसी हँसता है।)

मधु : जी आप की दुनिया। जाने आप किस दुनिया में रहते हैं। अब तो ऐनक नहीं। ऐनक हो तो कौन सा आप को कुछ दिखायी देता है।

(मुहँ फुलाकर धम से कोच में धँस जाती है।)

वसन्त : यह तुमने फिर मुंह लटका लिया। नाराज हो गयी हो।

मधु : (व्यंग्य से हँसकर) नहीं मैं नाराज नहीं।

वसन्त : (चिल्लाकर) तुम्हारा ख्याल है, मैं इतना मूर्ख हूँ जो यह भी नहीं पहचान सकता।

(पर्दा सहसा गिर जाता है।)

कस्बे के क्रिकेट-क्लब का उद्घाटन

पात्र:

प्रधान लाला भानामल

मन्त्री

दर्शक

[सामने लकड़ी के तीन-चार तख़्त मिलाकर एक छोटा-सा मंच बना है, जिस पर दरी और चादर बिछी है और एक मेज़-कुर्सी लगी है।

पर्दा उठने पर कुर्सी ख़ाली दिखायी देती है। हां, नीचे मंच पर, कुर्सी-मेज़ के चारों ओर, कस्बे के प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं। दर्शक ही श्रोता हैं।

क्षण भर बाद दर्शकों की ओर को, मंच के बायें कोने पर बैठा एक सूट-बूट-धारी युवक उठता है, जो क्लब का मन्त्री है।]

मन्त्री : आप लोग हमारे क्रिकेट-क्लब के इस उद्घाटन अवसर पर जिस संख्या में पधारे हैं, उसे देखकर न केवल हमें बड़ा प्रोत्साहन मिला है, बल्कि उससे क्रिकेट क्लब के भविष्य के सम्बन्ध में भी बड़ी आशा बंधी है। भविष्य में भी यदि हमें आप सज्जनों का ऐसा ही सहयोग और प्रोत्साहन मिला तो निश्चय ही हमारे क़स्बे का क्लब नगर की क्रिकेट एसोसीएशन से होड़ लेगा और एक दिन आयेगा जब संसार के क्रिकेट मानचित्र पर हमारे कस्बे का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा दिखायी देगा। (दर्शक तालियां बजाते हैं।) आप लोगों को यह सुन कर खुशी होगी कि नगर की डेयरी फ़ार्मों के दाँत खट्टे करनेवाले हमारे 'अमृत दुग्धालय' के मालिक, दानवीर, लाला भानामल जी ने हमारे क्रिकेट-क्लब का प्रधान बन उसका उद्घाटन करना स्वीकार कर लिया है। हमें पूरी आशा है कि जिस

प्रकार उनके श्री हाथों के स्पर्श से लगभग शून्य में जन्म लेकर 'अमृत डेयरी फार्म' अमर-बेल की तरह बढ़ रही है, उसी प्रकार हमारा क्रिकेट-क्लब भी दिन दूनी और रात चौगनी उन्नति करेगा। (मंच के दूसरे कोने पर डंडा हाथ में लिये बैठे हुए लाला भानामल जी की ओर संकेत करते हुए) आइए लाला जी।

[बड़ी अदा से सिर झुकाता है। लाला जी मुँह की खैनी थूक कर, हाथ में अपना डंडा सम्हाले मंच पर आते हैं। और प्रधान की कुर्सी सम्हालते हैं। मन्त्री मेज़ के नीचे रखा फूलों का हार उनके गले में पहनाता है। श्रोता तालियाँ बजाते हैं।

क्षण भर बाद, डंडा मेज़ पर रखकर, लाला भाना मल उठते हैं। फूलों के हार को गले में ठीक करते हैं एक आध बार खंखारते हैं।

लाला भानामल के सम्बन्ध में लेखक क्या कहे। बस, वे लाला भानामल हैं। जिन्होंने एक गाय की मलकीयत से कस्बे में अपना दुग्धालय खोला था और अब जिनकी डेयरी में पचास भैंसें और पचास गायें हैं और क्रीम और मक्खन निकालने की मशीनें हैं और जिन्होंने शहर की डेयरियों को नाकों चने चबवा दिये हैं। और जो गोबर उठाने से भैंसें दुहने तक सब काम स्वयं करते रहे हैं और करते हैं। और जिन्हें इसका गर्व है। गाढ़े का कुर्ता धोती पहने हैं, सिर पर गांधी टोपी इसलिए टिका रखी है कि सभा में नंगे सिर जाना अच्छा नहीं समझा जाता।

मन्त्री फिर अपनी जगह बैठ जाता है।]

लाला जी : सज्जनो और देवियो ! (खंखारते हैं) आप लोगों ने मुझे किरकट का प्रधान चुन कर मुझे जो सम्मान

बख्शा है उस लिए मैं आपका अभारी हूँ। हालांकि मैं किरकट की अपेक्षा अपने देश के गिल्ली-डंडे को कहीं अच्छा समझता हूँ। (हँसते हैं। दांत उनके बहुत सुन्दर नहीं, खैनी के कारण काले और बेढंगे हैं। पर हँसें तो दर्शकों के लिए उनका दर्शन अनिवार्य है) देखिए, भापण देना मुझे नहीं आता। अगरचे आप मित्रों के स्नेह की बदौलत इधर 'डेरी फार्मिंग' की तरह भापण देना भी मेरा पेशा बनता जा रहा है। (हँसते हैं।) मेरे मन में जो टूटे-फूटे विचार आयेंगे वे मैं आपके सामने रख दूँगा (हँसते हैं।) हमारा कस्बा शहर के बहुत नजदीक है, इसलिए जरूरी था कि जैसे हमारे 'अमृत दुग्धालय' का शुद्ध और पवित्र दूध वहाँ जाता है, वहाँ से कुछ हमारे कस्बे में भी आता। सो हमारे कुछ नौजवान वहाँ से किरकट ले आये हैं। (अपने बेढंगे दांत दिखाते हैं।) हमारे ज़माने में तो भाइ किरकट कोई जानता न था। हम तो गिल्ली-डंडा खेलते थे। अहा हा हा हा, क्या बढ़िया खेल है गिल्ली डंडा। मैं तो उसे किरकट का बाप समझता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि अँग्रेजों ने हमारे गिल्ली डंडे को देखकर किरकट के खेल का आविष्कार किया होगा। राज-ऋषि टंडन जी कहते थे कि अंग्रेजों ने अपने अंक हमारे संस्कृत अंकों ही को देखकर बनाये हैं। मैं कहता हूँ, अंक ही क्या, जाने ये लोग, हमारे 'वेद पुरानों' से क्या क्या, ले गये। रेल गाड़ी, हवाई जहाज, बन्दूक, तोप, तार, टेलीफ़ोन और रेडियो क्या हमारे यहाँ नहीं थे ? थे और जरूर थे। (डंडे को उठा कर हाथ में ले लेते हैं) हम लोगों ने अपने शास्त्रों का कोइ लाभ नहीं उठाया और दूसरे उन्हीं

की बदौलत देखिए क्या से क्या बन गये।
[डंडे से मंच को ठकोरते हैं। और उसे फिर वहीं रख कर चारों ओर देख कर दांत दिखा देते हैं।]

— : इधर सुनते हैं एक और चीज निकली है...क्या कहते हैं उसे...जिससे हम यहाँ बैठे बैठे दूर की चीजों को सुन ही नहीं, देख भी सकते हैं।

मंत्री : (लुक्मा देता है) टेलीवीयन

लाला भानामल : हाँ हाँ टेलीबीजन, टेलीबीजन (दांत दिखा देते हैं।) साले ये अंग्रेजी नाम भी क्या मुसीबत हैं, जबान पर ही नहीं चढ़ते। मैं पूछता हूँ, अंग्रेजों ने इस खोज में क्या तीर मारा है। महाभारत में 'संजे' हस्तिनापुर में बैठे महाराज 'धिरतराष्टर' को महाभारत के युद्ध का रत्ती रत्ती हाल कैसे बताते थे। कोई क्या बोला, किसने क्या किया, कैसे लड़ाई हुई, युद्ध का एक एक ब्योरा वे हर दिन देते थे। मैं पूछता हूँ कैसे? टेलीबीजन ही नहीं, टेलीबीजन से भी बढ़िया कोई चीज़ जरूर उनके पास रही होगी। सज्जनो! आज हम आजाद हो गये हैं। हमारे हाथ-पाँव ही नहीं हमारे दिमाग भी अंग्रेजी गुलामी से आजाद होने चाहिएं। उनकी किरकट यहाँ लाने के बदले क्या यह अच्छा नहीं था कि हम यहाँ से गिल्ली-डंडे की एक टीम लेकर विलायत जायें। खर्च भी कम हो और मज़ा भी दूना आये। अपने देसी खेल हैं ही ऐसे कि हींग लगे न फिटकड़ी रंग आये चोखा। कम खर्च और बाला नशीन। रही यह अंग्रेजी किरकट, सो बल्ले

विक्टों और उन साले गदेलों को......क्या कहते हैं उन्हें, जिन्हें पिंडलियों पर बाँधते हैं......

मन्त्री : (लुक्मा देते हुए) पैड, पैड !

लाला जी : हाँ हाँ...पैड...पैड—उन सब को छोड़ भी दें और किरकट का केवल एक गेंद लेने जायें तो पाँच-सात रुपये से कम न लगें। क्यों मन्त्री जी !

[मन्त्री जी की ओर देखते हैं, मन्त्री जी समर्थन में सिर हिलाते हैं।]

लाला जी : सौ सवा सौ रुपया पास न हो तो खेल शुरू ही नहीं किया जा सकता। और गिल्ली-डंडा अहा हा हा हा ! पाँच पैसों से गेंद बल्ले के सारे मजे ले लो। न ढाल का जरूरत न कवच की। जितना चाहे पद लो या पदालो। जिन दिनों हम खेलते थे, सच मानिए कभी हमारे हाथ में डंडा आ जाता था तो हम तो दो दो दिन पदाते थे। कई बार तो शत्रु मैदान छोड़ जाते थे। (दांत दिखाते हुए हँसते हैं।) और किरकट भी कोई खेल है ! (दोनों हाथ मिलाकर दिखाते हुए) गेंद रोकने के लिए इतना चौड़ा बल्ला और घुटनों तक गदेले। जनखों की तरह थोड़ी सी जगह में दौड़ते जाओ। उधर गिल्ली डंडा में...अहा हा हा ! सारे का सारा मैदान अपना—जहाँ जी चाहे टुल्ल लगाते, भागते फिरो। (तनिक हँसते हैं।) माफ कीजिएगा मन्त्री जी, हमको तो अपन गिल्ली डंडा आपके किरकट से ज्यादा पसन्द है।

(मन्त्री महोदय सिर्फ खींसें निपोर देते हैं।)

— : (रौ में आकर हँसते हुए) पिछली बार जब हम

शहर गये तो वहाँ किरकट का मैच हो रहा था। हमारा एक भतीजा है जो हमको जबरदस्ती दिखाने ले गया, कहने लगा बिलायत से खेलने वाले आये हुए हैं, फिर यह मौका हाथ न आयेगा। हम भी चले गये। दो घंटे बैठे रहे, चार भी हिटें नहीं लगायीं मेरे शेरों ने, गेंद आता तो ठस से वहीं रह जाता। ज्यादा जोर मारते तो आठ दस गज़ इधर उधर! एक आध ज़ोर की हिट लगी भी तो दबोच ली गयी। वैसी ज़ोर की रही होगी आप कल्पना कर लीजिए। (दांत दिखा देते हैं।) हमको तो नींद आने लगी। हम होते तो इस पार या उस पार। यह भी कोई खेल है कि दो घंटे में चार कदम न बढ़े। भले आउट हो जाते, पर हिट लगाते तो गेंद मैदान के अन्दर न रहता। गिल्ली को जब हम टुल्ल लगाते थे तो थी किसी की मजाल तो उसे दबोच जाये, उंगलियाँ न टूट जाती। एक बार डंडा हाथ में आ जाता तो फिर वही कैफियत होती कि अल्ला दे और बंदा ले। लेकिन उसके लिए चाहिए कलाई में ज़ोर। और कलाई में ज़ोर आज कल के जवानों में कहाँ से आये। हम दिन में चार चार सेर दूध पी जाते थे, मक्खन मलाई ऊपर से! और ये हमारे जवान...बड़ा ज़ोर मारेंगे तो चार प्याले चाय पी लेंगे (हँसते हैं।) जिनमें चार चम्मच दूध पड़े और वह भी सपरेटा *कस बल आये तो कहाँ से। मेरा भतीजा कह रहा था कि हमारे देस में भी किरकट के बड़े बहादुर खिलाड़ी हो गुजरे हैं। राणा रणजीत सिंह तो ऐसे जबरदस्त खिलाड़ी थे कि बिलायत वाले भी उनका लोहा

---

* सेपरेटा = वह दूध जिसमें से क्रीम निकल चुकी हो।

मानते थे, उन्हीं के नाम पर 'रांजी ट्राफी' का खेल सारे हिन्दुस्तान में खेला जाता है। उनके लड़के दिलीप सिंह भी बड़े मशहूर खिलाड़ी रहे। क्यों न हो, क्यों न हो! अरे वे शुद्ध दूध पीते थे और स्वच्छ घी खाते थे। आजकल गाय-भैंस के शुद्ध घी की बात तो रही दूर। डालडा भी शुद्ध नहीं मिलता (दांत दिखाते हैं) आपको मालूम नहीं, मैंने डेरी फ़ार्म खोलने का निश्चय क्यों किया? आप लोग तो जानते हैं कि हमारा मकान तो अब भी शहर में है। हमारे बाबा तो साहुकारा करते थे, लेकिन हमको शौक था कुश्ती लड़ने का। सुबह चार मील की दौड़ लगाते और शाम को अखाड़े जाते। घर हमारा छोटा सा था, भैंस तो क्या वहाँ बकरी भी न पाली जा सकती थी और अच्छा दूध-घी न मिले तो कुश्ती क्या लड़ी जा सकती है। गली में एक ग्वाला आता था। सीता-राम की सौ सौ कसमें खा कर उसने कहा कि दूध हमें शुद्ध मिलेगा, लेकिन एक दिन तड़के चार बजे उठ कर मैं दौड़ लगाने के लिए जा रहा था कि मैंने उसे एक डेरी फार्म से निकलते देख लिया। साला सपरेटा पिलाता था हमें। पकड़ के गर्दन से दो घूँसे दिये तो विलबिला उठा। कहने लगा, सेठजी आपको नहीं पिलाता सपरेटा। मैंने कहा कि साले दूसरों को पिलाता होगा। इस हराम की कमाई से क्या बरकत होगी। बस साहब, वह दिन तो आज का दिन, उस ग्वाले से फिर दूध नहीं लिया। इसके बाद मैं आध मील चलकर एक ग्वाले के यहाँ जाने लगा। कुछ दिन तो बड़ा बढ़िया दूध मिला। इतनी मोटी मलाई की परत दूध पर आती थी। (उँगली और अँगूठे की सहायता से

बताते हैं कि कितनी मोटी परत आती थी) हम बड़े खुश हुए। लेकिन कुछ दिन बाद पेट में गड़बड़ रहने लगी। दूध का स्वाद भी कुछ बदला बदला जान पड़ा। हम हैरान कि हे राम क्या बात है? दूध हम अपने सामने दुहाते, वह हमारे सामने बाल्टी उलट कर खाली कर देता और दूध दुह कर हमारे बर्तन में डालता। दो चार बार दूध फट भी गया। तब हम बड़े चकराये। एक दिन मैं प्रातः दौड़ लगा रहा था और सच मनिए दौड़ लगाते समय बड़े दूर की बातें सूझती हैं। मुझे ख्याल आया कि उस बाल्टी को जाँचना चाहिए, जिसमें वह हमें दूध दुह कर देता है। दौड़ से लौट कर मैं दूध लेने जाता था। सो उस दिन जब वह बाल्टी को मेरे सामने खाली करके दूध दुहने लगा तो मैंने कहा कि भैया जरा बाल्टी तो दिखाना। वह लगा आना-कानी करने। मैंने बाल्टी पर हाथ रखा। उसने खींचा। इस छीना-झपटी में बाल्टी औंधी हो गयी। अब क्या देखते हैं कि खाली बाल्टी में झर झर सिंघाड़े के आटे मिले पानी की धार बह रही है। धत्त तेरे की। दोहरे पेंदे की बाल्टी बनवा रखी थी कम्बख्त ने। ग्वाला भी अखाड़े जाता था। अपनी चोरी पकड़ी जाते देख वह उलझ पड़ा मुझसे, लगा बाल्टी छुड़ाने. लेकिन यह कलाई कोई आज के किरकट खेलने वाले की कलाई तो है नहीं, बाल्टी टेढ़ी हो गयी पर हाथ से नहीं छूटी, तब मैंने वही हाथ खींचकर जो दिया धोबी-पटड़ा तो ग्वाले महाशय लगे धरती नापने। मैं तो उसे पुलिस में दे देता, पर उसका बुड्ढा बाप मेरे पाँव पड़ गया। दो एक और परिचित वहाँ थे। उन्होंने भी कहा कि पाँव पड़ता है, बख्श दो इस

बार, फिर न करेगा। जो चरण छू, क्षमा माँग ले उसे अभय दान देना हम हिंदुओं का पुराना धर्म है। तब 'जा साले तेरी करनी तेरे आगे', यह कहकर हम चले आये। अब फिर शुद्ध दूध की समस्या सामने आयी तब एक ग्वाला मिला जो अपनी गाय लेकर हमारी गली में आने और हमारे बर्तन में दुह देने को तैयार था। हम ऊपर की मंजिल में रहते थे, नीचे का मकान बाबा ने किराये पर दे रखा था। ऊपर से हमारी बहन बाल्टी लटका देती और उसी में ग्वाला दूध दुह देता। कुछ दिन बड़ा अच्छा दूध मिला। मलाई भी चकाचक आयी, लेकिन फिर एक दिन देखा तो लगा कि दूध क्या, यह तो पानी है। मेरे भाइयों को न सुबह उठने का शौक था, न सैर-व्यायाम का। और ग्वाला आता था प्रातः सूरज चढ़ने से कहीं पहले। तब मैंने ही सी० आई० डी० करने की ठानी, और एक दिन पकड़ लिया उसे रंगे हाथों। कम्बख्त साइकल की ट्यूब में पानी भर लाता था। देखने में लगता था कि यों ही बेकार ट्यूब हैंडल से लटक रही है। दूध अच्छा मिल रहा है, यह जान दो चार दिन बाद बहन आश्वस्त हो गयी थी और बाल्टी की रस्सी को जंगले से बाँध दूसरे काम में लग जाती थी। ग्वाला दूध दुह कर जब आवाज देता तो वह जाकर बाल्टी खींच लेती। ग्वाला बड़े मजे से ट्यूब से जल उसमें छोड़ दिया करता था। पकड़े जाने पर उसकी जो गति मेरे हाथों हुई होगी, उसकी आप कल्पना कर सकते हैं। पर उस दिन मन में खेद भी कम न हुआ। यह बात समझ में आ गयी कि इस शहर में और चाहे जो मिल जाय पर दूध शुद्ध नहीं मिल सकता।

तब मैंने प्रण किया कि मैं न केवल अपने लिए शुद्ध दूध का प्रबन्ध करूँगा, बल्कि सारे शहर को शुद्ध दूध पिलाऊँगा। मन ही मन मैंने स्कीम बनायी और जा बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ। बाबा अपने कमरे में बही-खाता खोले बैठे थे। मुझे हाथ जोड़ खड़े देखकर उन्होंने आँखें उठायीं। वे मुझे प्रथम कोटि का निकम्मा समझते थे। मैंने कहा कि बाबा आपने मुझे सदा निकम्मा समझा है, आज मैंने प्रण किया है कि मैं भी कुछ करके दिखा दूँगा। बाबा हँसे। उनकी आँखों में सन्देह प्रकट था। पर जाने मेरी आकृति पर कैसी गम्भीरता थी कि उन्होंने क्षण भर बाद पूछा, 'आखिर हम भी जानें क्या करना चाहते हो'? मैंने कहा कि मैं शहर में नहीं, कस्बे में रहना चाहता हूं और वहाँ कुछ काम करूँगा और आप पर बोझ नहीं बनूंगा। आप एक बार तीन सौ रुपया दे दीजिए और यदि वह मैंने गँवा दिया तो मुझे जीवन भर कौड़ी न दीजिएगा और न मेरा विश्वास कीजिएगा। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा अवसर न आयेगा। मेरे भाइयों ने तो बाबा को बहुतेरा रोका कि यह आवारा है, सारा रुपया अखाड़े के साथियों की भेंट कर आयेगा, पर जाने हमारे बाबा को कैसे मेरी बात का विश्वास आ गया। उन्होंने मुझे तीन सौ रुपया दे दिया और मैं यहाँ चला आया और मैंने एक गाय पाली और 'अमृत दुग्धालय' का सूत्रपात कर दिया। कैसे यह दुग्धालय बढ़ा और इतना बड़ा फार्म बना, यह आप सब जानते हैं। मुझे केवल इतना संतोष है कि मैंने स्वयं अपने लिए ही शुद्ध दूध-घी का का प्रबन्ध नहीं किया, बल्कि शहर भर में अमृत की नहर

बहा दी। मुझे दुख इसी बात का है कि गंगा के किनारे रहने वाले उससे किसी तरह का लाभ नहीं उठाते। क़स्बे में कितने लोग हैं जो 'अमृत दुग्धालय' की सेवाओं का लाभ उठाते हैं। कुछ लोगों ने यह प्रवाद फैला रखा है कि लाला जी दूध शहर में देते हैं और सपरेटा कस्बे में। (हँसते हैं और अपने सारे दाँत दिखाते हैं) भला बताइए, कभी ऐसा हो सकता है। अरे भाई चार घर तो डायन भी छोड़ लेती है। क्या मैं सपरेटा अपने पड़ोसियों को पिलाऊँगा। सपरेटा हम भी नाली में नहीं बहाते। वह ऐसी सरकारी संस्थाओं में जाता है जो कमज़ोर बच्चों के लिए दूध का प्रबन्ध करती हैं। बीमार बच्चे 'अमृत दुग्धालय' का शुद्ध दूध पचाने की शक्ति नहीं रखते, गत आठ वर्ष के अनुभव से यह बात साबित हो गयी है। इसलिए उन्हें सपरेटा पिलाया जाता है। लेकिन आप विश्वास कीजिए 'अमृत दुग्धालय' का सपरेटा भी आम डेरियों के शुद्ध दूध से कहीं अधिक अधिक शक्तिदायक है। अब हम एक ऐसी मशीन लगा रहे हैं जो पलक झपकते सब गायों भैंसों का दूध दुह देगी, ग्वालों के हाथ भी न लगेंगे स्तनों को। आप लोग साइंस पढ़े हैं, जान सकते हैं कि इससे कितना लाभ होगा और कितना स्वच्छ और शुद्ध दूध आपलोगों को मिलेगा। सज्जनो, आप किरकट क्लब खोल रहे हैं। मैं प्रसन्न होता यदि आप इसके साथ एक गिल्ली-डंडा क्लब भी खोलते। लेकिन मैं सदा आप के साथ हूँ। मुझ से जैसी सेवा लेना चाहें मैं हाज़िर हूँ, लेकिन यह न भूलिए कि तब तक आप विदेसियों को नहीं हरा सकते, जब तक आप राणा रणजीत सिंह और दिलीप सिंह की तरह

स्वच्छ और शुद्ध दूध का प्रयोग नहीं करते। यदि आप चाहते हैं कि आप का नाम भी उन्हीं की तरह किरकट के इतिहास में अमर रहे तो शुद्ध दूध, घी, मक्खन और मलाई का प्रयोग कीजिए। चारों चीजें स्वच्छ और शुद्ध महारे दुग्धालय में मिल जायंगी।

[हाथ जोड़ और डंडे को हाथ में लेकर बैठ जाते हैं। और जैब से बटुआ निकाल मज़े से खैनी बनाने लगते हैं।

दर्शक तालियां बजाते हैं, जिनमें मन्त्री की तालियां सबसे मुखर हैं।

तालियां बजाते बजाते मन्त्री उठता है। निमिष भर लाला जी से मिसकौट करता है। फिर :]

मन्त्री : सज्जनो ! आपको यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि लाला जी ने १०१ रुपया हमारे क्रिकेट क्लब को दान दिया है और पांच का नोट इसी वक्त प्रदान किया है (नोट जनता को दिखाता है।) और मासिक सहायता का भी विश्वास दिलाया है। हम ही नहीं सारा कस्बा, बल्कि मैं तो कहूँगा कि क्रिकेट संसार इस दान के लिए उनका आभारी है। उन्होंने हमें कुछ अमूल्य परामर्श दिये हैं, उनका पालन हमारे जीवन का ध्येय होगा। हम लाला जी को विश्वास दिलाते हैं कि क्रिकेट क्लब में गिल्ली-डंडे का पूरा प्रबन्ध होगा और क्रिकेट के मैदान में हम सप्ताह के कुछ दिन अपने इस देशी खेल के मैच रखा करेंगे। लाला जी का आशीर्वाद और सहयोग हमारे साथ रहा तो हमें पूरा निश्चय है कि हम गिल्ली-डंडे की एक टीम इंगिलस्तान ले जायेंगे और इस पुरुषत्व-पूर्ण खेल का सिक्का अंग्रेजों पर बैठायेंगे।

[दर्शकों की तालियां—पर्दा गिरता है।]

मस्केबाज़ों का स्वर्ग

[फिल्मी दुनिया की एक झलक]

पात्र

सापले

दीपक परवाना

गीजू भाई

जावेद

पांचूदा

देसाई

अजगाउँकर

पितलकर

फरेरा

हरीश

परेश

कमला

डिल्ली

मार्शल

पहला चपरासी

दूसरा चपरासी

बैरा, एक्स्ट्रा आदि

[पर्दा 'ज्योति फिल्म्ज़' की कैंटीन में उठता है। बायीं दीवार के मध्य काउंटर है, जिसके ठीक ऊपर बड़े सुन्दर अक्षरों में 'कल्पना कैंटीन' लिखा है।

काउंटर के उधर को एक दरवाज़ा है, जो कैंटीन के किचन को जाता है। काउंटर के इधर कोने में एक अकेली मेज़ लगी है, जिसके आस पास चार कुर्सियां हैं। पर्दा उठते वक्त, सापले इस मेज़ पर बैठा कुछ खाके बनाने में व्यस्त है।

सामने पूरी दीवार नहीं, कमर तक दीवार है। उसके बाद दो तीन स्तम्भ बने हैं, जिनके सहारे टाइलों की छत टिकी है। इस कमर तक ऊंची दीवार के ऊपर से सामने स्टूडियो नम्बर एक का मंडप और बाग़ीचा और उसमें से होकर स्टूडियो को आने जाने वाले लोग दिखायी देते हैं। कैंटीन में बैठा हुआ कोई व्यक्ति चाहे तो बाहर आते जाते किसी व्यक्ति से बातचीत भी कर सकता है।

दायीं दीवार के मध्य बाहर से आने वाला दरवाज़ा है, उधर के कोने में 'वाशबेसन'* लगा है जिसके ऊपर एक घटिया सा शीशा दीवार में जड़ा है। साथ में खूँटी से मैला सा तौलिया टंगा है।

कैंटीन में बैठने का प्रबन्ध यों है कि काउंटर के पास थोड़ी सी जगह छोड़कर दोनों ओर मेज़ कुर्सियां लगीं हैं—चार चार कुर्सियां और बीच में एक एक मेज़! इस तरह सापले वाली मेज़ ज़रा सी हटकर कोने में पड़ जाती है। चार चार मेज़ें आमनेसामने दो पंक्तियों में लगी हैं। उनके बाद दो बड़े मेज़ और उनके साथ दो बड़े बेंच लगे हैं। छोटे मेजों पर मेजपोश बिछे हैं

*वाश-बेसिन = हाथ धोने का गमला।

जो न बहुत साफ़ हैं, न मैले। बड़े मेज़ नंगे हैं और अधिक प्रयोग से काले पड़ गये हैं। प्रकट है कि यह एक्स्ट्रा लोगों के लिए हैं और दूसरे स्टूडियो के पदाधिकारियों और बाहर से आने वाले प्रतिष्ठित आर्टिस्टों के लिए।

काउंटर पर एक ईरानी बैठा है जो मौन रूप से हिसाब लिखता रहता है।

लंच टाइम में कुछ देर है, इसलिए कैंटीन में रौनक नहीं है। इक्का-दुक्का लोग आते हैं और चाय पीकर चले जाते हैं। कैंटीन के बैरों का मुखिया मार्शल ब्रगैंज़ मैला सा एपरन पहने किचन से चाय लाता और खाली प्लेट प्याले ले जाता है। दो तीन छोकरे उसकी सहायता कर रहे हैं।

सापले उनकी ओर से बेपरवाह निरन्तर स्केच बना रहा है। पर्दा उठने के क्षणभर बाद, बाहर के दरवाज़े से कम्पनी का गीतिकार 'दीपक परवाना' कम्पनी के एडीटर गीजूभाई के साथ प्रवेश करता है, आकृति से प्रकट है कि बड़ी मौज में है। निमिष भर के लिए कैंटीन के नाम को देखता है और नाटकीय ढंग से ठहाका मारता है।]

दीपक परवाना: कल्पना...हा...हा...हा...क्या नाम रखा है, इस साली कैंटीन का। सच कहता हूँ गीजू भाई! अपने सभी हिट गीतों के बोल मुझे यहीं सूझे। वह 'बालम परदेसिया ओ' और वह 'तेरे नैन कमल...शर्मीले...लजीले हठीले ओ जान मेरी'! और वह गाना, जिसे गा गाकर लोग पागल हो गये 'आना मेरी जानमेरी...सब मुझे यहीं सूझे। (वाश बेसिन में जाकर हाथ धोते और रूमाल से पोंछते हुए) 'आना मेरी जान' का बड़ा दिलचस्प इतिहास है।

हुआ यों कि सुबह मैंने घर में नाश्ते के वक्त आमलेट माँगा। इतवार का दिन था, मलाड की दुकान बन्द, अंडे शायद मिले नहीं। मैं झुँझलाया। श्रीमती जी पहले से ही भरी बैठी थीं, बोलीं, 'घर में मुर्गीखाना तो है नहीं कि जब चाहो अंडे मिल गये'। यहाँ 'कल्पना' में पहुँचा तो बढ़िया आमलेट खाने को मिला और गीत के पहले बोल ओठों पर आ गये

'आना मेरी जान मेरी संडे के संडे
खिलाऊँ तुम्हें, मुर्गी के—
मुर्गी के अंडे।'

गीजू भाई : 'आना मेरी जान तो हुआ' साला अब कुछ अंडे-वंडे भी खिलायेगा या फोकट में गाना सुना सुना कर भेजा चाटेगा।

परवाना : (छोटी मेज़ की ओर बढ़ते हुए) ये ऐसे-वैसे गीत नहीं गीजू भाइ। ये गीत हज़ारी है हज़ारी! एक एक गीत का हज़ार हज़ार लेता हूँ। तुम खुशकिस्मत हो साले, कि तुम्हें फोकट में सुनने को मिलते हैं। नहीं प्रोड्यूसर तो स्कॉच की बोतल रख कर गीत सुनते हैं। लेकिन तुम अंडे जरूर खाओ। आज हम खुश हैं। कपूर सेन ने कम्पनी ले ली तो 'दादर-बार' में पार्टी रही। (बैरा को आवाज देता है।) मार्शल......मार्शल!

(मार्शल किचन से झांकता है।)

मार्शल : आता है साब!

परवाना : देखो इन साहब के लिए दो अंडे का आमलेट और सिंगल चाय लाओ।

मार्शल : आपको कुछ नहीं माँगता साब।

परवाना : हमको एक सोडा माँगता है। (गीजू भाई से) तुम ज़रा यहाँ बैठो गीजू भाई। वह सापले बैठा नक्शे बना रहा है। मैं ज़रा उससे बात कर आऊँ। यह साला नक्शे बनाता रहेगा और दूसरे लोग डाइरेक्टर प्रोड्यूसर हो जायेंगे। (उठते हुए उसे आवाज़ देता है) हलो सापले!

सापले : (कागज से सिर उठा कर थके स्वर में) कहो भई परवाने!

परवाना : (उसकी ओर जाते हुए) बेटा मर जाओगे सारी उमर खाके बनाते। कुछ तिड़ीबाज़ी भी किया करो।

सापले : अपने को यह सब नहीं आता। अपने तो काम करना जानता है। तुम कुछ हम को सिखाये तो हम भी सीखे, पर तुम साला बात करेगा ज़मीन आसमान की और काम नहीं करेगा डबल का भी।

परवाना : सुनो! (कोहनी उसकी मेज़ पर टेक कर, भेद भरे स्वर में) अगर हम कोई फ़िल्म डाइरेक्ट करें तो तुम हमारे ग्रुप में काम करोगे। सच कहता हूँ, मुझे तुम पर बड़ी दया आती है।

सापले : अरे तुम पहले कान्ट्रेक्ट तो करो।

परवाना : कान्ट्रेक्ट हो गया समझो (और भी भेद भरे स्वर में) देखो किसी से बोलना नहीं, ज्योति फिल्म्ज़ की अगली पिक्चर में डाइरेक्ट कर रहा हूँ। तुम चाहो तो आर्ट डाइरेक्शन में तुम्हें दे दूँगा।

सापले : और जो ये एक्टर परेश डाइरेक्टर बने हैं।

परवाना : मेरी फिल्म 'हाय मेरी जान में' एक्ट करेंगे।

सापले : पर उनके लिए तो कहानीकार हरीश को निशात स्टूडियो पूना से १५०० रुपया महीना पर बुलाया था।

परवाना : और उसने टाल्स्टाय की 'आना करानीना' का बुरी तरह गला काटा है। पर या तो वह अब कहीं और जाकर टाल्स्टाय की किसी और कहानी का गला उलटे छुरे से काटेगा। या अगर उसे ज्योति फिल्म्ज़ ही में रहना है तो मेरी पिक्चर के डायलाग लिखेगा।

(आत्मतोष से हँसता है।)

सापले : तो क्या बॉस (Boss) से तुम्हारी बात हो गई है।

परवाना : बास...कौन बास......(ठहाका मारता है।)...तुम भी न जाने किस दुनिया में अफ़ीम खाकर सोये रहते हो सापले। हमारे बास तो कम्पनी बेच रहे हैं...

सापले : ओ तो हम भी सुना था। पर कम्पनी तो महीना भर से बिक रहा है। और जब तक कम्पनी बिकता नहीं, बास बास है। हमारा एक जानू * है, सेठ कपाड़िया। वह खरीदने को माँगता था कम्पनी। आया भी था, पर बात नहीं बना।

परवाना : सेठ कपूरसेन कम्पनी को ले रहे हैं और कपूरसेन से तुम जानो हमारी दाँत काटी रोटी है। रात ही उन्होंने मुझे बुलाया और बोले—'देखो परवाना, हम तुम्हारी कम्पनी खरीद रहे हैं। कोई बढ़िया सी कहानी ढूँढो और गाने ऐसे दो कि पिक्चर जुबली मनायें। हमने

---

† बॉस = मालिक * जानू = परिचित

उन्हें थीम सुनाई तो फड़क उठे। बोले, तुम लिख डालो कहानी। गाने भी तुम्हीं लिखो। हमने कहा, 'डाइरेक्शन दो तो कहानी और गाने हम दें।' बोले, 'डाइरेक्ट भी तुम्हीं करो। हमें तो पिक्चर हिट चाहिए'। 'उसकी चिन्ता न करो सेठ', हमने कहा, 'फ़िल्म गोल्डन जुबली न मनाये तो परवाना नाम नहीं।'

सापले : तुम गाने लिखो और फ़िल्म जुबली न मनाये, यह कैसे हो सकता है ?

परवाना : गाने ही नहीं, कहानी भी और डाइरेक्शन भी। अब लोगों को मालूम होगा कि परवाना गीतिकार ही नहीं, उसमें दूसरे भी गुण हैं। (स्वर को तनिक धीमा करके) देखो अब हमें अपना ग्रुप बनाना है और मैं सोचता हूँ, तुम्हें अपने साथ लेलूँ। क्या पड़े यहाँ खाके बनाते रहते हो।

सापले : तुमारा बड़ा मेहरबानी होगा।

परवाना : कहानी मैं लिख रहा हूँ और एक बढ़िया गाना भी हो गया है। फ़िल्म को अपने साथ उठाकर गोल्डन जुबली की चोटी पर न छोड़ आया तो परवाना नाम नहीं। ज़रा ट्यून देखो।

इचक मीचक आँखें तेरी
आँख मटकते तारे
ओ इचक मीचक !

सापले : यह इचक मीचक क्या बला है ?

परवाना : तुम भी यार निरे बंडल* हो। पहले बायीं आँख मारो और कहो 'इचक,' फिर दायीं आँख मारो और

* बंडल = मूर्ख = उजबक

कहो 'मीचक'। लो देखो (करके दिखाता है) इंचक मीचक आँखें तेरी, आँख मटकते तारे'...क्यों? कुकी का डाँस हो और यह गाना! अगर हाल में लोग आँखें मारते हुए गाने और ताली न बजाने लगें तो परवाना नाम नहीं।

[मार्शल आमलेट की प्लेट और एक कप चाय गीजू भाई के सामने रख देता है और सोडे का गिलास परवाना को देता है। परवाना एक ही घूंट में खत्म करके उसे वापस दे देता है।]

परवाना : साला यह सोडा है या पानी? जरा भी तेज़ नहीं।

मार्शल : साब! कल का है, आज का तो अजुन† आया नहीं।

(गिलास लेकर चला जाता है।)

परवाना : (फिर कोहनी मेज पर टेक कर उसी तरह भेद-भरे स्वर में) देखो, अब मतलब की बात करो। यह सब बकवास जो बना रहे हो, इसे छोड़ो और ड्राइंग रूम के दो बिलकुल नयी तर्ज़ के डिज़ाइन बना डालो। शाम को मैं सेठ कपूरसेन को यह गीत सुनाने जा रहा हूँ। तुम्हारे डिज़ाइन मैं लेता जाऊँगा। उसे पसन्द आ गये तो समझो तुम्हारी किस्मत खुल गयी। डिज़ाइन तुम बनाते हो और नाम साला दूसरों का होता है। मैं तुम एकदम आर्ट डाइरेक्टर बना दूँगा।

मापले : तुम को हम से कोई शिकायत न होगा।

परवाना : (और भी भेद-भरे स्वर में) सेठ कपूरसेन कम्पनी लेते ही छांटी करनेवाला है। यह साले उर्दू-फुर्दू वाले

† अजुन = अभी।

सब हट जायेंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम यहीं रहो। मिल कर टीम-वर्क ‡ करेंगे। फिल्म तो निश्चय हिट होगी।

सापले : बस, यह डिजाइन खत्म हो गया है। अभी तुम्हारे लिए बना देता हूँ। अपना तो साला आठों घड़ी यही काम है।

परवाना : और देखो आज से तुम हमें 'दीपक' बुलाया करो। यह 'परवाना' उर्दू का नाम है। हम इसे छोड़ देंगे।

सापले : पर तुम्हारा यही नाम तो इन्डस्ट्री में चलता है। साला दीपक को कौन जानेगा।

परवाना : कहता तो तुम साला ठीक है, पर कपूरसेन महासभाई है। वह उर्दू का साला नाम फिल्म से मिटा देना चाहता है। हम उसको बोलेगा कि अपने को नाम बदलने में कोई वांदा नहीं*। नुक्सान तुम्हारा होगा।

गीजू भाई : (वहीं बैठे बैठे चिल्लाकर) अरे परवाने, चलेगा कि वहीं रहेगा और अपने सारे गाने सापले के भेजे में ठूंस कर हिलेगा।

परवाना : आया, (सापले से) तो सापले तुम बना डालो बढ़िया से दो-चार ख़ाके।

(गुनगुनाता हुआ लौटता है।)

ईचक मीचक आँखें तेरी
आँख मटकते तारे!
ये आँखें हैं या दिल को चीरने वाले हैं दो आरे!
ओ ईचक मीचक।

[गीजू भाई की बांह में बांह देकर मस्ती से झूमता हुआ निकल जाता है। बाहर से जावेद प्रवेश करता है।]

---

‡ *Team work* = इकट्ठे मिल कर काम करना।

*कोई वांदा नहीं = कोई आपत्ति नहीं।

जावेद : (सापले के पास जाकर) क्यों सापले, कर दिये तैयार डिज़ाइन।

सापले : (सामने पड़े खाके पर पेन्सल से एक-आध निशान बनाकर) हाँ, यह लो। (तीन-चार खाके उसे देता है) बोलो कब महूर्त कर रहे हो।

जावेद : बस, आज सब तय हो जायेगा।

सापले : हम सुना कपूरसेन खरीद रहा है कम्पनी। तुम्हारे कासिम भाई का क्या हुआ ?

जावेद : अरे, वह बनिया हमारे कासिमभाई लालभाइ का क्या खाकर मुकाबिला करेगा। ११ लाख आफ़र किया है कासिमभाई ने। अभी मैं सेठ की कार पर ही आया हूँ। देखो, कहानी तो मेरे भाई अयूब की होगी, डायलाग शब्बीर लिखेगा, गाने रहमत जानी के होंगे, म्यूज़िक पितलकर का होगा, हीरो मैं, हिरोइन पिम्मी, फ़ोटोग्राफ़र कुलकर्नी, साउंड रिकार्डिस्ट बेड़कर और एडिटर काका। बोलो, कैसी टीम रहेगी ? अब तक लोग जावेद को महेशकुमार के नाम से सिर्फ एक एक्टर के रूप में जानते थे, जब तबस्सुम—मेरी फ़िल्म का नाम तबस्सुम है—रिलीज़ होगी तो, लोग जानेंगे कि जावेद एक कामयाब एक्टर ही नहीं, माहिर डाइरेक्टर भी है। (धीरे से) मैंने सेठ से कह दिया है कि मैं तुम्हें अपने यूनिट में ले रहा हूँ। तुम यहाँ कितना पाते हो ?

सापले : तीन सौ।

जावेद : मैं तुम्हें साढ़े तीन सौ, हो सका तो चार सौ, तक दिला दूँगा। बोलो चलेगा।

सापले : चलूँगा।

जावेद : यह हिन्दी-फिन्दी वाला एक नहीं रहने का। कासिम आई आया कि छुट्टी हुई। लेकिन तुम फ़िक्र न करो। तुम्हें इस झगड़े से क्या लेना है। बस, दो चार और बढ़िया डिज़ाइन बना डालो।

[जैसे तेज़ तेज़ आया था वैसे ही तेज़ तेज़ चला जाता है।

दो लड़कियाँ, जो प्रकट है कि एक्स्ट्रा हैं, प्रवेश करती हैं। एक का नाम कमला है और दूसरी का टिल्ली]

कमला : (बैरे को आवाज़ देती है।) ब्वाय दो सिंगल चाय लाओ। (टिल्ली को बेंच पर बैठा कर) तुम यहीं बैठो टिल्ली, मैं अभी आइ। (सापले के पास जाती है।) क्यों सापले साहब, सुना परेश साहब का फ़िल्म अब नहीं बनेगा, हमने तो बड़ी मुश्किल से उसमें छोटा सा रोल लिया था।

सापले : (थकी हुई सी एक अँगड़ाई लेकर, वैसी ही थकी हुई आवाज़ में) सुना तो हम भी है।

कमला : और कल उसका महूर्त होने जा रहा था।

[बाहर दूर से परवाने के गाने की आवाज़ आती है, कमला उसे सुनते ही अनायास काउंटर के उधर सामने की दीवार के पास जा खड़ी होती है।]

परवाना : } वो जो बेचते थे दवाये दिल,
वो दुकान अपनी बढ़ा गये।

कमला : परवाना साहब बड़े रंग में हैं।

परवाना : (बाहर से) हम हमेशा रंग में रहते हैं।

वो जो बेचते थे दवाये दिल वो दुकान अपनी बढ़ा गये

[रुकता नहीं, मस्ती में गाता और झूमता हुआ दूर चला जाता है। कमला फिर वापस आ जाती है।]

कमला : (सापले से) सुना है कि परवाना साहब डाइरेक्टर बनने वाले हैं। कहते थे, किसी से कहना नहीं, पर कम्पनी की अगली फिल्म 'हाय मेरी जान' होगी और न सिर्फ मैं उसकी कहानी और गीत लिखूँगा, बल्कि उसे डाइरेक्ट भी मैं ही करूँगा। वे अपना अलग ग्रुप बना रहे हैं। हमें अपने साथ मिलाने को कहते हैं। आपकी क्या राय है? परेश साहब का फिल्म न बना तो हम बेकार हो जायँगे।

सापले : सुना तो हम भी है।

कमला : और जावेद कह रहे थे कि कम्पनी कासिम भाइ खरीद रहे हैं और उन्होंने उनसे कहानी आदि चुनने को कह दिया है। 'ज्योति फिल्म्ज़' की नयी पिक्चर वे डाइरेक्ट करेंगे। परेश साहब की पिक्चर तो लगता है रह गयी। उनसे मिले तो उनका मुँह उतरा हुआ था। बातें भी हुइं। वे तो कुछ अध्यात्म की बातें कर रहे हैं। तो फिर बताइए कि जावेद साहब को हाँ कर दें!

सापले : दोनों को हाँ करदो। साला जिसका सेठ कम्पनी खरीदे और जो साला कान्ट्रेक्ट दिखा दे, उसपर सारे का सारा पालसन का डिब्बा लेकर पिल पड़ो।

कमला : वाह सापले साहब क्या बात है आपकी!

[कंठ में घंटियां सी बज उठती हैं। मार्शल चाय के प्याले मेज़ पर रख कर उसके पास आता है।]

मार्शल : मैडम चाय ठंडा हो रहा है।

कमला : चलो, आयी।

[जाकर टिल्ली के साथ चाय पीती है, बाहर के दरवाजे से पाँचूदा देसाई के साथ बातें करते हुए प्रवेश करते हैं।]

पाँचूदा : हमको पोरेश बोला कि मामला कुछ गोड़ोबोड़ो है। हम बोला, किछु बात नईं, ये डिभाइन साला कोई और लेगा। पाँचूदा को कोई वोंदा नईं। अपना कोई दीमाग है साला, दिन में दस ठो डिभाइन बना देता है। एक ड्राइंग रूम, दस डिभाइन—एक से एक आलग। देखने वाला देखे और बोले 'की चोमत्कार'। (जोर से बैरे को आवाज देकर) व्याय सोडा लाओ। (देसाई से) ओबी बोम्बे टाकीज के डाइरेक्टर चटर्जी का फोन आया था कि पाँचूदा ततोकाल आओ, हम कार भेजता है। ओ हमको अपना यूनिट में लेने को माँगता है। नाम डाइरेक्टर उसका होगा, काम तो साला हमीं करेगा।

देसाई : पाँचूदा कुछ बाम्बे टकीज में हमारा भी तिकड़म भिड़ा दो।

पाँचूदा : (किचन की ओर आवाज़ देता है) ऐ मार्शल जोल्दी कोरो ! हमको ओबी जाने को माँगता है।

(मार्शल सोडा लाता है।)

पाँचूदा : पाँचूदा आर्ट डाइरेक्टर ही नहीं, ठाकुरदा के साथ शान्ति निकेतन में रहा है। क्या कोबिता, क्या गोलोपो और क्या अभिनोय, सोबमें अपना कोब्जा है। चटर्जी हमको बोले बिना कहानी नईं लेता। ज्योति फिल्म्ज़ बिके बा ज्योति फिल्म्ज़ रहे, पाँचूदा को कोई वोंदा नईं।

अपना मोस्तिष्को का जोर पाँचूदा इन्डस्टरी के माथा पर चढ़ कर बैठेगा।

[एक घूँट में सोडा पीता है और उठता है। देसाई उसके पीछे रिरियाता सा जाता है।]

देसाई : पाँचूदा हमारे लिए भी बाम्बे टाकीज़ में कुछ करो ना। पाँचूदा हमारे लिए भी........

[उसकी आवाज धीरे धीरे दूर हो जाती है, । बाहर *साइरन की आवाज़ आती है जो इस बात की द्योतक है कि शूटिंग हो रही है अथवा गाने का टेक (Take) लिया जा रहा है। स्टूडियो के सारे शोर थम जाते हैं और फिर गाना फ़िज़ा में गूंज उठता है।

सिर का इलाज कर भी लें,
दिल का इलाज क्या करें ?

एक जोर की आवाज आती है 'कट' और गाना बन्द हो जाता है। कैंटीन में एक चपरासी आता है।]

चपरासी : बड़े सहब के कमरे में एक ट्रे चाय और टोस्ट जल्दी भिजवाने को माँगता है।

मार्शल : अभी देता है, उधर बैठो।

चपरासी : सेठ लोग आयेला है। जल्दी ले जाने को माँगता है।

मार्शल : अभी देता है, बैठो।

चपरासी : तो इतने में हमको एक सिंगल चाय पीने को माँगता है, तुम ट्रे बनाओ, हम चाय पीलें।

(एक दूसरा चपरासी आता है।)

---

*साइरन = Siren = भोंपू।

दू०चपरासी : मिस पिम्मी उदर अपने कमरे में चाय का ट्रे और टोस्ट माँगता है।

मार्शल : चलो, अभी भेजता है। (दूसरे बैरा छोकरे से) देखो, जल्दी उदर मिस पिम्मी के लिए चाय-टोस्ट लेकर जाने को माँगता है, समझा। और उदर किचन में बड़े साहब के वास्ते चाय टोस्ट तैयार करने को बोलो और उस हमाल † को सिंगल चाय दो!

[बाहर जोर से साइरन की आवाज आती है और इसके साथ ही कैंटीन भरनी शुरू हो जाती है। कई एक्सट्रा लड़कियाँ आकर बेंचों पर बैठती हैं। सिंगल चाय और टोस्ट का शोर मच जाता है। कम्पनी के कुछ एक मुलाज़म अपने टिफ़िन-केरीयर साथ लाते हैं और मेज़ों पर बैठ कर खाना शुरू करते हैं। मार्शल को भी आमलेट आदि का आर्डर देते हैं। अगले सम्वादों में पहला चपरासी अपनी सिंगल चाय पीकर बास के लिए चाय की ट्रे और टोस्ट ले जाता है। दूसरा चपरासी मिस पिम्मी के लिए चाय-टोस्ट ले जाता है। कैंटीन के सभी बैरे काम करते हैं। मार्शल कभी इसको इधर भेजता है, कभी उसको उधर। कैंटीन में खासी गहमा गहमी हो जाती है।

इस बीच में साउंड रिकार्डिस्ट अजगाउंकर और म्यूज़िक डाइरेक्टर पितलकर खासे परेशान दाखिल होते हैं। साथ में परवाना भी लगा है।]

अजगाउंकर : (कैंटीन के अन्दर आते ही) मार्शल ! दो कप चाय, ट्रे में लाने को माँगता है। (सापले के निकट की खाली

---

† हमाल = चपरासी = नौकर

मेज़ की ओर बढ़ते हुए) अपना तो भेजा खराब हो गया इस टेक में, सुबह से यहाँ झख मार रहा है और सन्ध्या काली[1] मारता रहेगा और गीत रिकार्ड नहीं होगा। क्लब में बास ने किसी का गाना सुना और हमारे मत्थे मढ़ दिया कि लो भरो प्ले-बेक[2]। न सुर का ज्ञान न ताल का।

पितलकर : तुम सुबह की बात करता है। अजगाउंकर, यहाँ तीन दिन से माथा फोड़ रहा है इसी ट्यून के मारे, जब सिंगर ही साला बंडल होगा तो म्यूजिक डाइरेक्टर क्या करेगा। क्या बढ़िया ट्यून दिया हमने, पन[3] बिना आवाज़ के ट्यून साला क्या करेगा। और फिर बास बोलेगा इतना खर्च उठ गया। मार्शल चाय लाओ जल्दी।

[सापले के निकट की मेज पर बैठ जाते हैं। परवाना नहीं बैठता, पितलकर के पास जाकर जरा धीमे]

परवाना : देखो यार पितलकर एक गीत हो गया है। जरा सुनो बड़ी गुंजाइश है इसमें ट्यून की।

इचक मीचक आँखें तेरी
आँख मटकते तारे!

पितलकर : (झुंझलाकर) मारो गोली यार ट्यून को। यहाँ तो कण्टाल गया। तुम अच्छा गीत लिखेगा, हम अच्छा ट्यून बनायेंगा और बास ले आयेंगा कोई अपने जानू के साले का साला और सब बंटाढार हो जायेंगा।

---

१ संध्याकाली = शाम तक २ प्ले-बेक = Play Back = गाने का रिकार्ड भरना। गाने वाली अभिनेत्रियाँ कम हैं। इसलिए गाना कोई और गाता है और दिखाई कोई और देता है। ३ पन = पर

परवाना : (और भी धीमे स्वर में) देखो किसी से कहना नहीं। बॉस अब बॉस नहीं रहेगा। सेठ कपूरसेन कम्पनी खरीद रहे हैं। मुझे उन्होंने अपना यूनिट बनाने को कहा है। तुम दोनों कहाँ दुकड़िया यूनिट में पिस रहे हो। फ़्लूक † लग जाना दूसरी बात है। तुम्हारे उस डाइरेक्टर पाई को समझ भी है डाइरेक्शन की। भगवान कसम तुम मेरे साथ आ जाओ तो कमबख्त ऐसी फ़िल्म बनायें कि सारे हिन्दुस्तान में जुबली मनाती फिरे।

पितलकर : हाथ भी खाली हो हमारा। इन गानों का टेक हो तो कुछ करें।

परवाना : अरे तुम्हारा क्या है, घर में दो चार घंटे में ट्यून बनाओ। रिहसल वह चन्दू करा लेगा और इतवार को हम टेक ले लेंगे।

पितलकर : अच्छा देखेंगा।

परवाना : एक हज़ार फ़ी ट्यून दिला देंगे। चन्दू से तुम सुलट लेना। बात मैंने सेठ से कर ली है। तुम जरा इतना करो कि अब जरा लंच टाइम में मेरे इस गीत को देख लो, जरा पहले बोल की ट्यून बना दो। जो ट्यून तुम बनाओगे, उसी से मैं सेठ को गाकर सुनाऊँगा। उसने यह ट्यून पास की कि मैं तुम्हारा कान्ट्रेक्ट ला दूँगा।

पितलकर : कान्ट्रेक्ट फ़ान्ट्रेक्ट से काम नइं चलेंगा। तुम हमें नगद दिलाओ। और चन्दू को मज़दूरी देना तुम्हारा काम है। हम उसको ट्यून बनाकर दे देंगा और टेक के वक्त आ जायेंगा। बस !

---

† Flook = तुक्का लग जाना !

परवाना : अच्छा अच्छा ! मैं सेठ से ऐसा ही करा दूँगा। तुम नक़द की बात कहते हो, मैं आधे गानों का पैसा पेशगी दिला दूँगा।

पितलकर : तो चलेगा। (किचन की ओर देखकर जोर से चिल्लाता है) मार्शल चाय हमारा म्यूजिक रूम में भेजने को माँगता है। एकदम, अभी।

परवाना : (पितलकर के साथ चलते हुए) देखो भई अजगाउंकर अपना वादा याद रखना (सापले से) क्यों सापले मेरा काम कर रहे हो न ? लंच टाइम के बाद मुझे जाना है। एक आध ड्राइंग जरूर मिल जाये।

सापले : कोई वाँदा नहीं, मिलेंगा।

पितलकर : तुम ज़रा हमको छुट्टी दो अजगाउंकर। हम साला इसका एक एक स्यून बनादे।

अजगाउंकर : ओ —के*

[पितलकर और परवाना बांह में बांह डाले चले जाते हैं। क्षण भर बाद मार्शल ट्रे में एक टी पाट और एक सिंगल चाय लाता है। टी पाट और प्याला अजगाउंकर के सामने रखता है।]

अजगाउंकर : पितलकर साब का चाय म्यूजिक रूम में भेजो !

मार्शल : (सिंगल कप एक दूसरे बैरा छोकरे को देते हुए) पितलकर साहब का प्याला उधर ले जाने को माँगता है, जहाँ गाने का टेक हो रहा है।

(एक चपरासी तेज तेज़ आता है।)

चपरासी : दो नम्बर स्टूडियो में पाई साहब सोडा माँगता है।

---

* O-k = ठीक है !

[अजगाउंकर चाय का प्याला बनाकर चुस्की लेता है और फिर अपना प्याला उठाकर सापले की मेज पर चला जाता है।

नीचे के सम्वाद में सापले बराबर अपना डिज़ाइन बनाये जाता है। बैक ग्राउंड में पाँचूदा की आवाज़ आती है]

पांचूदा : (पार्श्वभूमि में) ऐ देसाई च्योनो। बोम्बे टाकीज का गोड़ी आ गया।

अजगाउंकर : (चाय की चुस्की लेते हुए)तुम सापले साला ये क्या कलम घिसता रहता है दिन भर। कुछ मस्का पालिश[1] सीखो। पाँचूदा को देखो, ओ बी तुम्हारे माफिक डिजाइन बनाता था। सुनता है कि बाम्बे टाकीज में आर्ट डाइरेक्टर होने को जा रहा है। कुछ उसका आमदनी देखो, कुछ अपना। हम जानता है कि तुम उससे अच्छा काम करता है, पन ओ ठैरा मस्के बाज़ नम्बर वन ! तुम चार बरस से इसी कोने में बैठेला है और ओ चार बरस में मामूली ड्राफ़्ट्समेन से आर्ट डाइरेक्टर बन गया।

सापले : अरे भाइ अपने को यह सब कुछ नहीं आता। अपने तो काम करना जानता है। (क्षणभर रुककर) हम सुना तुम कहीं और जा रहा है। कहीं हमको भी ले जाओ।

अजगाउंकर : बस इस फिल्म के पीछू[2] हम अपना इनडिपेन्डेन्ट फिल्म डाइरेक्ट करेंगा। बोलो करेंगा हमारे संग काम ?

सापले : क्यों नई करेंगा। हम ज्यादा बात नहीं करता। पर जो सेटिंग हम देंगा, उसे साला कोई दूसरा देने नेईं सकेंगा।

---

१ मस्का = पालिश मक्खन बाज़ी २ बाद

अजगाउंकर : एक फ़नांसर[३] से हमारा बात चल रहा है। बन गया तो इस कम्पनी से जान छुड़ायेंगा।

सापले : यह तो वैसे भी बिक रहा है। तुम भाई अकेला आदमी है, तुम्हें क्या फिकिर है। यहाँ बीवी है, तीन छोकरा, दो नान्हा † छोकरी है। यहाँ से जवाब मिल गया तो कइसा चलेगा।

अजगाउंकर : अरे तुम चिन्ता नहीं करो, हम तुम्हारा सब बन्दोबस्त करेंगा। और फिर यह कम्पनी वाला भी तुमको छोड़ने का नहीं है, तुम इतना अच्छा आर्टिस्ट है।

सापले : आर्ट फ़ार्ट को कौन पूछता है, यहाँ चलता है मस्का पालिश, और चलता है रिश्ता-नाता। नया बास आयेंगा तो अपने साथ नया टीम लायेंगा। हमारा डिजाइन ले जाकर अपनी बीवी को दिखायेंगा और पूछेंगा, "बोलो कैसा बनेला है ?" उसको पसन्द आया तो पास, नहीं तो उठा सापले अपना बोरिया बिस्तर।

अजगाउंकर : अरे यही हाल साला सब का है। ट्यूनिंग और टेक में क्या बास अपनी बीवी को नहीं लाता। कहानी और गीत भी वही पास होते हैं जिनको बास की बीवी पसन्द करती है। बॉस का ख्याल है कि उसकी बीवी आम आडियेन्स (audience) को रिप्रेज़ेन्ट (Represent) करता है। सब का यही हाल है। हरीश का कहानी हमारे बॉस की बीवी ने पास कर दिया था। पर शायद कासिम भाई या कपूरसेन का बीवी लोग ने पास नहीं किया।

(ज़ोर से ठहाका मारता है।)

---

३ Financer = पूंजीपति; † छोटी

सापले : तुम्हारा क्या ख्याल है, कपूर सेन खरीदेंगा या कासिम भाई।

अजगाउंकर : इस वक्त तो दोनों का पलड़ा बराबर है। सुबह सुनता है कपूर सेन खरीदेंगा, शाम को मालूम होता है कासिम भाई ने खरीद लिया और कम्पनी का मुलाजिम लोग साला कभी इस किनारे आ लगता है कभी उस किनारे। तुम बोलो, तुम किधर है?

सापले : अपना एक जानू सेठ है कपाडिया। हमारा आर्ट को बौत मानता है। हम उसको बोला था कि शेयर मार्केट का धंधा छोड़ फ़िल्म कम्पनी खरीद लो। बहुत पैसा है साला इस बिज़नेस में, तुमको घाटा नहीं रअेंगा। दो फिल्म भी च[illegible] गया तो वारा न्यारा हो जायेंगा। हमारे बॉस से मिलने को आया बी था, पर बात नहीं बना। ओ आता तो अपना बी कुछ बनता। अब तो बीच में लटकेला है।

(अजगाउंकर ठहाका मारता है।)

अजगाउंकर : तुम सदा ऐसा ही रअेंगा। बोलो तुम्हारे उस नये डाइरेक्टर परेश का क्या हाल है?

सापले : ओ फिर डाइरेक्टर से एक्टर बन गया। हार्नबाई रोड पर वह कौन साला पामिस्ट है......नाम इस टाइम हम भूल रहा है, उदर ओ गया था। पामिस्ट बोला, 'अजुन तुम्हारे भाग की रेखा बन्द है। चुप से दो कॉंट्रेक्ट ल लो' सो उसने मनजीत फ़िल्म कम्पनी की अगली पिक्चर 'राजपूत की जीत' में हीरो का कान्ट्रेक्ट भर दिया है।

अजगाउंकर : और प्रोड्यूसर फाचा।

सापले : ओ फिर साउंड ट्रक में वापस चला गया है, पर हम सुना ओ रुॲंगा नेईं। छोड़ कर चला जायेंगा

[बैक ग्राउंड में प्रोडक्शन सेक्रेटरी ए० फरेरा को क्रोध भरी आवाज़ आती है :

ए०फ़रेरा : ए चोपड़ा, तुम यहाँ खाली पीली खड़ेला क्या करेला है। उधर एक नम्बर स्टूडियो में चाँदी का सिगरेट लाइटर माँगता है। अब्बी। किसी को चर्च गेट भेजो ! साला सारे का सारा सीन पड़ा रह जायेंगा। ओ प्रापरटी मेन* क्या करता है, भेजो उसको जल्दी। (क्रोध में अपने आप) ये डाइरेक्टर लोग साला कभी टाइम से नहीं बोलेंगा। कम्पनी का कितना हर्जा होता है, इनको कुछ मालुम नहीं। (वहीं से चिल्ला कर) ऐ मार्शल, हमारे कमरे में एक सोडा माँगता है। जल्दी भेजो।

[चला जाता है। बाहर से पितलकर और परवाना आते हैं।]

पितलकर : अरे मार्शल, तुमने चाय नहीं भेजा। सारा मूड साला खराब कर दिया।

मार्शल : उसी टाइम भेजा था साब।

पितलकर : किदर भेजा था।

मार्शल : प्रोजेक्शन रूम में, जिदर गाने का टेक हो रहा है।

पितलकर : हम तुमको म्यूजिक रूम में भेजने को बोला था, तुम एकदम बंडल है। लाओ एक प्याला चाय। एक दम गर्म !

(एक मेज़ पर बैठता है।)

परवाना : पर इस खराब मूड में भी पितलकर तुमने ट्यून ऐसी ग़जब की बनायी है कि सेठ कपूरसेन चारों खाने चित्त

* Property-man = सेट पर साज़-सामान का प्रबंध करनेवाला।

गिर जाये। इसको मस्का न समझो; पर तुम ट्यून के बादशाह हो। देखो अगर यह काम हो गया तो पार्टी हमारी रही।

पितलकर : पार्टी साला तुमको देना चाहिए।

परवाना : ओ—के ! कल ही चलेंगे 'ईरोस' में।

पितलकर : ईरोस फीरोस में नहीं 'माई डार्लिंग' में।

परवाना : ओ-के ! (झूमता हुआ सापले के पास जाता है।) बोलो सापले कुछ बनाया ?

सापले : इतनी जल्दी कैसे बनने सकता है। ये दो रफ़ डिजाइन बनाया है।

परवाना : (डिजाइन लेते हुए) खूब ! तुम दो एक और बना रखो !

[परेश हरीश और दो एक दूसरे व्यक्ति आते हैं, खाली मेज़ पर बैठते हैं और मार्शल को चाय भेजने का आर्डर देते हैं। परवाना झूमता हुआ उनकी ओर जाता है।

जावेद तेज़ तेज़ आता है, सापले की मेज पर आकर झुकता है।]

जावेद : मिस पिम्मी से मैंने अभी बात की है, वह हमारे यूनिट में आने को तैयार है। ईमान से क्या गजब का जिस्म पाया है उसने—पतली कमर और कटारसी आँखें ! सेठ कासिम भाई तो उस पर फ़िदा है। अभी कार आयी है उसकी। आज शूटिंग के बाद में पिम्मी को ले जा रहा हूँ, ईरोस में ! वहीं सेठ से मुलाकात हो जायेगी और कान्ट्रेक्ट हो जायेगा। बस यह कम्पनी का मामला तय हो जाये ! अपना यूनिट तो पूरे का पूरा तैयार है। (मार्शल से) मार्शल एक चाय दो, चीनी कम और खूब गर्म।

(वहीं बैठ जाता है।)

परवाना : कहिए हरीश जी कब महूर्त हो रहा है आपकी फ़िल्म का ?

हरीश (परवाने के व्यंग्य को हँसी से बेकाम करके) जब नये बॉस की बीवी कहानी को पसन्द कर ले !

(परवाना एक कृत्रिम ठहाका मारता है।)

परेश : हम तो खैर पुराने पापी हैं, इस ऊँच-नीच से हमारा रोज़ का वास्ता है। पर तुम हरीश कहाँ आ फँसे इस इन्डस्ट्री के चक्कर में ? यहाँ किसी साहित्यिक के लिए अभी जगह नहीं।

हरीश : अच्छे साहित्यिक के लिए अभी कहीं भी जगह नहीं !

परेश : लेकिन फ़िल्म इन्डस्ट्री में तो बिल्कुल नहीं ! फ़िल्मी दुनिया में आने से पहले साहित्यिकता और मौलिकता को घर छोड़ आना चाहिए। यहाँ आर्ट और ओरिजिनेलेटी* की कोई पूछ नहीं ! पुरानी शराब कितनी नयी और रंगीन बोतलों में दी जाती है, बस इसी की पूछ है। मिस विलकिनसन की किताब पढ़िए। आठ दस फारमूले हैं, उन्हें जोड़-तोड़ कर कहानी बनाइए। बारह-तेरह गाने और पाँच सात नाच ठूँसिये। यदि आपने यह सब ढंग से कर दिया, तो फ़िल्म हिट !

परवाना : (जो अपने आपको डाइरेक्टर समझता है और उस दूसरे खेमे से बोलता है जो फ़नांसरों, प्रोड्यूसरों और डारेक्ट्रों का है) केवल गानों की बात नहीं, गाने हर कोई लिखता है, और फारमूले भी सभी को आते हैं—एक गाना सुख का एक दुख का; दो तीन नाच; एक दोगाना या सहगाना; एक झमना बचपन का जो जवानी में भी गाया जा सके;

---

*Art and Originality = कला और मौलिकता

एक गरीबों का और एक देश प्रेम का आदि आदि...यह फारमूला सबको मालूम है, पर फारमूला जानने से ही तो फ़िल्म हिट नहीं बन जाती। फ़िल्म हिट बनती है, उस फारमूले को ठीक एप्लाई (Apply) करने से। गाने वाला ठीक गाना लिखे और डारेक्टर उसे ठीक सिच्युएशन ('Situation) में रखे, तब बात बनती है। अब मैं जो गाने लिखता हूँ, उनमें नयापन न होते हुए भी नयापन रहता है। यही मेरी सफलता का भेद है। 'वह भोला बालम क्या जाने' इसमें कोई नयापन नहीं, लेकिन देखिए इसकी सादा ट्यून और सरल भाव! और यही चीज़ है जो फ़िल्म को हिट बनाती है। जिसे देखने और सुनने के लिए लोग बार बार फ़िल्म देखने आते हैं। इस गाने को अगर कहानी में ठीक सिच्युएशन नहीं मिली तो गाना मार खा जायेगा। और ठीक सिच्युएशस मिल गयी तो फिर देखिए इसे खटारे वाले[1], से लेकर कालेज के छोकरों तक की जबान पर! अब जो फिल्म मैं डाइरेक्ट करने जा रहा हूँ 'हाय मेरी जान' तो उसमें......

(एक चपरासी तेज़ तेज़ आता है।)

चपरासी : सापले साहब आपको बड़े साब सलाम बोलते हैं।

सापले : कौन? मैनेजिंग डाइरेक्टर या कन्ट्रोलर आफ प्रोडक्शन्ज़[2]?

चपरासी : कन्ट्रोलर साब।

सापले : (उठते हुए) जाने अब क्या शामत आने वाला है। अपने को बॉस से बौत डर आता है। बूम मारने लगता है तो कुछ देखता सुनता नहीं। (जावेद से) मैं

---

१ खटारा=छकड़ा २ स्टूडियो में फिल्मों का इंचार्ज—कौन सी कहानी कौनसा गीत या डिज़ाइन चुना जाय, इस सबका निर्णय वह करता है।

ज़रा हो आऊँ बॉस के पास तुम बैठो इदर। (मार्शल से) मार्शल जावेद साब को एक चाय इदर दो !

(जाता जाता परवाने को एक डिजाइन और देता है।)

— : ये कागज रखो परवाने। (आँख का इशारा करता है कि डिजाइन है।) हम अभी आता है, देखे बास क्या बोलता है।

(चला जाता है। मार्शल हरीश की मेज पर चाय रखता है।)

परेश : (चाय प्यालों में ढालते हुए) और हरीश भाइ, दिल को छोटा करने से फ़िल्म में काम नहीं चलता। खाल होनी चाहिए गैंडे की और दिल होना चाहिए पत्थर का, तब फ़िल्म में आदमी चल सकता है। पूछो परवाने से ! (हँसता है) एक गाना बास को पसन्द नहीं आया तो दूसरा, दूसरा नहीं तो तीसरा--साला जायेगा किधर ? यही हाल कहानी और दूसरी चीजों का है, अब हम डाइरेक्टर नहीं बन पाये तो क्या हुआ। फिर बनेंगे। दिल छोटा करने वाले को इंडस्ट्री उठाकर बाहर फेंक देती है। सो मैंने कन्ट्रेक्ट कर लिया दो फिल्मों में हीरो के रोल का मनजीत फिल्म कम्पनी से। जिन्दा रहे तो इसी साली ज्योति फिल्म्ज़ में डाइरेक्टर छोड़ प्रोड्यूसर बनेंगे।

(हरीश कोई उत्तर नहीं देता, चुपचाप चाय पीता है।)

परेश : तुम कहाँ फ़िल्म डाइरेक्ट कर रहे हो परवाना ?

परवाना : (बेपरवाही से) सेठ कपूर सेन कह रहे हैं मुझे ज्योति की अगली फिल्म डाइरेक्ट करने के लिए। कम्पनी वही खरीद रहे हैं, क्यों हरीश साहब यदि कहीं और कान्ट्रेक्ट

नहीं किया तो यहीं हमारी फिल्म के डायलाग लिखिए।

हरीश : (सव्यंग्य) 'हाय मेरी जान' के ?

परवाना : हिट फ़िल्म न हो तो परवाना नाम नहीं।

हरीश : हिट हो चाहे डबल हिट, पर मुझे तो माफ़ ही रखिए।

परवाना : आपकी मर्जी ! (दूसरों को सुना कर) और फिर लोग कहते हैं कि हिन्दी के कथाकार और कवि फ़िल्म-क्षेत्र में सफल नहीं होते। फ़िल्म में आने से पहले उन्हें समझ लेना चाहिए कि उन्हें एक दूसरे माध्यम से जनता तक पहुँचना है।

हरीश : उन्हें नहीं, क्योंकि फ़िल्म में वे तो कहीं होते नहीं, होता है वह सब कूड़ा-कचरा जो प्रोड्यूसर या फनांसर चाहते हैं कि जनता के दिमाग़ में भरा जाय।

परवाना : (पूर्ववत दूसरे खेमे से बोलते हुए) प्रोड्यूसर तीन चार लाख रुपये लगाता है, इसलिए यदि वह चाहता है कि वह डूब न जाय तो क्या बुरा करता है ?

हरीश : वह उसकी इस सावधानी के बावजूद प्रायः डूब जाता है।

परवाना : पर उसे तसल्ली तो रहती है कि उसका चुनाव गलत था। किसी दूसरे के चुनाव पर उसे रुपया लगाना पड़े तो यह तसल्ली न रहे।

हरीश : जब रुपया लगाने वाला एक आदमी न होगा, जनता होगी, तब लेखक जो चाहेगा दे पायेगा। जभी हम लिखेंगे।

परवाना : जनता न चाहती तो प्रोड्यूसर ऐसी फिल्में न बनाते। जनता कभी न चाहेगी।

हरीश : यदि हिन्दुस्तान में शराब और चीन में अफ़ीम नशेबाज़ों के न चाहने के बावजूद बन्द हो सकती है तो फ़िल्मों के द्वारा यह जो अफ़ीम लोगों को पिलाई जा रही है, यह भी बन्द हो सकती है।

परवाना : टाल्स्टाय की कहानी का गला काट कर आप कौन सा शहद जनता को पिलाने जा रहे थे हरीश साहब।

हरीश : किसी अश्लील विलायती फ़िल्म के गले पर छुरी चलाने से टाल्स्टाय की कहानी के गले पर छुरी चलाना बेहतर है।

परवाना : (कंधे झटककर) खैर आप डायलाग न लिखेंगे तो दूसरे बीसियों लिखेंगे, फ़िल्में डायलाग के बल पर नहीं, गीतों के बल पर चलती हैं।

(गीजू भाई भागा भागा आता है।)

गीजू भाई : अरे सुना तुम लोगों ने ! कम्पनी को सेठ कपाडिया ने खरीद लिया है और सापले कन्ट्रोलर आफ़ प्रोडक्शन्ज़ हो रहा है।

कई आवाज़ें : सापले, बास !!

(कई लोग चाय पीते पीते उठकर गीजू भाई को घेर लेते हैं।)

गीजू भाई : कपाडिया सेठ आध घंटे से उधर बॉस के पास बैठेला था। सौदा पटा रहा था। सेठ कासिम भाई और कपूर सेन से दो लाख रुपया ज्यादा बोली दिया उसने। तेरह लाख में कम्पनी बिक गया। सापले कन्ट्रोलर हो गया।

जावेद : (अचानक उठ खड़ा होता है) और मैं यहां बैठा उनका

इन्तज़ार कर रहा हूँ। बड़ी जरूरी बात करने जा रहे थे मुझसे सापले साहब

(तेज तेज बाहर की ओर को जाता है।)

मार्शल : (चाय का प्याला लाते हुए) साब ये आपका चाय !

जावेद : गोली मारो चाय को !

(भागता सा बाहर निकल जाता है।)

परवाना : (जावेद को जाते देख अचानक हिं...हिं कर हँसते हुए) ये डिजाइन सापले साहब के मेरे पास ही रह गये। मैं दे आऊँ शायद उनको जरूरत हो।

(जावेद के पीछे पीछे जाता है।)

हरीश : पालसन का डिब्बा लेते जाओ !

परेश : अगर 'हाय मेरी जान' डाइरेक्ट करना चाहते हो तो !

[लेकिन परवाना बाहर जा चुका है। कैंटीन लगभग सारी की सारी खाली हो जाती है।]

हरीश : (फिर कुर्सी पर बैठते और प्यालों में नयी चाय ढालते हुए) सापले तो फिर भी समझदार है, उससे भी बड़ा चुगद हो सकता है बॉस ! यह फिल्मी दुनिया है—मस्केबाज़ों का स्वर्ग !

(पर्दा सहसा गिरता है।)

—※—

परिशिष्ट

आज से लगभग बारह वर्ष पहले जब हिन्दी में एकांकी का प्रचलन आरम्भ हुआ था तो जैनेन्द्र जी ने प्रश्न उठाया था कि जब हिन्दी का अपना कोई रंग मंच ही नहीं तो एकांकी लिखने से लाभ ? उनका यह विचार था कि एकांकी केवल पढ़ने के लिए लिखे जाने चाहिएं और तब उन्होंने 'हंस' में ऐसा ही एक एकांकी लिखा भी था।

पढ़ने के लिए नाटक लिखे जायं, मैं इसका विरोधी नहीं। जब कविता, कहानी और उपन्यास पाठकों को दृष्टि में रख कर लिखे जाते हैं तो नाटक भी केवल पाठकों के लिए लिखे जा सकते हैं। गरिष्ठ विषयों को चुटीले सम्वादों की सहायता से पाचक और रोचक बनाया जा सकता है। किन्तु जहां तक मेरा सम्बन्ध है, केवल पाठकों अथवा श्रोताओं को दृष्टि में रख, नाटक लिखना मुझे कभी प्रिय नहीं रहा। यही कारण है कि आल इण्डिया रेडियो दिल्ली में तीन वर्ष नाटककार के रूप में नौकरी करने के बावजूद मैंने ऐसे नाटक बहुत कम लिखे जो केवल रेडियो के श्रोताओं का मनोरंजन कर सकें।

इसका यह कारण नहीं कि मैं रेडियो-नाटक को कम महत्व की चीज़ समझता हूं, अथवा उसकी कला को निम्नकोटि का ख्याल करता हूं या फिर मेरे विचार में रेडियो नाटक की अपील कम है। ऐसी कोई बात नहीं। रेडियो नाटक की अपनी उन्नत कला है और यदि उस कला को ध्यान में रख कर नाटक लिखा जाय तो वह किसी खेले जाने वाले नाटक से कम सुन्दर न होगा। रही उसकी अपील ! तो रेडियो की पहुंच कितने लोगों तक है, इसे सभी जानते हैं। कम से कम आज दिन तो वह रंग मंच की अपेक्षा कहीं व्यापक है। यह मानने में भी मुझे कोई संकोच नहीं कि जो थोड़ी बहुत ख्याति नाटककार के रूप में मुझे मिली है, उसमें रेडियो का बड़ा हाथ है। किन्तु इन सब बातों के होते भी, केवल पाठकों अथवा श्रोताओं की दृष्टि में रख कर, मेरे नाटक न

लिखने और रंगमंच के अभाव में भी रंगमंच ही के लिए लिखने का सब से बड़ा कारण मेरी व्यक्तिगत रुचि है।

बचपन ही से मुझे स्टेज से लगाव है। अल्प वयस में देखी हुई रास लीलाएँ और नौटंकियाँ क़दाचित अनजाने ही मेरे मानस-पट पर अमिट असर छोड़ गयी हैं। मैं आठवीं श्रेणी में था जब मैंने पहले पहल नाटक देखा। मैं कई महीनों से बीमार था। डाक्टरों ने जलवायु बदलने का परामर्श दिया था। पढ़ना-लिखना छुड़ा कर मेरे पिता मुझे पंजाब के एक गुमनाम से कस्बे 'दसुआ' में ले गये थे, जहाँ वे स्टेशन मास्टर थे। वहीं मैंने 'बिल्व मंगल उर्फ सूरदास' देखा। उस नाटक के सभी दृश्य मुझे आज भी ऐसे याद हैं, जैसे मैंने उन्हें कल देखा हो। मेरे मन पर उस नाटक की जो पहली छाप पड़ी, उसके वर्णन का लोभ सम्वरण न करूँ तो वे बातें रह जायँगी जो मैं इस संक्षिप्त से परिशिष्ट में कहना चाहता हूँ। इतना याद है कि उस रात मेरे माथे में असह्य पीड़ा थी। बायीं आँख के ऊपर कनपटी पर उसका बड़ा जोर था, पर मैं इस डर से कि मेरे सिर दर्द की बात सुन कर पिता जी मुझे घर न भिजवा दें, अन्त तक दम साधे बैठा रहा था।

इसके बाद मैंने बहुत नाटक नहीं देखे। एलफ्रेड और विक्टोरिया थीएट्रिकल कम्पनियों का शायद एक एक नाटक ही मैं देख पाया। और एमेचर क्लबों के चार-पांच नाटकों से अधिक देखना मुझे नसीब नहीं हुआ औरशायद इतने ही में अभिनय कर पाया। मेरे कालेज तक पहुँचते-पहुँचते हमारा व्यावसायिक रंग मंच कूच कर गया और नयी टेकनिक और कला के अभाव में एमेचर थीएटर घुटनों पर हाथ धर कर बैठ गया और देखते देखते मनोरंजन के क्षेत्र में सिनेमा और रेडियो की तूती बोलने लगी मैं रेडियो ही में नहीं, फ़िल्म इंडस्ट्री में भी गया; दो फिल्मों में नीतिन बोस से डारेक्टर और अशोक कुमार से एक्टर के साथ मैंने अभिनय भी किया; रेडियो पर भी नाटक लिखे और अभिनय किया, पर कभी वह नाटक की सी थ्रिल (thrill)

नसीब न हुई। अपने दर्शकों को सामने बैठे देखकर अभिनय करने में जिस पुलक की अनुभूति होती है, वह बेजान माइक और कैमरे के सामने अभिनय करने मे कहाँ? जिन्हें सचमुच अभिनय का शौक़ है, सिनेमा उनकी क्या तृप्ति करेगा? रहे दर्शक, तो जिन्होंने पृथ्वीराज कपूर को सिनेमा के पर्दे पर भी देखा है और 'पठान' और 'दीवार' मे स्टेज पर भी, वे मेरी बात के मर्म को समझ सकते हैं।

क्या समायेगी वहाँ सूरत कोई?
जिसकी आँखों में तेरी छब बस गयी।

नाटक से अपने इश्क का तो यही हाल रहा।

लेकिन इस व्यक्तिगत रुचि के साथ ही रंगमंच के अभाव में मेरे नाटक लिखते रहने का एक दूसरा भी कारण था। तब जैनेन्द्रजी जिस वजह से नाटक लिखना व्यर्थ समझते थे, मैं उसी वजह से आवश्यक समझता था। सिनेमा और रेडियो के बावजूद भारत में नाटक अवश्य अपना खोया स्थान पायेगा, इस बात में मेरा अटल विश्वास था। और मैं सोचता था कि जब फिर नाटक की आवश्यकता हुई और लोग नाटक खेलना चाहेंगे तो क्या करेंगे? छोटे नाटकों के अभाव में या तो वे मन की मन में दबाकर रह जायेंगे अथवा अंग्रजी नाटकों का अनुवाद करने को विवश होंगे। लम्बे लम्बे नाटकों का दौर लद गया था, सिनेमा ने कम समय में अधिक से अधिक मनोरंजन उपस्थित कर दिया था। नाटक के लिए भी अपना फैलाव कम करना अनिवार्य्य था। इसी पैतरे से यूरोप में रंगमंच सिनेमाके मुकाबिले में जीवित रह सका। यही सोचकर मैं छोटे छोटे नाटक लिखने लगा। मैंने व्यावसायिक रंगमंच के लिए अधिक नाटक नहीं लिखे। व्यवसाय बहुत सी ऐसी चीज़ों की मांग करता है जो कई बार यथार्थ जीवन और कला के उपासक को प्रिय नहीं होतीं। विशेषकर उस समय जब हमारे देश में पूंजी का राज्य है (पृथ्वीराज कपूर

सा प्रगतिशील कलाकार व्यावसायिक रंगमंच का पुनरुत्थान करेगा, इसकी कल्पना मैंने नहीं की थी) इसीलिए मेरे नाटकों की परिधि (scope) एमेचर रंगमंच तक ही सीमित रही।

यह भी ख्याल था कि देश में व्यावसायिक से पहले एमेचर रंगमंच जागेगा दोनों आन्दोलन साथ साथ भी शुरू हुए तो भी व्यावसायिक नाटकों की अपेक्षा एमेचर नाटकों की मांग ज्यादा रहेगी। मुझे खुशी है कि आज जब देश में फिर से एमेचर रंगशाला जागी है तो मेरे नाटक पूजा की थाली सजाये उसकी अभ्यर्थना को प्रस्तुत हैं।

एमेचर रंगमंच आन्दोलन को (कम से कम नगरों और कस्बों में) पूर्ण रूप से सफल होने के लिए चौकोर रूप धरना होगा। एक ओर रीडिंग क्लब (Reading Clubs) होंगे, दूसरी ओर ड्राइंग रूम क्लब, तीसरी ओर एमेचर रंगशालाएँ और चौथी ओर खुली हवा के रंगमंच।

रीडिंग क्लब—ये समितियाँ स्कूलों कालेजों की नाटक समितियों के तत्वाविधान में खोली जा सकती हैं और स्वतन्त्र रूप भी ले सकती हैं। इन समितियों में अच्छे-अच्छे नाटक पढ़े जायँ। पढ़े जाने का यह मतलब नहीं कि नाटककार वहाँ जाकर अपने नाटक पढ़े। मतलब यह है कि एक नाटक चुन लिया जाय, उसके पार्ट समिति के सदस्यों में बाँट दिये जायँ, और एक दिन नियत कर लिया जाय। उस दिन वे लोग इस प्रकार नाटक पढ़ें जैसे वे उसे खेल रहे हों। यहीं पता चल जायगा कि नाटक में कितना ज़ोर है, कि कौन से सदस्य किस पात्र के लिए उपयुक्त हैं। जो नाटक रीडिंग समिति में सफल हो जाय, उसे दूसरी अथवा तीसरी स्टेज पर भी ले जाया जा सकता है।

ड्राइङ्ग रूम क्लब—ड्राइंग रूम नाटक का स्तर (जहाँ तक अभिनय का सम्बन्ध है,) उपरोक्त पढ़े जाने वाले नाटक से ज़रा ऊँचा होगा। कोई बड़ा ड्राइंग रूम हो या किसी क्लब का हाल हो; दो-एक तख्तों को मिला कर बनाया गया छोटा सा मंच हो; गृहपति के मित्र अथवा क्लब के

सदस्य ही दर्शक हों, चंद एक पात्रों वाला छोटा सा नाटक हो। बस इससे अधिक ड्राइंग रूम में खेले जाने वाले नाटक के लिए कुछ नहीं चाहिए।

एमेचर रंग शाला—ड्राइंग रूम रंगमंच की स्टेज को पार कर नाटक एमेचर रंग-शाला पर आता है। जब तक दिल्ली के "येवल थीएटर" की तरह प्रत्येक नगर में छोटे-छोटे नाटक-घर नहीं खुलते, एमेचर सोसाइटियाँ किसी स्थानीय सिनेमा हाल को दो-तीन दिन के लिए किराये पर लेकर नाटक खेल सकती हैं। पहले दो पड़ाव अर्थात् रीडिंग और ड्राइंग रूम क्लब इस मंजिल तक पहुँचने के लिए कितने ज़रूरी हैं, इसकी कल्पना की जा सकती है। ये तीन तरह के नाटक खेलने के लिए अलग-अलग समितियाँ बनाने की आवश्यकता नहीं। स्कूलों कालेजों की नाटक समितियों के अतिरिक्त 'इपटा' 'इनटा' 'नीटा' आदि संस्थाएं ऐसी समितियोंका संगठन कर सकती हैं। जहाँ तक नाटकों के पढ़े जाने का सम्बन्ध है, उसका आयोजन तो प्रगतिशील लेखक संघ अथवा ऐसी ही साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं में भी हो सकता है।

खुली हवा के मंच—ऐमेचर रंग-मंच के आन्दोलन में खुले नाटकों का बड़ा महत्व है, क्योंकि हमारे देहात का नाटक यदि कोई रूप लेगा तो वह यही होगा। नौटंकी और रास लीला के सम्मिश्रण से नये नाटकों का आविर्भाव होगा जो खुले मंच पर देहात के लोगों की समस्याओं को उनके सामने रखेंगे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि एमेचर आन्दोलन में खुले नाटकों को बड़ा महत्व प्राप्त है और मेरे दो एकांकी 'अधिकार रक्षक' और 'चमत्कार' लहौर के 'ओपन-एयर-थीएटर' में सफलता से खेले भी गये थे, पर मैं इच्छा होने पर भी ऐसे नाटक नहीं लिख सका जो 'खुले रंगमंच' की आवश्यकताओं को पूरा करते हों। मेरे नाटक अधिकांशतः

एमेचर रंगमंच के आन्दोलन की पहली तीन मंजिलों ही को सामने रख कर लिखे गये हैं। अपने एकांकी संग्रहों मे से हरेक में मैंने एक आध ऐसा नाटक रखा जो "रीडिंग क्लब" के सदस्यों का मनोरंजन कर सके और एक आध ऐसा जो ड्रायंग रूम में बड़ी सफलता से खेला जा सके।

प्रस्तुत संग्रह की परिधि भी एमेचर रंग मंच के पहले तीन पड़ावों तक ही सीमित है। इसमें 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ', 'कईसा साब कइसी आया', 'सयाना मालिक' और 'कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्‌घाटन' रीडिंग क्लब में पढ़े अथवा ड्राइंग रूम में खेले जाने के विचार से लिखे गये हैं। 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' चन्द महीने पहले सेलर्ज ऐंड सोल्जर्ज़ बोर्ड प्रयाग के हाल में 'ड्राइङ्ग रूम नाटक' के रूप में खेला गया था और बड़ा सफल हुआ था। चूंकि यह नाटक एमेचर मंच पर भी खेला जा सकता है (पिछले दिनो 'नीटा' द्वारा प्रयाग विश्वविद्यालय में खेला भी गया था) इस लिए इसके सम्बन्ध में चन्द बातें लिखना मैं जरूरी समझता हूँ।

१.(क) दर्शकों को पहले यह बात समझा देनी चाहिए कि नाटक में एमेचर रंगशाला की कठिनाइयों को बताया गया है और उसकी व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। यदि ऐसा न किया जायगा तो इतनी जल्दी पर्दे गिरते देखकर दर्शक निराश हो जायेंगे।

(ख) दर्शकों को माइक द्वारा यह बात बताना लाभ-प्रद न होगा। नाटक के अतिरिक्त दर्शक स्टेज से कुछ सुनना पसंद नहीं करते। विशेष-कर स्कूल कालेज के युवक। उन्हें छपी हुई विज्ञप्ति में ही यह बात बता देनी चाहिए।

२. पर्दे उठाने अथवा विंग हटाने में तनिक भी विलम्ब से काम न लिया जाय। उसकी रिहर्सल कर लेनी चाहिए। पहिए वाले विंग की व्यवस्था न हो सके तो वहाँ भी चर्खीवाला पर्दा लगा दिया जाय। पर्दा उठाने गिराने में देर होने से नाटक चौपट हो जायगा।

३ नाटक में कुछ वाक्य दर्शकों की ओर से कहे गये हैं। प्रकट है कि कुछ अभिनेता दर्शकों में मिले होंगे। यदि उनकी फबती पर कोई दर्शक न हँसे तो वे भी न हँसे! फबती ठहाकों के बावजूद दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बना लेगी।

'तौलिये', 'बतसिया' और 'मस्केबाज़ों का स्वर्ग' अपेक्षाकृत बड़े मंच के लिये हैं। 'तौलिये' इलाहाबाद और दिल्ली में खेला गया है। (इलाहाबाद में विश्वविद्यालय की विमेन डेलीगेसी में और दिल्ली में श्रीमती चन्द्रगुप्त विद्यालंकार के निर्देशन में वेवल थीएटर में) मैंने केवल समाचार पत्रों में उसकी प्रशंसा पढ़ी है। देखा होता तो मैं उसके सम्बन्ध में कुछ अवश्य कहता।

जहाँ तक 'बतसिया' का सम्बन्ध है। यह सारा नाटक 'बतसिया' और उसके एक वाक्य 'हुज़ूर मेरा नाम बीएट्रिस है' पर अवलम्बित है। 'बतसिया का अभिनय करने के लिए बड़ी सफल अभिनेत्री के अपेक्षा है। जो उस वाक्य को बीस ढंग से कह सके। 'विवियन' और 'जान' का पार्ट करने वाले अभिनेताओं को यह ख्याल रखना चाहिए कि अपनी भावनाओं, चिंताओं और उत्तेजनाओं में वे इतने गुम दीखें—स्वभाविक रूप में—कि बीएट्रिस के बार बार विरोध पर उनका उसे बीएट्रिस न पुकारना स्वभाविक लगे। वह पहले उनके घर काम कर चुकी है, और वे उसे बतसिया बुलाते रहे हैं। उनकी आदत के लिए इतना ही यथेष्ट है।

"मस्के बाज़ों का स्वर्ग" यदि कालेज के ऐसे मंचों पर खेला जाय जहाँ लड़कियों का पार्ट करने वाली अभिनेत्रियों की कठिनाई हो तो कमला और टिल्ली के पार्ट काट दिये जायँ।

नाटक की भाषा बम्बइया हिन्दुस्तानी है। बम्बई में उत्तर भारत के लोग भी मराठियों, गुजरातियों और गोवा निवासियों की तरह उर्दू हिंदी बोलते हैं। गुजरातियों, मराठियों और हिन्दुस्तानियों की इस बोली में थोड़ा थोड़ा अन्तर रहता है। जिसका ख्याल नाटक में रखा गया है। 'नक़द' शब्द को परवाना नकद और पितलकर नगद बोलता है। गुजराती

'काई वांदा नेई' बोलता है, हिन्दुस्तानी 'कोई वांदा नहीं।' और बङ्गाली 'वोंदो नाई', हिंदुस्तानी खायेगा, और मराठी खायेंगा कहता है। याने अजीब धांधली सी ज़बान के मामले में मची है। पर यही बम्बइयां हिन्दुस्तानी की खूबी है।

मुझे इस बात की खुशी है कि मेरी तरह जिन नाटक कारों ने स्टेज का ध्यान रख कर नाटक लिखे, उनका श्रम विफल नहीं गया। इधर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद हिन्दी नाटक फिर जीवन की अँगड़ाई लेकर जाग रहा है। न केवल प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर ने बड़ी सफलता से व्यवसायिक रंगमंच की स्थापना की, और अपनी कम्पनी को लेकर भारत भर का दौरा किया है, बल्कि एमेचर रंगमंच पर भी एकांकियों तथा छोटे नाटकों की मांग बराबर बढ़ रही है। यद्यपि गत दस-बारह वर्ष में मेरे एकांकी निरन्तर इधर-उधर यदा कदा खेल जाते रहे (विशेष कर 'अधिकार का रक्षक' कई बार खेला गया) किन्तु पिछले तीन वर्षों में उनकी मांग बहुत बढ़ गयी है। ये पंक्तियां लिखते समय केवल इलाहाबाद में मेरे दो नाटक 'छठा बेटा' और 'अंज़ो दीदी' खेले जा रहे हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि उन नाटक कारों के अतिरिक्त जो अब तक नाटक लिखते रहे हैं, दूसरे लेखक भी इस ओर ध्यान दें और इस जागते हुए एमेचर रंगमंच आन्दोलन को नये नये नाटकों के रूप में नया रक्त और दिशा दें। जिस प्रकार छोटे छोटे क्रिकेट क्लबों से प्रतिभा-सम्पन्न खिलाड़ी टेस्ट टीमों तक पहुँचते हैं, उसी प्रकार इन एमेचर रंग-मचों से अच्छे अभिनेता और अभिनेत्रियां, देश के व्यावसायिक (वह व्यापारिक हो या न हो, मतलब बड़े मंच से है) रंगमंच में पहुँच, उसे पुष्ट करेंगे? देश का रंगमंच अपनी व्यापक सम्भावनाओं के साथ जग रहा है। आइए हम उसे बल दें कि वह उठ कर देश ही नहीं, संसार की आँखों के सामने अपनी शक्ति की पूरी भव्यता के साथ उद्भासित हो सके!

उपेन्द्रनाथ अश्क